इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

# कार्यक्रम दर्शिका

## स्नातक उपधि कार्यक्रम (कला)
## (बी.ए. सामान्य)

शिक्षण के क्षेत्र में मुद्रित अध्ययन सामग्री हमारा मुख्य आधार है। हमारी अध्ययन सामग्री शिक्षार्थियों की रुचि को ध्यान में रखते हुए विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा तैयार की जाती है। प्रत्येक कोर्स में पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए विशिष्ट शिक्षाविदों और पेशेवरों की एक पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति होती है। पाठ्यक्रम सामग्री को इस तरह से लिखा गया है कि अध्ययन केंद्रों में हमारे शैक्षिक सलाहकारों से सहायता लेकर शिक्षार्थी स्वयं इसका अध्ययन कर सकते हैं। इसके अलावा, पाठ्य पुस्तकें और संदर्भ पुस्तकें अध्ययन केंद्रों और क्षेत्रीय केंद्रों से जुड़ी पुस्तकालयों में उपलब्ध होती हैं। इसलिए, इग्नू के पाठ्यक्रमों के लिए सस्ते गाइड की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में ये शिक्षार्थियों को नुकसान पहुँचा सकते हैं। विश्वविद्यालय शिक्षार्थियों को बाजार में उपलब्ध इस प्रकार के गाइड की सहायता नहीं लेने की सलाह देता है।

अगस्त 2019

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

सर्वाधिकार सुरक्षित। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति के बिना इस कार्य का कोई भी हिस्सा किसी भी रूप में, मिमियोग्राफ या किसी अन्य माध्यम से पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की ओर से मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाईपसेट: टेसा मीडिया एवं कम्प्युटर, C–206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली- 110025

मुद्रित:

# विषय सूची

**भाग 1 कार्यक्रम का विवरण**

1. विश्वविद्यालय
2. कला स्नातक
   - 2.1 कोर पाठ्यक्रम
   - 2.2 ऐच्छिक पाठ्यक्रम
   - 2.3 योग्यता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम
   - 2.4 कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम
   - 2.5 सामान्य ऐच्छिक
3. आपके स्नातक अध्ययन की योजना
4. इग्नू में प्रभावी शिक्षण के टिप्स
   - 4.1 फीस संरचना एवं भुगतान की अनुसूची
5. निर्देशक प्रणाली
   - 5.1 पाठ्यक्रम सामग्री
   - 5.2 काउंसिलिंग
   - 5.3 अध्ययन केंद्र
   - 5.4 इन्टेरैक्टिव रेडियो काउंसिलिंग
   - 5.5 ज्ञान दर्शन
   - 5.6 ज्ञान वाणी
   - 5.7 टेलीकॉन्फ्रेंस/एडुसैट
6. मूल्यांकन
   - 6.1 असाइनमेंट
   - 6.2 सत्रांत परीक्षा
7. अन्य उपयोगी जानकारी
8. कुछ उपयोगी पते

**खंड 2 पाठ्यक्रम के सिलेबस**

1. कोर पाठ्यक्रम
2. विषय विशिष्ट ऐच्छिक
3. योग्यता/कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम
4. सामान्य ऐच्छिक

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# खंड 1
# कार्यक्रम का विवरण

प्रिय शिक्षार्थी,

इग्नू से स्नातक उपाधि कार्यक्रम में आपका स्वागत है। जब आप मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम से शिक्षा प्रदान करने वाली दुनिया की सबसे बड़ी विश्वविद्यालय में शामिल हो गए हैं, यह आवश्यक है कि आप विश्वविद्यालय और इसकी कार्यप्रणाली के बारे में अच्छी तरह से जान लें। जिस कार्यक्रम में आप शामिल हुए हैं उसके बारे में और विश्वविद्यालय द्वारा दिए जाने वाले निर्देश के बारे में विस्तार से जानने के लिए भी आप उत्सुक होंगे। यह कार्यक्रम निर्देशिका आपको आवश्यक जानकारी देता है जो विश्वविद्यालय को जानने और कार्यक्रम को जारी रखने में आपकी सहायता करेगा। इसलिए हमारी सलाह है कि जब तक आप कार्यक्रम को पूरा न कर लें, तब तक इस कार्यक्रम निर्देशिका को सुरक्षित रखें।

कार्यक्रम निर्देशिका का दूसरा भाग इस कार्यक्रम में शामिल सभी कोर्स के पाठ्यक्रमों के बारे में जानकारी देता है। यह आपको अन्य बातों के अलावा, विषय विशिष्ट ऐच्छिक, जेनेरिक ऐच्छिक और कौशल संवर्धन पाठ्यक्रमों में आपकी रुचि, आवश्यकता और कैरियर के लक्ष्यों को पूरा करने में मदद करेगा।

प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर,
कला स्नातक (बीएजी)
bagsoss@ignou.ac.in

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# 1. विश्वविद्यालय

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) विश्व का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है। यह 1985 में संसद के अधिनियम द्वारा स्थापित एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है, जिसका उद्देश्य सूचना संचार प्रौद्योगिकी सहित विभिन्न माध्यमों से सीखने और ज्ञान को आगे बढ़ाना और प्रचारित करना है। इसका उद्देश्य जनसंख्या के एक बड़े हिस्से को उच्च शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करना है और बड़े समाज की शैक्षिक भलाई को बढ़ावा देना है।

विश्वविद्यालय ने समावेषी शिक्षा के माध्यम से एक शिक्षित समाज बनाने के लिए लगातार प्रयास किया है। इसने मुक्त और दूरस्थ शिक्षण (ओडीएल) के माध्यम से उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण की पेशकश करके उच्च शिक्षा प्रदान की है।

अपेक्षाकृत काफी कम समय में इग्नू ने उच्च शिक्षा, सामुदायिक शिक्षा, विस्तार गतिविधियों और निरंतर व्यावसायिक विकास के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दूरस्थ शिक्षा में एक विश्व नेता के रूप में, इसे राष्ट्रमंडल शिक्षा (सीओएल), कनाडा द्वारा उत्कृष्टता के पुरस्कार से कई बार सम्मानित किया गया है।

इग्नू अपने 21 विद्यापीठ और 67 क्षेत्रीय केंद्रों (भारतीय सेना, नौसेना और असम राइफल्स के लिए 11 मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय केंद्रों सहित) और 3500 सक्रिय अध्ययन केंद्रों (ओएससी) के नेटवर्क के माध्यम से अपना शैक्षणिक कार्यक्रम चलाता है। विश्वविद्यालय का विदेश में 12 अध्ययन केंद्रों का नेटवर्क भी है।

अध्ययन के 21 विद्यापीठ जो विभिन्न स्तरों पर शैक्षणिक कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों का डिजाइन और विकास करते हैं :

- कृषि विद्यापीठ (एसओए)
- कंप्यूटर और सूचना विज्ञान विद्यापीठ (एसओसीआईएस)
- सतत शिक्षा विद्यापीठ (एसओसीई)
- शिक्षा विद्यापीठ (एसओई)
- अभियंत्रण एवं तकनीक विद्यापीठ (एसओईटी)
- विस्तार एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ (एसओईडीएस)
- विदेशी भाषा विद्यापीठ (एसओएफएल)
- लिंग एवं विकास अध्ययन विद्यापीठ (एसओजीडीएस)
- स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ (एसओएचएस)
- मानविकी विद्यापीठ (एसओएच)
- अंतर–अनुषासिक एवं परा विषयक अध्ययन विद्यापीठ (एसओआईटीएस)
- पत्रकारिता एवं नवीन मीडिया अध्ययन विद्यापीठ (एसओजेएनएमएस)
- विधि विद्यापीठ (एसओएल)
- प्रबंधन अध्ययन विद्यापीठ (एसओएमएस)
- प्रदर्शन और दृष्य कला विद्यापीठ (एसओपीवीए)

- विज्ञान विद्यापीठ (एसओएस)
- सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ (एसओएसएस)
- सामाजिक कार्य विद्यापीठ (एसओएसडब्ल्यु)
- पर्यटन और आतिथ्य सेवा प्रबंध विद्यापीठ (एसओटीएचएसएम)
- अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ (एसओटीएसटी)
- व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ (एसओवीईटी)

वर्तमान में, इग्नू अपने स्कूल ऑफ स्टडीज के माध्यम से सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, बैचलर डिग्री, मास्टर डिग्री और डॉक्टोरल **डिग्री** के स्तर पर दो सौ अकादमिक, व्यावसायिक, पेशेवर, जागरूकता पैदा करने और कौशल–उन्मुख कार्यक्रमों की पेशकश कर रहा है।

विश्वविद्यालय बहु–चैनल, निर्देश और स्व–शिक्षण के लिए बहु–मीडिया शिक्षण पैकेज प्रदान करता है। शिक्षण/अध्ययन के लिए उपयोग किए जाने वाले विभिन्न घटकों में स्वयं शिक्षण के प्रिंट और ऑडियो–वीडियो सामग्री, रेडियो और टेलीविजन प्रसारण, आमने–सामने काउंसिलिंग/ट्यूटोरिंग, प्रयोगशाला का अनुभव, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग, वीडियो कॅन्फ्रेंस, इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया सीडी, इंटरनेट आधारित शिक्षा, फोन पर उपयोग होने वाले संदेश और ई–सामग्री शामिल हैं।

वर्तमान में, विश्वविद्यालय द्वारा एक इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया समर्थित ऑनलाइन शिक्षण विकसित करने के साथ–साथ पारंपरिक दूरस्थ शिक्षा के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकी–सक्षम शिक्षा के साथ मिश्रित शिक्षा के ढाँचे के भीतर मूल्य जोड़ने पर बल दिया जा रहा है। विश्वविद्यालय की नई पहलों में शामिल हैं– स्वयं (एसडब्ल्युएवाईएएम) आधारित बड़े पैमाने पर मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम (एमओओसी), शोधगंगा (यूजीसी प्रोजेक्ट) 247 स्वयंप्रभा, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (एमएचआरडी प्रोजेक्ट), डिजिटल अध्ययन सामग्री के लिए ई–ज्ञानकोश और इग्नू ई–सामग्री ऐप्प।

## 2. स्नातक कला (बीए)

जुलाई 2019 के शैक्षणिक सत्र के साथ, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने स्नातक स्तर पर चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली को अपनाया है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शुरू की गई चयन आधारित क्रेडिट प्रणाली छात्रों को उनकी आवश्यकताओं और रुचियों के आधार पर उनकी पसंद के उपखंडों/पाठ्यक्रमों का अध्ययन करने के लिए लचीलापन प्रदान करता है। विषय, अंतःविषय और कौशल–आधारित पाठ्यक्रम चुनें और अध्ययन के लिए विभिन्न संस्थानों में जाएँ।

हालाँकि इग्नू क्रेडिट आधारित शैक्षणिक कार्यक्रमों को व्यापक रूप से पाठ्यक्रमों के साथ पेश करने में सर्वप्रथम रहा है, अब यह सेमेस्टर प्रणाली और ग्रेड के आधार पर मूल्यांकन प्रणाली भी अपना रहा है।

स्नातक कला कार्यक्रम एक व्यापक कार्यक्रम है जिसमें विषय, अंतःविषय और कौशल आधारित पाठ्यक्रमों का मिश्रण होता है। यह मानविकी, सामाजिक विज्ञान और विज्ञान में पाठ्यक्रम की मुख्य बातें और विषयों से परिचित कराकर शिक्षार्थियों को दुनिया को समझने और विश्लेषण करने के लिए आवश्यक जानकारी और कौशल प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है।

कार्यक्रम में विभिन्न विद्यापीठों से अध्ययन के कई विषय और पाठ्यक्रम शामिल हैं। इस वर्ष निम्नलिखित बारह विषय इस कार्यक्रम का हिस्सा हैं :

1) मानव विज्ञान

2) अंग्रेजी

3) अर्थशास्त्र

4) हिंदी

5) इतिहास

6) गणित

7) राजनीति विज्ञान

8) मनोविज्ञान

9) लोक प्रशासन

10) संस्कृत

11) समाजशास्त्र

12) उर्दू

स्नातक कला निम्नलिखित पाठ्यक्रमों से 132 क्रेडिट वाला कार्यक्रम है :

i) कोर पाठ्यक्रम (सीसी)

ii) विषय विशिष्ट ऐच्छिक (डीएसई)

iii) योग्यता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम (एईसीसी)

iv) कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (एसईसी)

v) सामान्य ऐच्छिक (जीई)

कार्यक्रम को तीन साल (छह सेमेस्टर) की न्यूनतम अवधि में या छह साल की अधिकतम अवधि में प्रत्येक श्रेणी के तहत आवश्यक संख्या में क्रेडिट अर्जित करके पूरा किया जा सकता है। प्रत्येक श्रेणी के तहत क्रेडिट की आवश्यक संख्या इस प्रकार है : कोर पाठ्यक्रम के 72 क्रेडिट, विषय विशिष्ट ऐच्छिक के 24 क्रेडिट, योग्यता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम के 8 क्रेडिट, कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम के 16 क्रेडिट और सामान्य ऐच्छिक के 12 क्रेडिट।

एक क्रेडिट 30 घंटे के अध्ययन के समय के समतुल्य है, जिसमें शिक्षण की सारी गतिविधियाँ शामिल हैं (यानी प्रिंट सामग्री को पढ़ना और समझना, ऑडियो सुनना, वीडियो देखना, परामर्श सत्र में भाग लेना, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग और असाइनमेंट लिखना)। इस कार्यक्रम के अधिकांश पाठ्यक्रम (सीसी, डीएसई और जीई) छह क्रेडिट के हैं। इसका मतलब है कि आपको इनमें से प्रत्येक पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए 180 घंटे (630) का समय अध्ययन में लगाना होगा। कार्यक्रम में छह योग्यता और कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम भी हैं, जिनमें से प्रत्येक चार क्रेडिट यानि 120 घंटे (430) अध्ययन समय के हैं।

छह सेमेस्टर वाले कार्यक्रम के प्रत्येक सेमेस्टर में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों का मिश्रण है। हालाँकि, प्रत्येक सेमेस्टर में अध्ययन करने के लिए क्रेडिट की कुल संख्या 22 है। तालिका 2.1 कार्यक्रम के छह सेमेस्टर में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों के वितरण को दर्शाती है :

**तालिका 2.1 स्नातक कला कार्यक्रम संरचना**

| सेमेस्टर | कोर पाठ्यक्रम (सीसी)<br>12 पाठ्यक्रम **x** 6 क्रेडिट | विषय विशिष्ट ऐच्छिक (डीएसई)<br>4 पाठ्यक्रम × 6 क्रेडिट | योग्यता / कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (एईसीसी / एसईसी)<br>6 पाठ्यक्रम × 4 क्रेडिट | सामान्य ऐच्छिक (जीई)<br>2 पाठ्यक्रम×6 क्रेडिट | क्रेडिट |
|---|---|---|---|---|---|
| **I** | अंग्रेजी / हिंदी / भारतीय भाषा-1 | | AECC-1<br>पर्यावरणीय अध्ययन | | 22 |
| | विषय 1 कोर–ए | | | | |
| | विषय 2 कोर–ए | | | | |
| **II** | अंग्रेजी या हिंदी 2 | | AECC-2<br>अंग्रेजी / हिंदी<br>संचार कौशल | | 22 |
| | विषय 1 कोर–बी | | | | |
| | विषय 2 कोर–बी | | | | |
| **III** | अंग्रेजी या हिंदी 3 | | SEC-1 | | 22 |
| | विषय 1 कोर–सी | | | | |
| | विषय 2 कोर–सी | | | | |
| **IV** | अंग्रेजी या हिंदी 4 | | SEC-2 | | 22 |
| | विषय 1 कोर–डी | | | | |
| | विषय 2 कोर–डी | | | | |
| **V** | | DSE-1A | SEC-3 | GE-1 | 22 |
| | | DSE-2A | | | |
| **VI** | | DSE-1B | SEC-4 | GE-2 | 22 |
| | | DSE-2B | | | |
| **Total** | **72 क्रेडिट** | **24 क्रेडिट** | **24 क्रेडिट** | **12 क्रेडिट** | **132** |

अब जब आप स्नातक कला कार्यक्रम की संरचना समझ गए हैं, तो आइए कार्यक्रम के विशिष्ट घटकों, यानी कोर, ऐच्छिक और योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रमों के बारे में जानें।

## 2.1 कोर पाठ्यक्रम (CC)

इस कार्यक्रम में बारह कोर पाठ्यक्रम हैं, भाषाओं में चार और आपके द्वारा अध्ययन करने के लिए चुने गए प्रत्येक दो विषयों में चार। ये पाठ्यक्रम जो कार्यक्रम के पहले चार सेमेस्टर में पेश किए जाते हैं, वे आपको भाषा और साहित्य (शुरुआत के लिए अंग्रेजी या भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, संस्कृत और उर्दू) से परिचय करा करके मानविकी और सामाजिक विज्ञान के किन्हीं दो विषयों में एक मजबूत नींव बनाने में सहायता करते हैं।

प्रत्येक कोर पाठ्यक्रम छह क्रेडिट का है। ये पाठ्यक्रम कार्यक्रम के आधे से अधिक भाग का हिस्सा हैं, कार्यक्रम के 132 क्रेडिट में से 72 क्रेडिट (12पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट)।

कार्यक्रम के पहले चार सेमेस्टर में से प्रत्येक में एक भाषा कोर पाठ्यक्रम है। पहले सेमेस्टर में, आपके पास चुनने के लिए भाषा कोर पाठ्यक्रम का विकल्प है। अगले तीन सेमेस्टर में, विकल्प या तो हिंदी या अंग्रेजी भाषाओं तक सीमित है। वर्तमान में जो पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं, उन्हें नीचे तालिका 2.2 में दिया गया है।

**तालिका 2.2 : कोर पाठ्यक्रम (भाषाएं)**

| भाषा | प्रथम सेमेस्टर | द्वितीय सेमेस्टर |
|---|---|---|
| **हिंदी** | BHDLA 135 हिंदी भाषा : विविध प्रयोग | BHDLA 136 हिंदी भाषा : लेखन कौशल |
| **अंग्रेजी** | BEGLA 135 दैनिक जीवन में अंग्रेजी | BEGLA 136 कार्यस्थान में अंग्रेजी |
| **संस्कृत** | BSKLA 135 संस्कृत भाषा और साहित्य | |
| **उर्दू** | BUDLA 135 आधुनिक उर्दू गद्य और पद्य का अध्ययन | |
| | **तृतीय सेमेस्टर** | **चतुर्थ सेमेस्टर** |
| **हिंदी** | BHDLA 137 हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल | BHDLA-138 हिंदी साहित्य : विविध विधाएं, |
| **अंग्रेजी** | BEGLA 137 साहित्य के माध्यम से भाषा | BEGLA 138 पढ़ने और बोलने का कौशल |

भाषा कोर पाठ्यक्रमों के अलावा, बीए कार्यक्रम में आपकी पसंद के किसी भी दो विषयों से आठ कोर पाठ्यक्रम हैं। वर्तमान में, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, मानविकी विद्यापीठ और विज्ञान विद्यापीठ के बारह विषय बीए प्रोग्राम का हिस्सा हैं। यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कार्यक्रम के पहले सेमेस्टर/वर्ष में अध्ययन करने के लिए आपके द्वारा चुने गए दो विषयों को कोर और विषय की आवश्यक संख्या को पूरा करने के लिए कार्यक्रम के बाद के सेमेस्टर/वर्षों में बीए कार्यक्रम को पूरा करने के लिए अध्ययन करना होगा। आप कार्यक्रम के दूसरे या तीसरे वर्ष में अध्ययन के विषयों को नहीं बदल सकते हैं।

**तालिका 2.3 : कोर पाठ्यक्रम (विषय)**

| | प्रथम सेमेस्टर | द्वितीय सेमेस्टर |
|---|---|---|
| मानवविज्ञान | BANC 131 मानव विज्ञान एवं अनुसंधान विधियां | BANC 132 जैविक मानवविज्ञान के मूल सिद्धांत |
| अर्थशास्त्र | BECC 135 व्यष्टि अर्थशास्त्रके सिद्धांत-I | BECC 132 व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II |
| इतिहास | BHIC 131 भारत का इतिहास प्राचीन काल से C- 300CE | BHIC 132 भारत का इतिहास 300 से 1206 |
| लोक प्रशासन | BPAC 131 लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य | BPAC 132 प्रशासनिक विचारक |
| मनोविज्ञान | BPCC 131 मूलभूत मनोविज्ञान | BPCC 132 सामाजिक मनोविज्ञान का परिचय |
| राजनीति विज्ञान | BPSC 131 राजनीतिक सिद्धांत का परिचय | BPSC 132 भारतीय सरकार एवं राजनीति |

| | | |
|---|---|---|
| समाजशास्त्र | BSOC 131 समाजशास्त्र का परिचय | BSOC 132 भारत का समाजशास्त्र |
| अंग्रेजी | BEGC 131 Individual and Society | BEGC 132 Selections from Indian Writing% Cultural Diversity |
| हिंदी | BHDC 131 हिंदी साहित्य का इतिहास | BHDC 132 मध्यकालीन हिंदी कविता |
| उर्दू | BUDC 131 उर्दू साहित्य में गद्य एवं पद्य के रूपों का अध्ययन | BUDC 132 उर्दू शास्त्रीय गज़ल का अध्ययन |
| संस्कृत | BSKC 131 संस्कृत पद्य-साहित्य | BSKC 132 संस्कृत गद्य-साहित्य |
| गणित | BMTC 131 कलन | BMTC 132 विभेदक समीकरण |
| | **तृतीय सेमेस्टर** | **चतुर्थ सेमेस्टर** |
| मानवविज्ञान | BANC 132 सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानव विज्ञान की बुनियाद | BANC 134 पुरातात्त्विक मानव विज्ञान के मूल तत्व |
| अर्थशास्त्र | BECC 133 समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-I | BECC 134 समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II |
| इतिहास | BHIC 132 भारत का इतिहास 1206 से 1707 | BHIC 134 भारत का इतिहास 1707 से 1950 |
| लोक प्रशासन | BPAC 133 केंद्रीय स्तर पर प्रशासनिक प्रणाली | BPAC 134 राज्य एवं जिला स्तरों पर प्रशासनिक प्रणाली |
| मनोविज्ञान | BPCC 133 मनोवैज्ञानिक विकार | BPCC 134 सांख्यिकीय विधियां और मनोवैज्ञानिक अनुसंधान |
| राजनीति विज्ञान | BPSC 133 तुलनात्मक सरकार एवं राजनीति | BPSC 134 अंतरराष्ट्रीय संबंधों का परिचय |
| समाज शास्त्र | BSOC 133 समाजशास्त्रीय सिद्धांत | BSOC 134 समाजशास्त्रीय जाँच के तरीके |
| अंग्रेज़ी | BEGC 133 ब्रिटिश लिटरेचर | BEGC 134 रीडिंग नॉवेल्स |
| हिंदी | BHDC 133 आधुनिक हिंदी कविता BHDAE 182 हिंदी भाषा और संप्रेषण | BHDC 134 हिंदी गद्य साहित्य |
| उर्दू | BUDC 133 उर्दूभाषा की उत्पत्ति और विकास | BUDC 134 उर्दू नज़्म का अध्ययन |
| संस्कृत | BSKC 133 संस्कृत नाटक | BSKC 134 संस्कृत व्याकरण |
| गणित | BMTC 133 रीयल एनालिसिस | BMTC 134 बीजगणित |

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बीए कार्यक्रम आपको अपनी पसंद के किसी भी दो विषयों का अध्ययन करने का विकल्प देता है। हालाँकि, आपको ध्यान देना चाहिए कि इस कार्यक्रम के कुछ विषयों (जैसे गणित और मनोविज्ञान) की कुछ पूर्व शर्तें या विशेषताएँ हैं। उदाहरण के लिए, गणित के मुख्य और विषय विशिष्ट पाठ्यक्रमों में गणित का 12 कक्षा में एक विषय के रूप में होना पूर्व–अपेक्षित है। हालाँकि,

यह पूर्व–अपेक्षा केवल सिफारिशी है। मनोविज्ञान के अनुशासन में ऐसी कोई पूर्व–अपेक्षित योग्यता नहीं है, लेकिन इसके सभी मुख्य पाठ्यक्रमों को सीखने वाले को प्रयोगशाला के काम या ट्यूटोरियल के लायक कम से कम दो क्रेडिट लेने की आवश्यकता होती है। सभी अध्ययन केंद्रों में प्रयोगशाला उपलब्ध नहीं है अतः विश्वविद्यालय आपको प्रयोगशाला सुविधा के साथ निकटतम अध्ययन केंद्र आवंटित कर सकता है या आपको ऐसे केंद्र में परामर्श और ट्यूटोरियल सत्र में भाग लेने के लिए कह सकता है।

2.2 विषय विशिष्ट वैकल्पिक पाठ्यक्रम कार्यक्रम के पांचवें और छठे सेमेस्टर में पेश किए जाते हैं। यह छह क्रेडिट पाठ्यक्रम प्रकृति में अंतर–विषयक हैं। विषय विशिष्ट ऐच्छिक (डीएसई) विशिष्ट (विशेष या उन्नत या सहायक) हैं जो अध्ययन के विषय पर आधारित होते हैं। वे एक विस्तृत दायरा प्रदान करते हैं। कार्यक्रम में चार डीएसई हैं, जिनमें से प्रत्येक दो विषयों में से दो को आपने अध्ययन करने के लिए चुना है। वे 24 क्रेडिट (2.2 पाठ्यक्रम ग6 क्रेडिट) के हैं। पांचवें और छठे सेमेस्टर में प्रस्तावित डीएसई नीचे दी गई तालिका 2.4 में दिए गए हैं :

**तालिका 2.4 : विषय विशिष्ट ऐच्छिक (डीएसई)**

| | **Fifth Semester** | **Sixth Semester** |
|---|---|---|
| मानवविज्ञान | BANE 145 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान | BANE 146 देशज लोगों का मानवविज्ञान |
| अर्थशास्त्र | BECE 145 भारतीय अर्थव्यवस्था-I | BECE 146 भारतीय अर्थव्यवस्था-II |
| इतिहास | BHIE 141 चीन का इतिहास *C*-1840-1978 | BHIE 142 पर्यावरण का इतिहास |
| | BHIE 143 आधुनिक पूर्वी एशिया का इतिहास : जापान(*C*-1868-1945) | BHIE 144 भारत में इतिहास लेखन की परंपराएँ |
| | BHIE 145 यूरोपीय इतिहास के कुछ पहलू 1789-1945 | |
| लोक प्रशासन | BPAE 141 सूचना का अधिकार<br>BPAE 143 ब्रिक्स में प्रशासनिक प्रणाली | BPAE 142 संगठनात्मक व्यवहार<br>BPAE 144 सामाजिक नीतियाँ एवं प्रशासन |
| मनोविज्ञान | BPCE 145 परामर्श मनोविज्ञान | BPCE 146 औद्योगिक / संगठनात्मक मनोविज्ञान |
| राजनीति विज्ञान | BPSE 141 गांधी एवं समकालीन विश्व<br>BPSE 143 भारत में राज्य की राजनीति | BPSE 142 वैश्विक जगत में भारतीय विदेश नीति |
| | BPSE 145 पूर्वोत्तर भारत में लोकतंत्र एवं विकास | BPSE 144 दक्षिण एशिया का परिचय<br>BPSE 146 संघर्ष समाधान एवं शांति स्थापना |
| समाजशास्त्र | BSOE 141 नगरीय समाजशास्त्र<br>BSOE 143 पर्यावरणीय समाजशास्त्र<br>BSOE 145 धर्म एवं समाज | BSOE 142 भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराएं<br>BSOE 144 प्रजातिलेखन अध्ययन<br>BSOE 146 विवाह, परिवार एवं नातेदारी<br>BSOE 148 सामाजिक स्तरीकरण |
| अंग्रेजी | BEGE 141 Understanding Prose<br>BEGE 143 Understanding Poetry<br>BEGE 145 Soft Skills | BEGE 142 Understanding Drama |

| | | |
|---|---|---|
| हिंदी | BHDE 141 अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य | BHDE 142 राष्ट्रीय काव्यधारा |
| | BHDE 143 प्रेमचंद | BHDE 144 छायावाद |
| | BHDE 145 कबीर | BHDE 146 छायावादोत्तर हिंदी कविता |
| उर्दू | BUDE 141 मिर्ज़ा ग़ालिब का अध्ययन | BUDE 142 मीर अम्मन देहलवी का अध्ययन |
| संस्कृत | BSKE 141 आयुर्वेद के मूल आधार | BSKE 142 रंगमंच और नाट्यकला |
| गणित | BMTE 141 रैखिक बीज गणित | BMTE 144 न्युमेरिकल एनालिसिस |

2.3 प्रत्येक योग्यता संवर्धन पाठ्यक्रम चार क्रेडिट के हैं। जैसा कि नाम से पता चलता है, योग्यता संवर्धन अनिवार्य पाठ्यक्रम (एईसीसी) सभी शिक्षार्थियों के लिए अनिवार्य है। कुल दो एईसीसी प्रस्तावित हैं, पहले सेमेस्टर में एक और दूसरे सेमेस्टर में एक। पहला एईसीसी एक जागरूकता पाठ्यक्रम है, जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को पर्यावरणीय मुद्दों से रूबरू कराना और स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर पर्यावरण संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए उनकी नीतियों और प्रथाओं से परिचित कराना है। दूसरे सेमेस्टर में उपलब्ध अन्य AECC BEGAE 182 –अंग्रेजी संचार कौशल और BHDAE 182 – हिंदी भाषा और संप्रेषण हैं। ये पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को संचार के सिद्धांत, बुनियादी बातों और उपकरणों से परिचित कराते हैं और उनमें व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक बातचीत के लिए महत्वपूर्ण संचार कौशल विकसित करते हैं।

2.4 **कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (SEC)** भी क्षमता वृद्धि पाठ्यक्रम हैं। ये पाठ्यक्रम दैनिक जीवन के क्षेत्र में निर्धारित विशिष्ट कौशल का निर्माण करते हैं। इन्हें तीसरे सेमेस्टर और उसके बाद लिया जा सकता है। प्रत्येक सेमेस्टर में कई एसईसी का विकल्प होता है। आपको प्रत्येक सेमेस्टर में उनमें से केवल एक SEC का विकल्प चुनना होगा। प्रत्येक सेमेस्टर में उपलब्ध SEC नीचे की तालिका 2.6 में दिया गया है :

**तालिका 2.6 कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम (एसईसी)**

| **तृतीय सेमेस्टर** | **चतुर्थ सेमेस्टर** |
|---|---|
| BANS 183 पर्यटन मानवविज्ञान | BANS 184 सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं महामारी विज्ञान |
| BPCS 183 भावनात्मक बुद्धिमत्ता | BECS 184 डेटा विश्लेषण |
| BPCS 185 भावनात्मक क्षमता का विकास | BPAS 184 संभारण प्रबंधन |
| BEGS 183 लेखन एवं अध्ययन कौशल | BPCS 184 स्कूल मनोविज्ञान |
| BHDS 183 अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि | BPCS 186 तनाव प्रबंधन |
| | BSOS 184 मानव विज्ञानी फिल्म बनाने की तकनीक |
| | BHDS 184 रेडियो लेखन |
| **पंचम सेमेस्टर** | **षष्ठ सेमेस्टर** |
| BPCS 187 मानव संसाधन का प्रबंधन | BPAS 186 तनाव एवं समय प्रबंधन |
| BSOS 185 दृश्य के माध्यम से समाज | BPCS 188 सामाजिक मनोविज्ञान का अनुप्रयोग |
| BEGS 185 English Language Teaching | BEGS 186 व्यापार संचार |
| BHDS 185 टेलीविजन लेखन | BHDS 186 समाचार संकलन और लेखन |

**2.5 सामान्य ऐच्छिक (जीई)** अन्य प्रकार के ऐच्छिक हैं जो कार्यक्रम के पांचवें और छठे सेमेस्टर में लिए जा सकते हैं। ये पाठ्यक्रम अंतर–विषयक होते हैं। वे अन्य विषयों के लिए समझ प्रदान करते हैं जो सामाजिक घटनाओं की दक्षता और समझ का पोशण करते हैं। निम्नलिखित जीई में से कोई एक सामान्य ऐच्छिक चुनें, जो प्रत्येक सेमेस्टर में उपलब्ध हैं।

**तालिका 2.5 सामान्य ऐच्छिक (जीई)**

| पंचम सेमेस्टर | षष्ठ सेमेस्टर |
|---|---|
| BEGG 171 मीडिया एवं संचार कौशल | BEGG 172 Language and Linguistics |
| BEGG 173 शैक्षणिक लेखन एवं रचना | BEGG 174 Creative Writing |
| BHDG 173 पाठ्यक्रमः समाचार पत्र और फीचर लेखन पाठ्य | BHDG 174 सृजनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र पाठ्य |
| BPAG 171 आपदा प्रबंधन | BPAG 172 शासनः मुद्दे और चुनौतियां |
| BPAG 173 ई–शासन | BPAG 174 सतत विकास |
| BPCG 171 सामान्य मनोविज्ञान | BPCG 172 युवा, लिंग और पहचान |
| BPCG 173 स्वास्थ्य एवं बेहतरी के लिए मनोविज्ञान | BPCG 174 मनोविज्ञान एवं मीडिया |
| BPCG 175 स्वास्थ्य एवं बेहतरी के लिए मनोविज्ञान | BPCG 176 लैंगिक मनोविज्ञान |
| BSOG 171 भारतीय समाजःछवियां एवं वास्तविकताएँ | BSOG 176 अर्थव्यवस्था एवं समाज |
| BSOG 173 विकास का पुनर्विचार | BGDG 172 जेंडर संवेदन शीलता : समाज और संस्कृति |

इस कार्यक्रम निर्देशिका में सूचीबद्ध ऐच्छिक और कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम वर्तमान समय में उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय समय–समय पर नए ऐच्छिक (विषय विशिष्ट और सामान्य) और कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम शामिल करता रहेगा। शामिल किए गए नए पाठ्यक्रमों को विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर सूचीबद्ध किया जाएगा। आप उन्हें दूसरे या तीसरे वर्ष के लिए पुनः पंजीकरण के समय चुन सकते हैं।

अब जब हम स्नातक कला कार्यक्रम की संरचना और इसके घटकों के बारे में जान चुके हैं, तो आइए अब इस कार्यक्रम को पूरा करने का सबसे अच्छा तरीका चुनने पर ध्यान दें।

## 3. आपके स्नातक अध्ययन की योजना

स्नातक कला कार्यक्रम पाठ्यक्रमों को पूर्ण करने के लिए पाठ्यक्रम और अवधि में लचीलापन और खुलापन प्रदान करता है। आपको इस लचीलेपन का पूरा फायदा उठाना चाहिए। तीन साल की न्यूनतम अवधि के भीतर इस कार्यक्रम के सभी 132 क्रेडिट को पूरा करने के अपने लक्ष्य को पाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है। यदि, किसी भी कारण से, आप तीन वर्षों के भीतर कार्यक्रम को पूरा करने में असमर्थ हैं, तो कृपया ध्यान दें कि कार्यक्रम के लिए आपका पंजीकरण छह साल के लिए वैध है और आप पुनः दाखिले के लिए आवेदन करके अतिरिक्त दो वर्ष प्राप्त कर सकते हैं।

जैसा कि पहले ही उल्लेख किया गया है, इस कार्यक्रम का प्रत्येक क्रेडिट 30 घंटे के अध्ययन के बराबर है, जिसमें सभी शिक्षण गतिविधियाँ शामिल हैं (जैसे–प्रिंट सामग्री को पढ़ना और समझना, ऑडियो सुनना, वीडियो देखना, परामर्श सत्र में भाग लेना, टेलीकांफ्रेंसिंग और असाइनमेंट लिखना)। इसका मतलब है कि

आपको छह–क्रेडिट पाठ्यक्रम के लिए लगभग 180 घंटे और चार क्रेडिट पाठ्यक्रम के लिए 120 घंटे अध्ययन करना होगा। आपको इस कार्यभार को ध्यान में रखते हुए अपने अध्ययन का समय तय करना होगा। चूंकि आपके पास पहले सेमेस्टर में पूरा करने के लिए छह क्रेडिट के तीन पाठ्यक्रम और चार क्रेडिट का एक पाठ्यक्रम है और दूसरे सेमेस्टर में भी ऐसा ही कार्यभार है, इसलिए आपको एक वर्ष में कुल 1320 घंटे का अध्ययन करना होगा। इसका मतलब है कि आपको साल में कम से कम 300 दिन प्रतिदिन लगभग साढ़े चार घंटे अध्ययन करना होगा। इस अनुसूची के साथ, आप पहले वर्ष के सभी पाठ्यक्रमों को पूरा करने में सक्षम होंगे। इसी तरह, कार्यक्रम के दूसरे और तीसरे वर्ष में, आपके पास प्रत्येक सेमेस्टर को पूरा करने के लिए समान संख्या में क्रेडिट लेने होते हैं। तीन साल की न्यूनतम अवधि में तीन साल के कार्यक्रम को पूरा करने के लिए, आपको ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। इसलिए पूरे वर्ष लगातार अध्ययन करना मददगार साबित होगा और परीक्षाओं से पहले इसे तेज करने की योजना नहीं बनानी होगी।

यदि आप अपने आप को इस कार्यक्रम में पूरी तरह से समर्पित नहीं कर पा रहे हैं, तो आपको एक विशेष सेमेस्टर/वर्ष के लिए अपने लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। यदि आपको लगता है कि 44 क्रेडिट के बजाए, आप एक वर्ष में केवल 30 क्रेडिट ले सकते हैं, तो वर्ष की शुरुआत से उसके अनुसार योजना बनाएं। केवल चयनित पाठ्यक्रमों का अध्ययन करें। केवल उन पाठ्यक्रमों के असाइनमेंट करें जिनके लिए आप सत्रांत परीक्षा (टीईई) में शामिल होना चाहते हैं। बाकी को अगले साल के लिए रखें। अगले वर्ष फिर से, उस वर्ष के दो सेमेस्टर के लिए अपने लक्ष्य तय करें। जब भी आप पिछले सेमेस्टर/वर्ष के पाठ्यक्रम को पूरा करने का निर्णय लेते हैं और मूल्यांकन के लिए असाइनमेंट नहीं जमा करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप उस पाठ्यक्रम के लिए वर्तमान वर्ष का असाइनमेंट करते हैं और उन्हें टीईई में उपस्थित होने के लिए निर्धारित अनुसूची के अनुसार जमा करते हैं (विवरण के लिए इस कार्यक्रम गाइड की धारा 6.1 देखें)। एक उचित योजना के माध्यम से आप अपनी सुविधा के अनुसार इस कार्यक्रम को पूरा कर सकते हैं।

## 4. फीस की संरचना और भुगतान की अनुसूची

**फीस की संरचनाः** स्नातक कला कार्यक्रम के लिए प्रति वर्ष 2700/–रु. की दर से कुल 8100/–रु. की फीस है। पहले वर्ष में 2700/–रु. के साथ पंजीकरण शुल्क के रूप में 200/–रु. का भी भुगतान करना होता है।

कार्यक्रम शुल्क का भुगतान केवल ऑनलाइन मोड से डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड के माध्यम से किया जाना चाहिए। एक बार भुगतान किया गया शुल्क वापस नहीं किया जाता है।

मनोविज्ञान पाठ्यक्रमों में एक प्रैक्टिकल घटक है। मनोविज्ञान के शिक्षार्थियों को 600/–रु. का अतिरिक्त शुल्क देना होगा।

विश्वविद्यालय कार्यक्रम शुल्क को संषोधित कर सकता है। उस स्थिति में, विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित भुगतान के कार्यक्रम के अनुसार संषोधित शुल्क आपके द्वारा देय होगा।

हालांकि स्नातक कला कार्यक्रम एक सेमेस्टर–आधारित कार्यक्रम है, लेकिन पंजीकरण वार्शिक रूप से किया जाता है। जैसे आपने कार्यक्रम की शुरुआत में पहले दो सेमेस्टर के लिए पंजीकरण किया है, आपको शैक्षणिक वर्ष की शुरुआत में दूसरे वर्ष (तीसरे और चौथे सेमेस्टर) और तीसरे वर्ष (चौथे और पांचवें सेमेस्टर) के लिए नीचे दिए गए कार्यक्रम के अनुसार फिर से पंजीकरण कराना होगा।

### पुनः पंजीकरण के लिए अनुसूची

शिक्षार्थियों को समय–समय पर विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित कार्यक्रम के अनुसार वेब पोर्टल www.ignou-ac-in पर केवल ऑनलाइन माध्यम से पुनः पंजीकरण (आरआर) फॉर्म जमा करने की सलाह दी जाती है।

कार्यक्रम शुल्क का भुगतान प्रत्येक वर्ष की शुरुआत में केवल डेबिट कार्ड/क्रेडिट कार्ड/नेट बैंकिंग के माध्यम से ऑनलाइन मोड द्वारा किया जाना है।

कार्यक्रम की फीस का समय पर भुगतान शिक्षार्थी की जिम्मेदारी है। शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह अंतिम तिथि की प्रतीक्षा किए बिना जितनी जल्दी हो सके फीस जमा कर दें। फीस का भुगतान न करने पर अध्ययन सामग्री नहीं मिलेगी और परीक्षा में बैठने की अनुमति भी नहीं दी जाएगी। इसके परिणामस्वरूप प्रवेश रद्द भी हो सकता है। यदि कोई शिक्षार्थी किसी पाठ्यक्रम के लिए उचित पंजीकरण के बिना जानबूझकर परीक्षा में बैठता है, तो विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

## 5. निर्देशकीय प्रणाली

विश्वविद्यालय द्वारा अपनाई गई शिक्षा पद्धति पारंपरिक विश्वविद्यालयों से भिन्न है। मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली अधिक शिक्षाप्रद है जिसमें शिक्षार्थी पढ़ने–सीखनेकी प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भागीदार होते हैं। अधिकांश निर्देश आमने–सामने संचार के बजाय दूरस्थ माध्यम से दिए जाते हैं।

विश्वविद्यालय, निर्देश के लिए एक मल्टी–मीडिया दृष्टिकोण का अनुसरण करता है। इसमें शामिल हैं :

- स्व–शिक्षण सामग्री
- रेडियो और टीवी से प्रसारित ऑडियो–वीडियो कार्यक्रम
- टेलीकॉनफेरेंसिंग सत्र
- अध्ययन केंद्रों पर अकादमिक काउंसिलर के साथ आमने सामने काउंसिलिंग
- असाइनमेंट/ट्यूटोरियल/प्रैक्टिकल/षोध/प्रोजेक्ट

### 5.1 अध्ययन सामग्री

पाठ्यक्रम सामग्री, प्रिंट या ईबुक के प्रारूप में, निर्देश का प्राथमिक रूप हैं। आपको मुख्य रूप से पाठ्यक्रम सामग्री पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जो आपको पुस्तकों या ईबुक के रूप में भेजी जाती है। पाठ्यक्रम सामग्री असाइनमेंट को हल करने और सत्रांत परीक्षा (टीईई) के लिए तैयारी करने के लिए पर्याप्त होती है। हालाँकि, हम आपको अतिरिक्त सामग्री, विशेष रूप से उन पुस्तकों को पढ़ने का सुझाव देते हैं जो पाठ्यक्रम सामग्री के सुझाए गए पठन सामग्री अनुभाग में दिए गए हैं।

विश्वविद्यालय द्वारा तैयार की गई सामग्री की प्रकृति स्व–शिक्षात्मक है। प्रत्येक पाठ्यक्रम एक ही पुस्तक या ईबुक के रूप में मुद्रित किया जाता है। कोर्स को कई खंडों में विभाजित किया जाता है। एक छह क्रेडिट कोर्स में आमतौर पर चार से पांच खंड होते हैं। प्रत्येक खंड में इकाइयाँ होती हैं (न्यूनतम दो से अधिकतम पांच इकाइयां)। आम तौर पर, एक खंड में शामिल इकाइयों में एक विषयगत एकात्मता होती है। पुस्तक का परिचय खंड,पाठ्यक्रम, उसके उद्देश्यों, सामग्री का अध्ययन करने के लिए दिशा–निर्देश आदि का अवलोकन प्रदान करता है। खंड परिचय, खंड के साथ–साथ उस खंड की प्रत्येक इकाई के बारे में बताता है।

प्रत्येक इकाई का निर्माण स्व–अध्ययन की सुविधा को ध्यान में रखकर किया गया है। प्रत्येक इकाई का उद्देश्य सीखने के उद्देश्य से शुरू होता है जिसकी आपको इकाई से सीखने की अपेक्षा की जाती है। परिचय इकाई के प्रमुख विषय का अवलोकन प्रदान करता है। पिछली इकाइयों के विषयों और इकाई में शामिल होने वाले विषय के साथ एक कड़ी बनाने का प्रयास किया जाता है। इसके बाद मुख्य पाठ होता

है, जिसे विभिन्न खंडों और उपखंडों में विभाजित किया जाता है। प्रत्येक खंड के अंत में हमने "अपनी प्रगति का मूल्यांकन करें" शीर्षक के तहत स्व–मूल्यांकन के लिए प्रश्न प्रदान किए हैं। आपको इस भाग का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि यह आपका आकलन करने में मदद करेगा और विषय की आपकी समझ की जांच करेगा। "अपनी प्रगति का मूल्यांकन करें" के प्रश्न केवल आपके अभ्यास के लिए हैं, मूल्यांकन के लिए इन प्रश्नों के उत्तर विश्वविद्यालय को प्रस्तुत नहीं करने चाहिए। इकाई के अंत में "अपनी प्रगति का मूल्यांकन करें" के अभ्यास के संकेत दिए गए हैं। हमने पूरी लंबाई के उत्तर प्रदान नहीं किए हैं, क्योंकि हम आपको अपने शब्दों में लिखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहते हैं और हम नहीं चाहते कि आप पाठ्यक्रम सामग्री को याद करें।

अनुभाग संक्षेप में/सारांश इकाई में की गई चर्चा का एक संक्षिप्त विवरण देता है। यह सारांश आपको इकाई में शामिल मुख्य बिंदुओं को याद करने में मददगार होता है। प्रत्येक इकाई संदर्भ के साथ समाप्त होती है जो उन पुस्तकों और लेखों की सूची देती है इकाई तैयार करने में जिनसे मदद ली गई है। इसके अलावा, प्रत्येक खंड/पाठ्यक्रम के अंत में, सुझाव रीडिंग की एक सूची दी जाती है। इस खंड में सूचीबद्ध कुछ पुस्तकें अध्ययन केंद्र के पुस्तकालय में भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

एसएलएम को समझने के लिए, इकाइयों को ध्यान से पढ़ें और महत्वपूर्ण बिंदुओं को नोट करें। आप नोट बनाने और अपनी टिप्पणी लिखने के लिए मुद्रित पृष्ठों के मार्जिन में दिए स्थान का उपयोग कर सकते हैं। इकाइयों को पढ़ते समय, आप कठिन शब्दों को चिह्नित कर सकते हैं और शब्दकोष से ऐसे शब्दों के अर्थ समझ सकते हैं। यदि आपको तब भी कुछ समझ में नहीं आता, तो स्पष्टीकरण के लिए अध्ययन केंद्र में आमने–सामने सत्र के दौरान अपने परामर्शदाता से परामर्श करें।

### अध्ययन सामग्री का प्रेषण

पंजीकरण की ऑनलाइन प्रक्रिया पूरी होते ही सामग्री का प्रेषण शुरू हो जाता है। आप कार्यक्रम के लिए पंजीकरण के समापन के एक महीने के भीतर अपनी अध्ययन सामग्री प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं। यदि कोई पाठ्यक्रम सामग्री खो गई है या आप गलत या दोशपूर्ण सामग्री प्राप्त करते हैं, तो कृपया क्षेत्रीय केंद्र को इस बारे में बताएं या ssc@ignou.ac.in पर छात्र सेवा केंद्र को लिखें।

जिन छात्रों ने डिजीटल संस्करण के लिए आवेदन किया है, उनके लिए विस्तृत जानकारी इग्नू की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

## 5.2 शैक्षणिक परामर्श

दूरस्थ शिक्षा में, शिक्षार्थियों और उनके शैक्षणिक ट्यूटर्स/परामर्शदाताओं के बीच आमने–सामने का संपर्क एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। इस तरह की बातचीत का उद्देश्य आपके कुछ सवालों का जवाब देना और अपनी शंकाओं को स्पष्ट करना है, जो संचार के किसी अन्य माध्यम से संभव नहीं हो सकता। इसका उद्देश्य आपको साथी शिक्षार्थियों से मिलने का अवसर प्रदान कराना भी है। अध्ययन के लिए आपके द्वारा चुने गए पाठ्यक्रमों में अकादमिक परामर्श और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए अध्ययन केंद्रों में अनुभवी शैक्षणिक परामर्शदाता होते हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए शैक्षणिक परामर्श सत्र पूरे शैक्षिक सत्र में उपयुक्त अंतराल पर आयोजित किए जाएंगे। सैद्धांतिकपाठ्यक्रमों के लिए शैक्षणिक परामर्श सत्रों में उपस्थिति अनिवार्य नहीं है, लेकिन हम आपको इन सत्रों में भाग लेने का सुझाव देंगे क्योंकि वे कुछ मामलों में उपयोगी हो सकते हैं, जैसे कि शिक्षकों और साथी शिक्षार्थियों के साथ विषय पर अपने विचार साझा करना, कुछ जटिल विचार या कठिन मुद्दों को समझना और किसी भी संदेह के लिए स्पष्टीकरण प्राप्त करना जिसे आप अन्यथा करने की कोशिश नहीं करेंगे। हालांकि, प्रयोगशाला कार्य से संबंधित पाठ्यक्रमों के लिए प्रैक्टिकल सत्र में भाग लेना अनिवार्य है।

आपके अध्ययन केंद्र में आमने–सामने परामर्श प्रदान किया जाएगा। आपको ध्यान देना चाहिए कि शैक्षणिक परामर्श सत्र सामान्य कक्षा के अध्यापन या व्याख्यानों से बहुत अलग होगा। शैक्षणिक परामर्शदाता व्याख्यान या भाशण नहीं देंगे। वे कठिनाइयों को दूर करने में आपकी मदद करने की कोशिश करेंगे, जिसका आप इस कार्यक्रम के लिए अध्ययन करते समय सामना करते हैं। इन सत्रों में, आपको विषय–आधारित कठिनाइयों और ऐसी कठिनाइयों से उत्पन्न होने वाले किसी भी अन्य मुद्दों पर ध्यान देना चाहिए। इसके अलावा, उस समय उपलब्ध कुछ ऑडियो और वीडियो सामग्री परामर्श सत्रों में चलाई जाएंगी। विश्वविद्यालय सामान्यतः चार क्रेडिट के लिए छह से सात शैक्षणिक परामर्श सत्र आयोजित करता है और छह क्रेडिट पाठ्यक्रम के लिए नौ से दस सत्र आयोजित करता है। यदि किसी अध्ययन केंद्र में 10 से कम छात्र हैं, तो गहन परामर्श सत्र आयोजित किए जाएंगे, जिसका अनिवार्य रूप से मतलब है कि निर्धारित परामर्श सत्रों का 40 प्रतिशत एक सप्ताह के भीतर आयोजित किया जाएगा।

अकादमिक परामर्श सत्र में भाग लेने से पहले आप कृपया अपनी पाठ्यक्रम सामग्री का अध्ययन करें और जिन बिंदुओं पर चर्चा करनी हो उन्हें लिख कर रखें। जब तक आप इकाइयों को नहीं पढ़ेंगे, तब तक आप चर्चा करने के लिए तैयार नहीं हो सकते। प्रासंगिक और महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करें। एक दूसरे के दृष्टिकोण को समझने की भी कोशिश करें। शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए पारस्परिक सहायता प्राप्त करने के लिए आप अपने साथी शिक्षार्थियों के साथ व्यक्तिगत संपर्क भी स्थापित कर सकते हैं। अपने शैक्षणिक परामर्शदाताओं से अधिकतम संभव सहायता प्राप्त करने का प्रयास करें।

## 5.3 अध्ययन केंद्र

छात्रों को प्रभावी सहायता प्रदान करने के लिए हमने पूरे देश में कई अध्ययन केंद्र स्थापित किए हैं। आपको इनमें से एक अध्ययन केंद्र आवंटित किया जाएगा जो आपके निवास स्थान या कार्य स्थल को ध्यान में रखकर किया जाता है। हालांकि, प्रत्येक अध्ययन केंद्र केवल सीमित संख्या में छात्रों को संभाल सकता है और हमारे सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद, यह हमेशा संभव नहीं हो सकता कि आपको अपनी पसंद का अध्ययन केंद्र आवंटित हो सके। आपको आवंटित अध्ययन केंद्र के बारे में बता दिया जाएगा।

**हर अध्ययन केंद्र में होगाः**

- एक कोऑर्डिनेटर जो केंद्र की सारी गतिविधियों का समन्वय करेगा
- अंशकालिक आधार पर नियुक्त एक सहायक कोऑर्डिनेटर और अन्य सहायक कर्मचारी
- आपके द्वारा चुने गए पाठ्यक्रमों में आपको परामर्श और मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए विभिन्न पाठ्यक्रमों में शैक्षणिक परामर्शदाता

**अध्ययन केंद्र में छह प्रमुख कार्य होंगे :**

**काउंसलिंग :**पाठ्यक्रमों के लिए आमने–सामने की काउंसलिंग अध्ययन केंद्रों में प्रदान की जाएगी। जैसा कि पहले कहा गया था, 6 क्रेडिट पाठ्यक्रम के लिए नौ से दस शैक्षणिक परामर्श सत्र होंगे और 4 क्रेडिट पाठ्यक्रम के लिए छह से सात सत्र होंगे।

परामर्श सत्र की अनुसूची आपके अध्ययन केंद्र के समन्वयक द्वारा आपको बताई जाएगी।

**असाइनमेंट का मूल्यांकनः** अध्ययन केंद्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए नियुक्त किए गए शैक्षणिक परामर्शदाताओं के द्वारा असाइनमेंट (टीएमए) का मूल्यांकन किया जाएगा। ये असाइनमेंट आपको परामर्श्दाता की टिप्पणियों और प्राप्त अंकों के साथ वापस कर दिए जाएंगे। ये टिप्पणियाँ आपकी पढ़ाई में मदद करेंगी।

**पुस्तकालयः** प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए, 'संदर्भ ग्रंथ' के तहत सुझाई गई कुछ किताबें अध्ययन केंद्र के पुस्तकालय में उपलब्ध होंगी। पुस्तकालय में सभी ऑडियो और वीडियो टेप भी उपलब्ध होती हैं।

**सूचना और सलाहः** अध्ययन केंद्र में, आपको विश्वविद्यालय द्वारा प्रदान किए जाने वाले पाठ्यक्रमों, शैक्षणिक परामर्श कार्यक्रम, परीक्षा कार्यक्रम आदि के बारे में प्रासंगिक जानकारी मिलेगी। आपको अपने वैकल्पिक और आवेदन उन्मुख पाठ्यक्रमों को चुनने में भी मार्गदर्शन मिलेगा।

**ऑडियो–वीडियो सुविधाएंः** अध्ययन केंद्र आपको विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए तैयार किए गए ऑडियो और वीडियो सामग्रियों का उपयोग करने में मदद करने के लिए ऑडियो–वीडियो सुविधाओं से सुसज्जित होता है। प्रत्येक कार्यक्रम की सामग्री का वर्णन करते हुए मीडिया नोट्स भी अध्ययन केंद्र पर उपलब्ध होंगे। इससे आपको प्रत्येक प्रोग्राम की सामग्री को जानने में मदद मिलेगी।

**साथी शिक्षार्थियों के साथ बातचीतः** अध्ययन केंद्र आपको साथी शिक्षार्थियों के साथ बातचीत करने का अवसर देता है।

अध्ययन केंद्र आपके लिए एक संपर्क केंद्र भी है। विश्वविद्यालय व्यक्तिगत रूप से सभी छात्रों को सभी जानकारी नहीं भेज सकता है। सभी महत्वपूर्ण जानकारी अध्ययन केंद्रों के और क्षेत्रीय निदेशकों समन्वयक को सूचित की जाती है। समन्वयक सभी महत्वपूर्ण सूचनाओं को शिक्षार्थियों के लाभ के लिए अध्ययन केंद्र के नोटिस बोर्ड पर लगाएंगे। इसलिए, आपको असाइनमेंट के बारे में दिन–प्रतिदिन की जानकारी, परीक्षा फॉर्म जमा करने, टीईई डेट–शीट, परिणाम की घोषणा आदि के लिए अपने अध्ययन केंद्र के संपर्क में रहने की सलाह दी जाती है।

## 5.4 इंटरैक्टिव रेडियो काउंसिलिंग

विश्वविद्यालय में पूरे भारत में ऑल इंडिया रेडियो नेटवर्क के माध्यम से इंटरैक्टिव काउंसिलिंग की सुविधा है। आप अपने क्षेत्र के रेडियो स्टेषन में ट्यूनिंग करके इसमें भाग ले सकते हैं। इस परामर्श के लिए विभिन्न विषय क्षेत्रों के विशेषज्ञ उपलब्ध होते हैं। छात्र टेलीफोन का उपयोग करके इन विशेषज्ञों के समक्ष अपने प्रश्न रख सकते हैं। टेलीफोन नंबरों की घोषणा संबंधित रेडियो स्टेषनों द्वारा की जाती है। यह परामर्श सभी दिन उपलब्ध रहते हैं। इंटरैक्टिव रेडियो कार्यक्रम के प्रत्येक सत्र का विषय विश्वविद्यालय की वेबसाइट के ज्ञानवाणी अनुभाग में उपलब्ध है।

## 5.5 ज्ञान दर्शन

दूरदर्शन के सहयोग से इग्नू के पास अब ज्ञान दर्शन नामक एक विशेष शैक्षणिक टीवी चैनल है। यह केबल टीवी नेटवर्क के माध्यम से उपलब्ध है। चैनल हर दिन 24 घंटे शैक्षणिक कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। लाइव प्रसारण दोपहर में 3 से 5 बजे तक होता है और रात में 8 से 10 बजे तक इसका पुनः प्रसारण किया जाता है। इग्नू के कार्यक्रमों के अलावा, इसमें विभिन्न राष्ट्रीय शिक्षा संस्थानों द्वारा निर्मित शैक्षणिक कार्यक्रम होते हैं। आपको अपने केबल ऑपरेटर के माध्यम से इस तक पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए। कार्यक्रमों और लाइव सत्रों की अनुसूची अध्ययन केंद्रों पर एक महीने पहले उपलब्ध होती है। आप विश्वविद्यालय की वेबसाइट से कार्यक्रमों और लाइव सत्रों की अनुसूची भी प्राप्त कर सकते हैं।

वर्तमान में, ज्ञानदर्शन चैनल निम्नलिखित डीटीएच प्लेटफार्मों पर उपलब्ध है :

| क्रमांक | डीटीएच प्लेटफॉर्म | टीवी चैनल नंबर |
|---|---|---|
| 1. | एअरटेल | 442 |
| 2. | टाटा स्काई | 755 |
| 3. | सन डाइरेक्ट | 596 |
| 4. | डेन | 526 |
| 5. | इन डिजिटल | 297 |
| 6. | हैथवे | 473 |
| 7 | इनडिपेंडेंट टीवी | 566 |

### 5.6 ज्ञान वाणी

ज्ञान वाणी एक शैक्षणिक एफएम रेडियो नेटवर्क है जो प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, वयस्क शिक्षा, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा, उच्च शिक्षा और विस्तार शिक्षा सहित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं और स्तरों को कवर करने वाले कार्यक्रम प्रदान करता है। स्नातक कला के विभिन्न पहलुओं और पाठ्यक्रमों पर कार्यक्रम होते हैं। कार्यक्रमों की अनुसूची विश्वविद्यालय के वेबसाइट पर अपलोड की जाती है।

### 5.7 टेलीकॉन्फ्रेंस/एडुसैट

देश के विभिन्न हिस्सों में फैले हमारे शिक्षार्थियों तक पहुँचने के लिए हम टेलीकॉन्फ्रेंसिंग की मदद लेते हैं। ये सत्र दिल्ली से संचालित किए जाते हैं। छात्र इग्नू के क्षेत्रीय केंद्रों और निर्दिष्ट अध्ययन केंद्रों में उपस्थित हो सकते हैं। इसमें एक तरफा वीडियो और दो तरफा ऑडियो सुविधा है। टेलीकॉन्फ्रेंसिंग ज्ञान दर्शन–2 और एडुसैट पर उपलब्ध है। स्नातक कला कार्यक्रम का समय शाम 5.00 बजे से 7.45 बजे तक सप्ताह के सारे दिन आता है। दिल्ली के संकाय सदस्य और अन्य विषय विशेषज्ञ इन सत्रों में भाग लेते हैं। आप अपनी समस्याओं और प्रश्नों को उपलब्ध केंद्रों पर उपलब्ध टेलीफोन के माध्यम से इन विशेषज्ञों के सामने रख सकते हैं। ये स्नातक कला कार्यक्रम के पाठ्यक्रम से संबंधित आपके सामान्य प्रश्नों और अन्य सामान्य जानकारी प्राप्त करने में मदद करेंगे।

## 6. मूल्यांकन

विश्वविद्यालय की मूल्यांकन प्रणाली भी पारंपरिक विश्वविद्यालयों से अलग है। इग्नू में मूल्यांकन की एक बहुविध प्रणाली है।

- अध्ययन की प्रत्येक इकाई में स्व–मूल्यांकन अभ्यास।
- चुने गए पाठ्यक्रम के अनुसार असाइनमेंट, प्रैक्टिकल असाइनमेंट एवं सेमिनार/कार्यषाला/विस्तारित संपर्क कार्यक्रम आदि के माध्यम से सतत मूल्यांकन।
- सत्रांत परीक्षा (टीईई)
- पाठ्यक्रम की आवश्यकतानुसार प्रोजेक्ट/प्रैक्टिकल कार्य

मूल्यांकन में दो भाग होते हैं:i) असाइनमेंट के माध्यम से निरंतर मूल्यांकन, और ii) सत्रांत परीक्षा। अंतिम परिणाम में, पाठ्यक्रम के सभी असाइनमेंट का 30% वेटेज होता है जबकि सत्रांत परीक्षा के लिए 70% वेटेज दिया जाता है। विश्वविद्यालय निरंतर मूल्यांकन के साथ–साथ सत्रांत परीक्षा के लिए ग्रेडिंग प्रणाली

का अनुसरण करता है। यह नीचे दिए गए अक्षर ग्रेड का उपयोग करके दस बिंदुओं के पैमाने पर किया जाता है :

विश्वविद्यालय ने स्नातक कला की डिग्री के लिए ग्रेड कार्ड और डिवीजन में संख्यात्मक अंकन भी प्रदान करने का निर्णय लिया है।

| अक्षर ग्रेड | अंक ग्रेड | प्रतिशत |
|---|---|---|
| O (सर्वश्रेष्ठ) | 10 | $\geq$ 85 |
| A+ (बेहतरीन) | 9 | $\geq$ 75 to < 85 |
| A (बहुत अच्छा) | 8 | $\geq$ 65 to < 75 |
| B+ (अच्छा) | 7 | $\geq$ 55 to < 65 |
| B (औसत से ऊपर) | 6 | $\geq$ 50 to < 55 |
| C (औसत) | 5 | $\geq$ 40 to < 50 |
| D (पास) | 4 | $\geq$ 35 to < 40 |
| F (फेल) | 0 | < 35 |
| Ab (अनुपस्थित) | 0 | अनुपस्थित |

आपको निरंतर मूल्यांकन (असाइनमेंट) और साथ ही प्रत्येक पाठ्यक्रम की सत्रांत परीक्षा दोनों में कम से कम 35: अंक (ग्रेड डी) स्कोर करने की आवश्यकता होती है। समग्र गणना में भी आपको बीए की डिग्री का दावा करने के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम में कम से कम 35: अंक (ग्रेड डी) प्राप्त करने होंगे। सतत मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा के स्कोर एक पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए एक–दूसरे के पूरक नहीं हैं।

जो छात्र सत्रांत परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होते हैं, उन्हें अगले वर्ष की सत्रांत परीक्षा देने की अनुमति दी जाती है। इसका मतलब है कि आप अपने अध्ययन के दूसरे वर्ष में प्रथम वर्ष के पाठ्यक्रमों की सत्रांत परीक्षा दे सकते हैं। लेकिन आप एक परीक्षा में 48 से अधिक क्रेडिट के लिए परीक्षा नहीं दे सकते हैं। इसी तरह, पहले और दूसरे वर्ष के पाठ्यक्रम को तीसरे वर्ष तक ले जाया जा सकता है।

## 6.1 असाइनमेंट

असाइनमेंट निरंतर मूल्यांकन का गठन करते हैं। आपके द्वारा असाइनमेंट में प्राप्त किए गए अंक आपके अंतिम परिणाम में शामिल किए जाएंगे। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, एक पाठ्यक्रम का असाइनमेंट का वेटेज 30% होता है। इसलिए आपको अपने असाइनमेंट को गंभीरता से लेने की सलाह दी जाती है। आपकी ओर से एक साधारण चूक आपको बाद में बड़ी असुविधा में डाल सकती है।

इस कार्यक्रम के प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए, आपको एक ट्यूटर मार्क्ड असाइनमेंट (टीएमए) पूरा करना होगा जिसमें पाठ्यक्रम की प्रकृति के आधार पर दो से तीन खंड होते हैं। प्रत्येक सेमेस्टर के टीएमए विश्वविद्यालय की वेबसाइट के छात्र क्षेत्र से डाउनलोड किए जा सकते हैं।

आपको असाइनमेंट बुकलेट में निर्दिष्ट नियत तिथियों के भीतर असाइनमेंट पूरा करना है। यदि आप उस पाठ्यक्रम के लिए समय पर असाइनमेंट जमा नहीं करते हैं, तो आपको किसी भी पाठ्यक्रम के लिए सत्रांत परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यदि आप असाइनमेंट प्रस्तुत किए बिना सत्रांत परीक्षा में बैठते हैं तो सत्रांत परीक्षा का परिणाम रद्द कर दिया जाएगा।

सुनिश्चित करें कि आपकी असाइनमेंट सभी प्रकार से पूर्ण हैं। जमा करने से पहले आपको यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आपने सभी असाइनमेंट में सभी सवालों के जवाब दिए हैं। अपूर्ण असाइनमेंट आपके ग्रेड को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

टीएमए का मुख्य उद्देश्य आपके द्वारा प्राप्त की जाने वाली शिक्षण सामग्रियों की आपकी समझ और पाठ्यक्रम में आपकी सहायता करना है। मूल्यांकनकर्ता/शैक्षणिक परामर्शदाता कार्य को सही करने के बाद उन्हें अपनी टिप्पणियों और अंकों के साथ वापस आपके पास भेजते हैं। टिप्पणियाँ आपके अध्ययन में आपका मार्गदर्शन करेंगी और इसे बेहतर बनाने में मदद करेंगी। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि आप प्रदर्शन पर मूल्यांकनकर्ता की टिप्पणियों से संबंधित असाइनमेंट षीट की एक प्रति के साथ–साथ मूल्यांकित टीएमए एकत्र करें।

मुद्रित पाठ्यक्रम सामग्री में प्रदान की गई सामग्री असाइनमेंट का जवाब देने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए। कष्पया असाइनमेंट पर काम करने के लिए अतिरिक्त पठन सामग्री की अनुपलब्धता के बारे में चिंता न करें। हालाँकि, यदि आप चाहें तो अन्य पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं। असाइनमेंट इस तरह से डिजाइन किए गए हैं कि आप मुख्य रूप से पाठ्यक्रम सामग्री पर ध्यान केंद्रित करें और अपने व्यक्तिगत अनुभव का फायदा उठाएँ।

आपको अपना असाइनमेंट रिस्पॉन्स षीट अध्ययन केंद्र के समन्वयक को सौंपना होगा। अपने रिकॉर्ड के लिए, सभी असाइनमेंट की एक प्रति अपने पास रखें जिसे आप समन्वयक के पास जमा कराते हैं। यदि जमा करने के एक महीने के भीतर मूल्यांकनकर्ता की टिप्पणियों से युक्त मूल्यांकन पत्रक की एक प्रति के साथ आपको विधिवत मूल्यांकन किया गया ट्यूटर मार्क्ड असाइनमेंट वापस नहीं मिलता है तो कृपया इसे अपने अध्ययन केंद्र से व्यक्तिगत रूप से प्राप्त करने का प्रयास करें। यह आपको भविश्य के असाइनमेंट में सुध ाार करने में मदद कर सकता है।

अध्ययन केंद्र में जमा किए गए टीएमए की डुप्लिकेट प्रतियाँ रखें। माँगे जाने पर उन्हें छात्र मूल्यांकन प्रभाग में दिखाने की आवश्यकता हो सकती है। मूल्यांकन के बाद आपके द्वारा प्राप्त सही असाइनमेंट का भी लेखा–जोखा रखें। किसी भी समस्या के उत्पन्न होने पर यह आपको विश्वविद्यालय में अपने मामले का प्रतिनिधित्व करने में मदद करेगा।

यदि आपको किसी असाइनमेंट में पास ग्रेड नहीं मिलता है, तो आपको इसे फिर से जमा करना होगा। विश्वविद्यालय की वेबसाइट के स्टूडेंट ज़ोन टैब से नए असाइनमेंट प्राप्त करें। हालाँकि, असाइनमेंट में पास ग्रेड प्राप्त करने के बाद, आप ग्रेड में सुधार के लिए इसे फिर से जमा नहीं कर सकते। तथ्यात्मक त्रुटियों को छोड़कर, असाइनमेंट का पुनर्मूल्यांकन संभव नहीं है। मूल्यांकन किए गए असाइनमेंट में आपके द्वारा देखी गई विसंगति को अध्ययन केंद्र के समन्वयक के ध्यान में लाया जाना चाहिए, ताकि उनके द्वारा मुख्यालय में छात्र मूल्यांकन प्रभाग को सही अंक भेज दिया जाए।

यदि आपको लगता है कि आपके ट्यूटर मार्क्ड असाइनमेंट के असाइनमेंट षीट में दर्षाया गया अंक सही रूप से परिलक्षित नहीं हुआ है या आपके ग्रेड कार्ड में दर्ज नहीं किया गया है, तो आपको सलाह दी जाती है कि आप सही ग्रेड के साथ अपने अध्ययन केंद्र के समन्वयक से संपर्क करके उसे मुख्यालय के छात्र मूल्यांकन प्रभाग को भेजने का अनुरोध करें।

असाइनमेंट के साथ–साथ अध्ययन सामग्री या असाइनमेंट के बारे में स्पष्टीकरण, यदि कोई हो, तो उसके लिए कोई संदेह *या घेराव न करें*। अपने संदेह को इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली –110068 में संबंधित स्कूल के निदेशक को एक अलग *कवर* में भेजें। अपना पूरा नामांकन नंबर, नाम, पता, पाठ्यक्रम का शीर्षक और इकाई या असाइनमेंट की संख्या इत्यादि का विवरण अपने पत्र के शीर्ष लिखें।

ट्यूटर मार्क्ड असाइनमेंट (टीएमए) के लिए विशिष्ट निर्देश

1) अपनेप्रतिक्रिया पत्रक के पहले पृष्ठ के शीर्ष दाहिने कोने पर अपनी नामांकन संख्या, नाम, पूरा पता, हस्ताक्षर और दिनांक लिखें।

2) अपनेप्रतिक्रिया पत्रक के पहले पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम कोड, पाठ्यक्रम शीर्षक, असाइनमेंट कोड और अपने अध्ययन केंद्र का नाम लिखें।

पाठ्यक्रम कोड और असाइनमेंट कोड असाइनमेंट से प्राप्त किया जा सकता है।

आपके प्रतिक्रिया पत्रक के पहले पृष्ठ का शीर्ष इस तरह दिखना चाहिएः

---

**नामांकन संख्या :**

**कार्यक्रम शीर्षकः** ..... **नामः** .....

**पाठ्यक्रम कोडः** ..... **पताः** .....

**पाठ्यक्रम शीर्षकः** ..... .....

**असाइनमेंट कोडः** ..... **हस्ताक्षरः** .....

**अध्ययन केंद्रः** ..... **तारीखः** .....

---

3) असाइनमेंट को ध्यान से पढ़ें और यदि असाइनमेंट की विषयवस्तु या उसकी प्रस्तुति के बारे में कोई विशिष्ट निर्देश हों तो उसका पालन करें।

4) उन इकाइयों का अध्ययन करें जिन पर असाइनमेंट आधारित हैं। प्रश्न के संबंध में कुछ बिंदु बनाएँ और फिर उन बिंदुओं को तार्किक क्रम में पुनर्व्यवस्थित करें और अपने उत्तर की एक मोटी रूपरेखा तैयार करें। निबंधात्मक प्रश्न का उत्तर देते समय, परिचय और निष्कर्ष पर पर्याप्त ध्यान दें। परिचय में प्रश्न की एक संक्षिप्त व्याख्या और आप इसे किस तरह समझते हैं, इसपर ध्यान देना चाहिए। निष्कर्ष में आपको प्रश्न के प्रति अपनी प्रतिक्रिया का सारांश देना चाहिए। इसका ध्यान रखें कि उत्तर तार्किक और सुसंगत हो और वाक्य और परिच्छेद के बीच स्पष्ट संबंध हो। उत्तर प्रासंगिक होना चाहिए। सुनिश्चित करें कि आपने प्रश्न में पूछे गए सभी मुख्य बिंदुओं को हल करने का प्रयास किया है। एक बार जब आप अपने उत्तर से संतुष्ट हो जाते हैं, तो अंतिम संस्करण को बड़े करीने से लिखें और उन बिंदुओं को रेखांकित करें जिनपर आप जोर देना चाहते हैं। संख्यात्मक समस्याओं को हल करते समय, उचित प्रारूप का उपयोग करें और जहाँ भी आवश्यक हो, काम के नोट्स लिखें।

5) अपने उत्तर के लिए केवल पूर्ण–स्कैप आकार के कागज का उपयोग करें और सभी पृष्ठों को सावधानी से बाँधें। बहुत पतले कागज का उपयोग न करें। बाईं ओर 4 सेमी का मार्जिन और प्रत्येक उत्तर के बीच में कम से कम 4 लाइनें छोड़ दें। इससे मूल्यांकनकर्ता को उचित स्थानों पर मार्जिन में उपयोगी टिप्पणी लिखने में सुविधा हो सकती है।

6) उत्तर अपने हाथों से लिखें। उत्तर को टाइप या प्रिंट न करें। विश्वविद्यालय द्वारा आपको भेजी गई इकाइयों/खंडों से अपने उत्तर की नकल न करें। यह सलाह दी जाती है कि उत्तर अपने शब्दों में लिखें क्योंकि यह आपकी अध्ययन सामग्री को समझने में मदद करेगा।

7) अन्य छात्रों की प्रतिक्रिया पत्रक से नकल न करें। यदि नकल पकड़ी गई तो असाइनमेंट अस्वीकार कर दिया जाएगा।

8) प्रत्येक असाइनमेंट को अलग से लिखें। सभी असाइनमेंट को निरंतरता में नहीं लिखा जाना चाहिए।

9) प्रत्येक उत्तर के साथ प्रश्न संख्या लिखें।

10) पूरे किए गए असाइनमेंट आपको आवंटित किए गए अध्ययन केंद्र के समन्वयक के पास जमा किया जाना चाहिए। किसी अन्य स्थान पर जमा किए गए टीएमए का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

11) टीएमए जमा करने के बाद, निर्धारित असाइनमेंट प्रेषण–सह–स्वीकृति कार्ड पर समन्वयक से पावती प्राप्त करें।

12) यदि आपने अध्ययन केंद्र में बदलाव के लिए अनुरोध किया है, तो आपको अपना टीएमए केवल मूल अध्ययन केंद्र में जमा करना चाहिए, जब तक कि अध्ययन केंद्र के परिवर्तन को विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित नहीं किया जाता है।

13) यदि आपको लगता है कि आपके असाइनमेंट के मूल्यांकन में कोई तथ्यात्मक त्रुटि है, उदाहरण के लिए यदि आपके असाइनमेंट रेस्पॉन्स के किसी हिस्से का मूल्यांकन नहीं किया गया है या आपके असाइनमेंट रेस्पॉन्स पर दर्ज कुल स्कोर गलत है तो आपको अपने स्टडी सेंटर के कोऑर्डिनेटर से इसे सही करवाकर मुख्यालय को प्रेशित करवाना चाहिए।

## 6.2 सत्रांत परीक्षा

जैसा कि पहले बताया गया है, सत्रांत परीक्षा मूल्यांकन प्रणाली का प्रमुख घटक है और इसका अंतिम परिणाम में 70%महत्त्व होता है।

आपको अंतिम तिथि से पहले सत्रांत परीक्षा फॉर्म ऑनलाइन भरना होगा यानी 31 मार्च को जून की परीक्षा और 30 सितंबर को दिसंबर की परीक्षा के लिए।

विश्वविद्यालय साल में दो बार यानी जून और दिसंबर में सत्रांत परीक्षा आयोजित करता है। आप सत्रांत परीक्षा सिर्फ एक साल के अध्ययन के बाद ले सकते हैं। पहले दूसरे व तीसरे सालों की सत्रांत परीक्षा हर वर्ष के अंत में संचालित की जाएगी। अर्थात् पहले और दूसरे छमाही पाठ्यक्रम की सत्रांत परीक्षा पहले साल के अंत में एक–साथ ली जाएगी। इसी प्रकार, पाठ्यक्रम के दूसरे और तीसरे वर्षों में, तीसरे और चौथे छमाही पाठ्यक्रम की सत्रांत परीक्षा (दूसरे वर्ष की अध्ययन सामग्री कोर्स) व पाँचवें व छठे छमाही पाठ्यक्रम की सत्रांत परीक्षा (तीसरे वर्ष की अध्ययन सामग्री) एक–साथ संचालित की जाएगी। अगर आप कोई भी सत्रांत परीक्षा देने में विफल रहते हैं, तब आप इसे अगले जून या दिसम्बर में दे सकते हैं।

एक शिक्षार्थी को टीईई में निम्नलिखित शर्तों के अधीन उपस्थित होने की अनुमति है :–

- पाठ्यक्रमों के लिए पंजीकरण मान्य और समय वर्जित नहीं है।
- नियत तारीख तक पाठ्यक्रमों में आवश्यक असाइनमेंट जमा कर दिए गए हैं।
- कार्यक्रम के प्रावधान के अनुसार इन पाठ्यक्रमों को आगे बढ़ाने का न्यूनतम समय पूरा हो चुका है।
- उन सभी पाठ्यक्रमों के लिए परीक्षा शुल्क का भुगतान कर दिया गया है जिसमें शिक्षार्थी परीक्षा दे रहा है।

उपरोक्त शर्तों में से किसी एक का भी पालन न करने की स्थिति में, ऐसे सभी पाठ्यक्रमों के परिणाम विश्वविद्यालय द्वारा रोक दिए जा सकते हैं।

यदि आप सत्रांत परीक्षा में पास स्कोर (35% अंक) प्राप्त करने में असफल रहते हैं, तो आपको प्रोग्राम के कुल अवधि यानी छह साल के भीतर उस पाठ्यक्रम के लिए अगले सत्रांत परीक्षा में फिर से बैठना होगा।

### परीक्षा फार्म जमा करना

शिक्षार्थियों को हर बार टीईई में बैठने के लिए परीक्षा फॉर्म भरना होता है यानी हर परीक्षा (जून/दिसंबर) के लिए एक शिक्षार्थी को नए सिरे से आवेदन करना होता है। केवल उन सभी पाठ्यक्रमों के लिए ऑनलाइन फॉर्म जमा किया जाना होता है जिनमें शिक्षार्थी टीईई में बैठने की योजना बनाता है। परीक्षा फॉर्म भरने में विसंगतियों से बचने के लिए और टीईई में उपस्थित होने में कठिनाई से बचने के लिए, आपको निम्नलिखित सलाह दी जाती है :

1) परीक्षा फॉर्म जमा करने की अनुसूची में बदलाव के लिए अध्ययन केंद्र/क्षेत्रीय केंद्र/छात्र मूल्यांकन प्रभाग के संपर्क में रहें।

2) फॉर्म के प्रसंस्करण में अस्वीकृति/देरी से बचने के लिए परीक्षा फॉर्म में दिए गए सभी विवरणों को सावधानीपूर्वक और ठीक से भरें।

3) अपने हॉल टिकट को डाउनलोड करने तक परीक्षा फॉर्म जमा करने का सबूत अपने पास रखें।

### परीक्षा शुल्क और भुगतान की विधि

सत्रांत परीक्षा फॉर्म जमा करने की अनुसूची इग्नू की वेबसाइट पर प्रत्येक सत्र के दौरान उपलब्ध रहती है।

### परीक्षा शुल्क

150/–रु. प्रति सिद्धांत पाठ्यक्रम

150/–रु. प्रति व्यावहारिक पाठ्यक्रम

भुगतान का प्रकार

क्रेडिट कार्ड/डेबिट कार्ड/नेट बैंकिंग

एक बार भुगतान किया गया परीक्षा शुल्क न तो वापस किया जा सकता है और न ही समायोज्य, भले ही शिक्षार्थी परीक्षा में उपस्थित न हो पाए।

### सत्रांत परीक्षा के लिए हॉल टिकट

हॉल टिकट परीक्षार्थियों को नहीं भेजा जाएगा। सत्रांत परीक्षा शुरू होने से 7–10 दिन पहले सभी परीक्षार्थियों के हॉल टिकट विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर अपलोड कर दिए जाते हैं।

छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे अपनी नामांकन संख्या और अध्ययन के कार्यक्रम का नाम दर्ज करने के बाद विश्वविद्यालय के वेबसाइट से हॉल टिकट का प्रिंट आउट ले लें और क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक द्वारा सत्यापित एवं विश्वविद्यालय द्वारा जारी किए गए पहचान पत्र के साथ परीक्षा केंद्र पर रिपोर्ट करें। क्षेत्रीय केंद्र/विश्वविद्यालय द्वारा जारी वैध इग्नू स्टूडेंट आईडी कार्ड के बिना परीक्षार्थियों को परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

टीईई में उपस्थित होने के लिए प्रत्येक छात्र को हॉल टिकट के साथ अपना पहचान पत्र लाना होगा। छात्रों को केवल उन पाठ्यक्रमों के लिए टीईई में उपस्थित होने की अनुमति होगी जिनके लिए उनका पंजीकरण वैध है और अध्ययन की निर्धारित न्यूनतम अवधि पूरी हो गई है। यदि किसी शिक्षार्थी ने विश्वविद्यालय द्वारा जारी किए गए पहचान पत्र को खो दिया है तो परीक्षा शुरू होने से पहले संबंधित क्षेत्रीय केंद्र पर एक डुप्लिकेट पहचान पत्र के लिए आवेदन करना अनिवार्य है। मान्य पहचान पत्र के बिना शिक्षार्थी को परीक्षा केंद्र परिसर में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

## परीक्षा की तिथि

परीक्षा की तिथि (यानी अनुसूची जो प्रत्येक पाठ्यक्रम के लिए परीक्षा की तारीख और समय को इंगित करता है) सभी अध्ययन केंद्रों को एक महीने पहले भेजा जाता है। ये इग्नू समाचार पत्र में छपते हैं और पोस्ट किए जाते हैं। डेटशीट www.ignou.ac.in पर भी प्रदर्षित की जाती है। आपको यह देखने की सलाह दी जाती है कि जिन पाठ्यक्रमों की आप परीक्षा देना चाहते हैं, उनकी परीक्षा की तारीखों में कोई टकराव है या नहीं, यानी आप जिन दो पाठ्यक्रमों की परीक्षा देना चाहते हैं, उनकी परीक्षा एक ही दिन निर्धारित की गई है। यदि ऐसा होता है तो आपको सलाह दी जाती है कि आप एक पाठ्यक्रम के लिए टीईई में बैठें और दूसरे पाठ्यक्रम के लिए अगली टीईई में।

## परिणाम की घोषणा

यह जाँचना आपका कर्तव्य है कि क्या आप पाठ्यक्रम के लिए पंजीकृत हैं और क्या आप उस परीक्षा में बैठने के योग्य हैं। यदि आप बिना पात्रता के परीक्षा देते हैं, तो आपका परिणाम रद्द कर दिया जाएगा।

अगले टीईई के लिए परीक्षा फॉर्म जमा करने की समय सीमा से पहले परिणाम घोषित करने के सभी प्रयास किए जाते हैं। यदि किसी पाठ्यक्रम का परिणाम घोषित नहीं हुआ है, तो आपको परीक्षा शुल्क के बिना उस पाठ्यक्रम के लिए परीक्षा फॉर्म भरना चाहिए। यदि आप उस पाठ्यक्रम के टीईई में बैठते हैं, तो आपको एक डिमांड ड्राफ्ट (इग्नू, नई दिल्ली के पक्ष में देय) भेजना होगा, जिसमें रजिस्ट्रार, छात्र मूल्यांकन विभाग (एसईडी), नई दिल्ली को अपेक्षित राषि दी जाएगी, इसके बिना उस पाठ्यक्रम के परिणाम की घोषणा नहीं की जाएगी।

## परिणाम की जल्द घोषणा

ऐसे शिक्षार्थियों को सुविधा प्रदान करने के लिए जिन्होंने उच्च अध्ययन के लिए प्रवेश प्राप्त किया है या रोजगार के लिए चयनित हुए हैं आदि और एक निर्धारित तिथि तक अंकों/ग्रेड कार्डों का विवरण तैयार करना आवश्यक है, विश्वविद्यालय परिणाम की जल्द घोषणा की सुविधा प्रदान करता है। शिक्षार्थी अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के शीघ्र मूल्यांकन और परिणाम की घोषणा के लिए आवेदन कर सकता है। ऐसे छात्र को निर्धारित प्रारूप (यूनिवर्सिटि वेबसाइट पर उपलब्ध) के साथ शुल्क 1000/– रु. प्रति पाठ्यक्रम के लिए डिमांड ड्राफ्ट के माध्यम से जो इग्नू के पक्ष में नई दिल्ली में देय हो तथा) प्रवेश/रोजगार की पेशकश की सत्यापित फोटोकॉपी प्रस्तुत करना होगा। शिक्षार्थी को टीईई की शुरुआत से पहले परिणाम की घोषणा के लिए अपना अनुरोध प्रस्तुत करना होगा, अर्थात् जून और दिसंबर टीईई के लिए क्रमशः 1 जून या 1 दिसंबर से पहले। ऐसे मामलों में विश्वविद्यालय उत्तर पुस्तिकाओं के शीघ्र मूल्यांकन की व्यवस्था करेगा और विशेष मामले के रूप में परीक्षा के संचालन से संभवतः एक महीने के भीतर परिणाम घोषित करेगा।

## उत्तर पुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन

वे छात्र जो टीईई में प्राप्त अंक/ग्रेड से संतुष्ट नहीं हैं, वे परिणाम घोषित होने की तारीख से एक महीने के भीतर पुनर्मूल्यांकन के लिए निर्धारित फॉर्म में आवेदन कर सकते हैं प्रति पाठ्यक्रम पुनर्मूल्यांकन हेतु 750/–रु. का भुगतान ऑनलाइन करना है। पुनर्मूल्यांकन के बाद अंक/ग्रेड और पहले के अंक/ग्रेड दोनों में से जो बेहतर होगा उसे छात्र के रिकॉर्ड में अपडेट कर दिया जाएगा।

पुनर्मूल्यांकन की अनुमति सिर्फ टीईई के लिए है, न कि व्यावहारिक, परियोजना रिपोर्ट, कार्यषाला, असाइनमेंट, ट्यूटोरियल, सेमिनार, आदि के लिए। इसके लिए नियमों और विनियमों के साथ एक नमूना आवेदन फॉर्म विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

### डिवीजन/क्लास में सुधार

स्नातक कार्यक्रम के छात्र जिन्होंने अपना कार्यक्रम पूरा कर लिया है और टीईई में उपस्थित होकर अपने डिवीजन/क्लास में सुधार करना चाहते हैं उनमें से वे छात्र जिनकी द्वितीय और प्रथम श्रेणी बनने में अधिकतम 2% अंक ही कम हैं सिर्फ वे ही इसके लिए योग्य हैं।

छात्र जून टीईई के लिए 1 से 30 अप्रैल तक और दिसंबर टीईई के लिए 1 से 31 अक्टूबर तक टीईई के शुल्क के साथ निर्धारित फॉर्म में प्रति पाठ्यक्रम निर्धारित शुल्क 750/–रु. के डिमांड ड्राफ्ट जो इग्नू के पक्ष में नई दिल्ली में देय हो, आवेदन कर सकते हैं।

सुधार की अनुमति सिर्फ टीईई के लिए है, न कि व्यावहारिक, परियोजना रिपोर्ट, कार्यषाला, असाइनमेंट, ट्यूटोरियल, सेमिनार, आदि के लिए।

अपने अंकों में सुधार करने के इच्छुक छात्रों को अंक/ग्रेड कार्ड के अंतिम विवरण जारी करने की तारीख से छह महीने के भीतर इस षर्त के अधीन आवेदन करना होगा कि उनका पंजीकरण कार्यक्रम/पाठ्यक्रम के लिए अगले टीईई तक जिसमें वे सुधार के लिए उपस्थित होना चाहते हैं, मान्य है । इस उद्देश्य के लिए नियम और विनियम विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

उत्तर पुस्तिकाओं की फोटोकॉपी प्राप्त करना : परिणाम घोषित होने के बाद, यदि शिक्षार्थी प्राप्त अंकों से संतुष्ट नहीं है, तो वह प्रति पाठ्यक्रम 100/–रु. के भुगतान पर उत्तर पुस्तिकाओं की फोटोकॉपी प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालय से अनुरोध कर सकता है। छात्र द्वारा मूल्यांकित उत्तर पुस्तिकाओं की फोटोकॉपी प्राप्त करने का अनुरोध, छात्र मूल्यांकन प्रभाग, इग्नू, नई दिल्ली को परिणाम की घोषणा की तारीख से 45 दिनों के भीतर निर्धारित प्रारूप में किया जाना चाहिए साथ में प्रति पाठ्यक्रम 100/– रु. का भुगतान ऑनलाइन करना है।

परीक्षाओं के संबंध में विश्वविद्यालय से संवाद करते समय कृपया अपना नामांकन नंबर और पूरा पता स्पष्ट रूप से लिखें। इस तरह के विवरण के अभाव में, हम आपकी समस्याओं का समाधान नहीं कर पाएंगे।

## 7. अन्य उपयोगी जानकारी

### छात्रवृत्ति और शुल्क की वापसी

आरक्षित श्रेणियों अर्थात अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों और विकलांग विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय में प्रवेश के समय अन्य सामान्य श्रेणी के विद्यार्थियों के साथ पूरे शुल्क का भुगतान करना होगा। इग्नू कार्यक्रमों में दाखिला प्राप्त विकलांग श्रेणी के छात्र भारत सरकार की छात्रवृत्ति के पात्र हैं। ऐसे छात्रों को सलाह दी जाती है कि वे अपने–अपने राज्य के समाज कल्याण निदेशालयों या समाज कल्याण अधिकारी के कार्यालय से छात्रवृत्ति के फॉर्म लें और भरे हुए फॉर्म इग्नू के संबद्ध क्षेत्रीय केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक के पास क्षेत्रीय निदेशक द्वारा आवश्यक प्रमाणन के लिए जमा कर दें।

इसी प्रकार कार्यक्रम शुल्क की वापसी के लिए अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के छात्रों को यह सलाह दी जाती है कि वे इग्नू के सम्बद्ध क्षेत्रीय निदेशक के माध्यम से अपने–अपने राज्य के समाज कल्याण निदेशालयों या समाज कल्याण अधिकारी के कार्यालय में जमा कर दें।

**माध्यम में परिवर्तन** की अनुमति प्रथम सेमेस्टर की पाठ्यक्रम सामग्री के पहले सेट की प्राप्ति के 30 दिन के भीतर तक ही है। इसके लिए बीएजी कार्यक्रम 350/–रु. और प्रति 4 क्रेडिट के पाठ्यक्रमों के लिए

350/–रु. और प्रत्येक 6 क्रेडिट के पाठ्यक्रमों के लिए 700/–रु. का भुगतान ''इग्नू'' के पक्ष में संबंधित क्षेत्रीय केंद्र के शहर में देय डिमांड ड्राफ्ट द्वारा करना होगा। माध्यम में परिवर्तन के लिए आवेदन पत्र समय–सारणी के अनुसार केवल संबंधित क्षेत्रीय केंद्र को भेजें।

### पते में परिवर्तन या सुधार

पते/नाम में परिवर्तन/सुधार के लिए एक मुद्रित फॉर्म है। स्टूडेंट जोन के तहत विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उसकी प्रति ऑनलाइन उपलब्ध है। यदि आपके पते में कोई सुधार या परिवर्तन कराना है, तो आपको रजिस्ट्रार एसआरडी (संबंधित क्षेत्रीय निदेशक के माध्यम से) को संबोधित उस प्रपत्र का उपयोग करने के लिए निर्देशित किया जाता है। आपको सलाह दी जाती है कि इस संबंध में विश्वविद्यालय के किसी अन्य अधिकारी को पत्र न लिखें। आम तौर पर, परिवर्तन में चार से छह सप्ताह लगते हैं। इसलिए, आपको इस अवधि के दौरान बदले हुए पते पर मेल को पुनर्निर्देशित करने के लिए अपनी व्यवस्था करने की सलाह दी जाती है।

### अध्ययन केंद्र में परिवर्तन

एक छात्र को केवल ऐसे अध्ययन केंद्रों को चुनने की आवश्यकता होती है जो कार्यक्रम के लिए सक्रिय हैं। जहाँ तक संभव हो विश्वविद्यालय छात्र द्वारा चुने गए अध्ययन केंद्र को आवंटित करता है। हालाँकि, विश्वविद्यालय किसी भी समय छात्र की सहमति के बिना अध्ययन केंद्र को अपनी सुविधानुसार बदल सकता है।

अध्ययन केंद्र में परिवर्तन के लिए, आपको अपने क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक को एक अनुरोध भेजना होगा। इसकी एक प्रति मुख्यालय में छात्र मूल्यांकन प्रभाग को भेजी जा सकती है।

किसी कार्यक्रम के लिए परामर्श की सुविधा सभी केंद्रों पर उपलब्ध नहीं हो सकती है। इसलिए, आपको यह सुनिश्चित करने की सलाह दी जाती है कि आपके द्वारा चुने गए नए केंद्र पर आपके कार्यक्रम के लिए काउंसलिंग की सुविधा उपलब्ध है। जहाँ तक संभव होता है, स्टडी सेंटर के बदलाव के अनुरोध को मान लिया जाता है। हालाँकि, एक नए अध्ययन केंद्र का आवंटन नए केंद्र में कार्यक्रम के लिए सीटों की उपलब्धता पर निर्भर करता है।

### क्षेत्रीय केंद्र में परिवर्तन

यदि आप एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण करना चाहते हैं, तो आपको अपना आवेदन क्षेत्रीय केंद्र में स्थानांतरित करने के लिए स्थानांतरण प्रति के साथ उस क्षेत्रीय केंद्र में भेजना होगा जहाँ आप स्थानांतण चाहते हैं। इसके अलावा, आपको अध्ययन केंद्र के समन्वयक से एक प्रमाण पत्र प्राप्त करना होगा जहाँ से आप जमा किए गए असाइनमेंट की संख्या के बारे में स्थानांतरण चाहते हैं। क्षेत्रीय निदेशक, जहाँ से शिक्षार्थी स्थानांतरण चाह रहा है, रजिस्ट्रार, छात्र पंजीकरण प्रभाग (त्व) और शिक्षार्थी को सूचना के तहत नए क्षेत्रीय केंद्र को शुल्क भुगतान के विवरण सहित सभी रिकॉर्ड स्थानांतरित कर देगा। मनोविज्ञान जैसे **व्यावहारिक** उन्मुख पाठ्यक्रमों में क्षेत्र के परिवर्तन के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र 'संबंधित क्षेत्रीय केंद्र/अध्ययन केंद्र से प्राप्त करना होगा जहाँ आप स्थानांतरण करना चाहते हैं। यदि कोई भी शिक्षार्थी सेना/नौसेना/वायु सेना के क्षेत्रीय केंद्र से विश्वविद्यालय के किसी अन्य क्षेत्रीय केंद्र सत्र के दौरान स्थानांतरण के लिए उत्सुक है, तो उसे क्षेत्रीय केंद्र को शुल्क–षेयर राषि का भुगतान करना होगा। यदि शिक्षार्थी सत्र/ चक्र की शुरुआत में स्थानांतरण चाहता है, तो सत्र/चक्र के लिए आवश्यक कार्यक्रम पाठ्यक्रम शुल्क क्षेत्रीय केंद्र में जमा किया जाएगा। हालाँकि, स्थानांतरण जहाँ भी लागू हो सीटों की उपलब्धता पर निर्भर करेगा।

## डुप्लीकेट ग्रेड कार्ड/मार्क षीट जारी करना

निर्धारित फॉर्म पर एक अनुरोध के साथ इग्नू, नई दिल्ली के पक्ष में देय 200/–रु. का ड्राफ्ट जमा करने के बाद डुप्लिकेट ग्रेड कार्ड जारी किया जाता है। प्रयोजन के लिए फॉर्म इग्नू की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

## डुप्लिकेट डिग्री प्रमाण पत्र जारी करना

निर्धारित फॉर्म पर एक अनुरोध के साथ इग्नू, नई दिल्ली के पक्ष में देय **750/**–रु. का ड्राफ्ट जमा करने के बाद डुप्लिकेट डिग्री प्रमाण पत्र जारी किया जा सकता है। अनुरोध के साथ निम्नलिखित दस्तावेजों को संलग्न करना आवश्यक है :

1) **10/**–रु. के गैर–न्यायिक स्टांप पेपर पर शपथ–पत्र

**2**) डिग्री प्रमाणपत्र के खोने के बारे में पुलिस थाने में दर्ज एफआईआर की प्रति

**3**) आवश्यक शुल्क का डिमांड ड्राफ्ट/आईपीओ

इसके लिए प्रपत्र और प्रारूप कार्यक्रम गाइड में दिए गए हैं।

## पुनः प्रवेश

यदि आप अधिकतम 6 वर्षों में कार्यक्रम पूरा करने में सक्षम नहीं होते हैं, तो विश्वविद्यालय ने फिर से प्रवेश के लिए एक विशेष प्रावधान किया है। आपको पुनः प्रवेश के लिए निम्नलिखित दो कदम उठाने होंगे :

क) प्रवेश मानदंड को पूरा करके और कार्यक्रम के लिए अपेक्षित शुल्क का भुगतान करके अन्य छात्रों की तरह कार्यक्रम में प्रवेश लें।

लागू शुल्क के साथ पुराने नामांकन के तहत आपके द्वारा अर्जित क्रेडिट के हस्तांतरण के लिए विश्वविद्यालय में आवेदन करें।

पूर्ण क्रेडिट स्थानांतरण की अनुमति दी जा सकती है यदि पाठ्यक्रम और पद्धति अभी भी प्रचलन में हैं, जो पुराने नामांकन के तहत था।

## एक से ज्यादा पंजीकरण

एक शिक्षार्थी को दिए गए शैक्षणिक सत्र में केवल एक कार्यक्रम के लिए पंजीकरण करने की अनुमति है। इसलिए, आपको दिए गए शैक्षणिक सत्र में केवल एक कार्यक्रम में प्रवेश लेने की सलाह दी जाती है। हालाँकि, आपको अन्य कार्यक्रमों के साथ 6 महीने की अवधि के'प्रमाणपत्र कार्यक्रम' में प्रवेश लेने की अनुमति है। इस नियम के उल्लंघन के परिणामस्वरूप सभी कार्यक्रमों में प्रवेश रद्द कर दिया जाएगा और कार्यक्रम की फीस काट ली जाएगी।

## प्रवास प्रमाण पत्र

प्रवास प्रमाण पत्र के लिए अनुरोध निम्नलिखित दस्तावेजों के साथ क्षेत्रीय निदेशक को भेजा जा सकता है:

1) आवेदन (इग्नू की वेबसाइट से प्राप्त किया जा सकता है)

2) मार्कशीट की सत्यापित प्रति

3) इग्नू के पक्ष में 500/–रु. का शुल्क डिमांड ड्राफ्ट के रूप में उस शहर में देय जहाँ क्षेत्रीय केंद्र स्थित है।

## फीस की वापसी

फीस वापसी का अनुरोध निम्नानुसार माना जाएगा :

ए. प्रवेश फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि से पहले कार्यक्रम शुल्क 200/–रु. की कटौती के बाद वापस किया जाएगा।

बी. प्रवेश फॉर्म–कार्यक्रम शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि से 15 दिनों के भीतर 500/–रु. की कटौती के बाद वापस कर दिया जाएगा।

सी. प्रवेश फॉर्म–कार्यक्रम शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि से 30 दिनों के भीतर 1000/–रु. की कटौती के बाद वापस कर दिया जाएगा।

डी. अंतिम तिथि की समाप्ति के 30 दिनों के बाद कोई धनवापसी की अनुमति नहीं दी जाएगी।

ई. प्रवेश फॉर्म जमा करने की अंतिम तारीखों को अलग–अलग माना जाएगा, यानी बिना लेट फीस के आखिरी तारीख और लेट फीस के साथ आखिरी तारीख। हालाँकि, विलंब शुल्क, यदि कोई हो, तो वापस नहीं किया जाएगा।

एफ. उपरोक्त (ए) से (सी) के मामलों में, उम्मीदवार ऐसे धनवापसी के लिए संबंधित क्षेत्रीय निदेशक (आरडी) को एक लिखित अनुरोध करेंगे। क्षेत्रीय केंद्र (आरसी) इग्नू खातों में इसके क्रेडिट का पता लगाने के बाद जितनी जल्दी हो सके मामलों पर कार्रवाई करेगा।

## विश्वविद्यालय में प्रवेश और अन्य मामलों में विवाद

मुकदमा दाखिल करने के लिए अधिकार क्षेत्र का स्थान, यदि आवश्यक हो, तो केवल नई दिल्ली/दल्ली में होगा।

विश्वविद्यालय के अधिकांश संचालन ऑनलाइन हैं। विश्वविद्यालय ने अपनी वेबसाइट पर विभिन्न एप्लिकेशन फॉर्म उपलब्ध कराए हैं। जहाँ भी आपको हार्ड कॉपी जमा करने की आवश्यकता होती है, इन प्रपत्रों को विश्वविद्यालय की वेबसाइट के विद्यार्थी क्षेत्र (student zone) से डाउनलोड करें।

## कुछ उपयोगी पते

अपने अध्ययन के दौरान आपको नियमों और साथ ही इग्नू में अपनी पढ़ाई पूरी करने में कुछ मुद्दों को कैसे हल किया जाए के बारे में कुछ अतिरिक्त जानकारी की आवश्यकता हो सकती है। आपको पता होना चाहिए कि विशिष्ट जानकारी के लिए किससे संपर्क करें। विशिष्ट जानकारी या समस्या के समाधान के लिए विश्वविद्यालय में कार्यालयों के पते और संपर्क नंबर और ईमेल की एक सूची यहाँ दी गई है।

| | | |
|---|---|---|
| 1 | पहचान पत्र, शुल्क प्राप्ति रशीद, मूल प्रमाण पत्र, प्रवास प्रमाण पत्र, छत्रवृत्ति फॉर्म | संबंधित क्षेत्रीय केंद्र |
| 2 | अध्ययन सामग्री न मिलने पर | सामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग |
| 3 | परीक्षा फॉर्म, प्रवेश परीक्षा, तिथि पत्रक, इग्नू हॉल टिकट की अनुसूची/सूचना | उप–कुलसचिव, परीक्षा–III, वि.मू प्रभाग ब्लाक–12, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068, ई. मेल:evaluationsed@ignou.ac.in फोन 29536743, 29535924-32 / एक्स-2202, 2209 |

| | | |
|---|---|---|
| 4 | परीक्षा परिणाम, पुनः जाँच, ग्रेड कार्ड, अस्थायी (अंनतिम)प्रमाणपत्र, परीक्षाफल की समयपूर्व क्तेशणा, ट्रांस्क्रिप्ट | उप–कुलसचिव, परीक्षा–III, वि.मू प्रभाग ब्लाक–12, इग्नू,मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110068, ई.मेलःsedgrievance@ignou.ac.in फोन 29536103,29535924-32/एक्स -2201, 2211, 1316 |
| 5 | सत्रीय कार्यों के ग्रेड/अंकों का अंकसूची में न जुड़ना | उप कुलसचिव, (सत्रीय कार्य)वि.मू. प्रभाग, ब्लॉक 3, इग्नू, मैदान गढ़ी,नई दिल्ली –110068, ई.मेलः assignments@ignou.ac.in फोन 29535924, एक्स-1312, 1319, 1325 |
| 6 | मूल डिग्री/डिप्लोमा, डिग्री/डिप्लोमा का सत्यापन | सहा. कुलसचिव (परीक्षा– I), वि.मू. प्रभाग, ब्लॉक–9, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली– 110068, ई मेलःevaluationsed@ignou.ac.inफोनः Ph.29535438, 29535924-32/एक्स-2224, 2213 |
| 7 | मूल्यांकन से संबंधित विद्यार्थी की शिकायत | सहा. कुलसचिव (विद्यार्थी शिकायत), वि.मू.प्र.,खंड–3, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–68, ई मेलः sedgrievance@ignou.ac.in फोनः 29532294, 29535924-32/एक्स-1313 |
| 8 | शैक्षिक विषयवस्तु | संबंधित विद्यापीठ का निदेशक |
| 9 | विद्यार्थी सहायता सेवाएँ और विद्यार्थियों की शिकायतें, इग्नू के विभिन्न पाठ्यक्रमों की प्रवेश पूर्व पूछताछ | निदेशक, विद्यार्थी सहायता केंद्र, इग्नू, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली– 110068, ई मेलः ssc@ignou.ac.in फोन नं. 29535714, 29533869, 2953380 फैक्स-29533129 |

# भाग 2

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

# DETAILS OF CORE COURSES

A) LANGUAGES

## हिंदी

### हिंदी भाषा : विविध प्रयोग (BHDLA 135) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा के विविध प्रयोगों की जानकारी दी जाएगी। विविध विषयों के अंतर्गत विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला आदि क्षेत्रों की भाषा के स्वरूप और विशेषताओं का ज्ञान, विषयानुकूल पारिभाषिक शब्द–अर्थ और निर्माण के सिद्धांतों का परिचय, भाषा बोध और अभिव्यक्ति का विकास; विषय प्रतिपादन की क्षमता का विकास आदि का अध्ययन कराया जाएगा। पाठ्यक्रम में विविध विषयों की भाषा के स्वरूप, लक्षण, अभिव्यक्ति की शैली, पारिभाषिक शब्द आदि की भी जानकारी दी जाएगी। इसके साथ ही विधि एवं प्रशासनिक भाषा; स्वरूप और लक्षण; औपचारिक लेखन; प्रारूपों के स्वरूप का अध्ययन भी कराया जाएगा।

### हिंदी भाषा : लेखन कौशल (BHDLA 136) 6 credits

इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा का अध्ययन कराया जाएगा। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में लेखन कौशल को बढ़ावा देना है। यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में लेखन कौशल से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

शब्द और मुहावरे; संवाद शैली; सरकारी पत्राचार तथा टिप्पण और प्रारूपण; समाचार लेखन और संपादकीय; अनुवाद; संक्षेपण, भाव पल्लवन और निबंध लेखन; प्रभावी लेखन; रचना (कंपोजिशन की तैयारी); पुनर्रचना (संक्षेपण, भाव पल्लवन आदि); वर्णनात्मक लेखन (Descriptive Writing); आख्यानपरक लेखन (Narrative Writing); तार्किक लेखन (Expository Writing).

### हिंदी भाषा : संप्रेषण कौशल (BHDLA 137) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इसमें निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

**हिंदी भाषा और संप्रेषण कौशल**

1) संप्रेषण के मूल तत्व
2) भाषा के संदर्भ में उच्चरित और लिखित संप्रेषण के तत्व
3) आंगिक भाषा और संप्रेषण
4) संप्रेषण के विविध रूप : साक्षात्कार, भाषण, संवाद आदि
5) भाषिक कला के विभिन्न पक्ष
6) संवाद कला के विभिन्न पक्ष

**लिखित संप्रेषण**

1) पत्र लेखन
2) संचार के लिए लेखन–मीडिया के लिए लेखन
3) कार्यालयी लेखन–रिपोर्ट, कार्यवृत्त आदि

4) सर्जनात्मक लेखन : फीचर, निबंध,कहानी आदि

5) सृजनात्मक लेखन : संस्मरण, डायरी, यात्रा वृत्तांत आदि

6) जनसंचार के लिए लेखन : वार्ता, रेडियो वार्तालाप, समाचार, आदि।

## हिंदी साहित्य : विविध विधाएं (BHDLA 138) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

साहित्य का आस्वादन : कहानी : पूस की रात (प्रेमचंद), व्यंग्य निबंध : वैष्णव की फिसलन (हरिशंकर परसाई), एकांकी : बहुत बड़ा सवाल (मोहन राकेश), निबंध : जीने की कला (महादेवी वर्मा ), आत्मकथा : जूठन (ओमप्रकाश वाल्मीकि), कविताएं। साहित्य : विविध विधाएं : डायरी, पत्र, रिपोर्ताज, यात्रा वृत्तांत, जीवनी/रेखाचित्र, संस्मरण।

# ENGLISH

## English in Daily Life (BEGLA 135) 6 credits

This is a programme designed specially for learners who are at an 'intermediate level' of English. It is meant for those of you who already have some basic skills in the language and are now ready to acquire greater proficiency in it. The Course aims to improve your command over the English language by giving you extensive practice in reading, writing, speaking and listening. We have used a wide variety of text types to make you fluent in the use of everyday English. Our selections (both for reading and listening) deal with issues of contemporary relevance and include topics such as greetings and introductions, travel, health and fitness, the workplace, social values (class, caste, gender, peace, etc.) and the future. By drawing examples from day to day life and by involving issues that concern all thinking people, this course aims not only to raise your social awareness but also to give you command over the language to express your ideas and concerns.

## English at the Workplace (BEGLA 136) 6 credits

This course has been designed for students across different disciplines in order to develop their English skills required at the workplace. We have primarily concentrated on first time job seekers since most of you will be searching for your first job. The course is divided into four blocks and deals with exploring the job market, preparing for job interviews, understanding cross-cultural interaction in business contexts and learning about customers and customer service. It also gives you practice in participating in discussions, making presentations, writing business letters and emails. Business ethics is an important part of this course.

## Language through Literature (BEGLA 137) 6 credits

Language Through Literature (6 credits) is aimed at providing a lucid account of how even the most common elements of language are used dexterously and aesthetically in literature/oratory to please, to entertain, to persuade, to gratify and to create aesthetic appeal. As a matter of fact literature is nothing but a creative and imaginative use of language. This course will enable you to not only understand the various and dynamic ways in which writers/orators use language but also comprehend and appreciate literary/rhetorical pieces better and derive greater pleasure from them. This course will primarily deal with literal versus metaphorical meaning, literary and rhetorical devices, and an understanding of the development of discourse.

## Reading and Speaking Skills (BEGLA 138) 6 credits

Reading and Speaking Skills is a 6 credits course. The focus of this course is to understand the reading process and improve our reading strategies. Various types of texts will be discussed i.e. expository, descriptive, narrative, argumentative and persuasive. The highlight of the speaking skills would be various contexts of conversation, formal, informal and telephone conversation. Other speaking activities such as stories, dialogues, debates, discussions, meetings and presentations will be practiced. In this course we would also highlight pronunciation.

## संस्कृत

### संस्कृत भाषा और साहित्य (BSKLA 135) 6 credits

आधुनिक भारतीय भाषा का यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में चार खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है -

**खण्ड 1 -** संस्कृत भाषा की प्रकृति और स्वरूप

**खण्ड 2 -** संस्कृत वाचन और विविध विषय

**खण्ड 3 -** साहित्य का आस्वादन

**खण्ड 4 -** व्यावहारिक संस्कृत

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् आप वर्णों के उच्चारण, पद, लिंग, पुरुष, वचन, धातुरूप, शब्दरूप आदि की प्रक्रिया से परिचित होंगे। आप संस्कृति, सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान के विषयों पर आधारित पाठ्यक्रम द्वारा भारतीय संस्कृति एवं आयुर्वेद के मूलभूत स्वरूप को जान सकेंगे। पद्यकाव्य, गद्यकाव्य एवं कथा-साहित्य के अध्ययन द्वारा आप संस्कृत साहित्य के प्रमुख ग्रन्थों कुमारसम्भव, शुकनासोपदेश तथा हितोपदेश का अध्ययन करेंगे तथा इन ग्रन्थों से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर, अनुवाद एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे। व्यावहारिक संस्कृत खण्ड का अध्ययन करने के पश्चात् आप पत्रलेखन, समाचार-लेखन, संक्षेपण, निबन्ध-लेखन जैसी विविध विधाओं से परिचित होंगे।

## اردو (उर्दू)

**Study of Modern Urdu Prose and Poetry (BUDLA 135)** **6 credits**

### جدید اردو نثر اور جدید اردو شاعری کا مطالعہ

بی ۔ ا ے 1st سمیسٹر: کے کورس **BUDLA 135** جدید اردو نثر اور جدید اردو شاعری کا مطا لعہ" کی تفصیلا ت درج ذیل ہیں۔ یہ کورس 6 کر یڈٹ کا ہے اس کے 2 بلا ک اور 15 ۱کائیا ں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Jadeed Urdu Nasr**
**Block 2. Jadeed Urdu Shairi**

**بلاک1۔ جدید اردو نثر**

1۔ جد ید اردو نثرکا ارتقاء
2۔ سر سید احمد خاں کی مضمون نگاری اور"امید کی خوشی"
3۔ ابوالکلام آزاد کی انشائیہ نگاری اور"چڑیا چڑے کی کہانی"
4 پریم چند کی افسانہ نگاری اور"شطرنج کے کھلا ڑی"
5۔ رشید احمد صدیقی کی مزاح نگاری اور"چارپائی"
6 الطاف حسین حالی کی سوانح نگاری اور" یاد گارِ غالب"

**بلاک2۔ جدید اردو شاعری**

7۔ جدید اردوشاعری کا ارتقا

8۔ حسرت موہانی کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

9۔ فانی بدایونی کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

10۔ علامہ اقبال کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

11۔ فراق گورکھپوری کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

12۔ جوش ملیح آبادی کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

13۔ فیض احمد فیض کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

14۔ اسرار الحق مجا زکی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

15۔ علی سردار جعفری کی شاعری اور منتخب کلام کا تجزیہ

## B) DISCIPLINES

## मानवविज्ञान

### मानवविज्ञान और अनुसंधान विधियाँ (BANC 131) 6 credits

मानवविज्ञान, मानवजाति की जैविक और सांस्कृतिक विविधता के साथ से संबंधित है। मानवविज्ञानी, वैज्ञानिक और मानववादी दोनों दृष्टिकोणों से मानव जाति के सभी पहलुओं की जांच करते हैं। मानवविज्ञान अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य एक गहरी और समृद्ध समझ का निर्माण करना है कि हम मानव के रूप में कौन हैं, हम कैसे विकसित हुए हैं और हम ऐसे क्यों हैं। यह पाठ्यक्रम मानवविज्ञान और अनुसंधान विधियों के क्षेत्र का एक परिचय है। पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों के लिए इस प्रकार डिजाइन किया गया है ताकि वे मानव विज्ञान या विभिन्न संबंधित क्षेत्रों में क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) या शोध करने के लिए तैयार हो सकें।

**पाठ्यक्रम (कोर्स) विवरणः** यह छह क्रेडिट का पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम को चार खंडों (ब्लॉकों) में विभाजित किया गया है। पहला खंड (ब्लॉक) शिक्षार्थियों को मानवविज्ञान की प्रकृति के साथ बुनियादी समझ प्रदान करेगा। दूसरा खंड (ब्लॉक) एक विषय के रूप में मानवविज्ञान की उत्पत्ति और विकास से संबंधित है। तीसरा खंड मानव विज्ञान में विभिन्न शाखाओं के विकास की जांच करता है। चौथा खंड (ब्लॉक) मानवविज्ञान में क्षेत्र–अनुसंधान विधियों के एक बुनियादी उपकरणों के साथ व्यावहारिक अनुभव प्रदान करता है जो सीखने वालों को स्वयं की अनुसंधान परियोजना की योजना बनाने और निष्पादित करने के लिए एक आधार प्रदान करता है।

**पाठ्यक्रम वांछनीयताः** एस.ओ.एस.एस के बी.ए सामान्य कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी पहली छमाही में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सत्रीय–कार्य (असाइनमेंट) और सत्रांत–परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

### पाठ्यक्रम संरचना

**सिद्धांत** **(थियरी) क्रेडिट–6**

**खंड 1 मानवविज्ञान की समझ**

इकाई 1 परिभाषा, कार्यक्षेत्र और मानवविज्ञान का महत्व

इकाई 2 मानवविज्ञान की शाखाएं

इकाई 3 संबद्ध क्षेत्रों के साथ मानवविज्ञान का संबंध

**खंड 2 मानव विज्ञान का उद्‌भव और विकास**

इकाई 4 मानवविज्ञान का इतिहास एवं विकास

इकाई 5 भारत में मानवविज्ञान

इकाई 6 मानवविज्ञान में क्षेत्रीयकार्य परंपरा

**खंड 3 मानवविज्ञान के मुख्य क्षेत्र**

इकाई 7 जैविक मानवविज्ञान की अवधारणाएं एवं विकास

इकाई 8 सामाजिक मानवविज्ञान की अवधारणाएं एवं विकास

इकाई 9 पुरातत्व मानवविज्ञान में अवधारणाएं एवं विकास

**खंड 4 अनुसंधान विधि एवं तकनीक**

इकाई 10 मानवशास्त्रीय अनुसंधान के दृष्टिकोण

इकाई 11 विधियाँ, उपकरण और तकनीकें

इकाई 12 अनुसंधान अभिकल्प (डिजाइन)

## जैविक मानवविज्ञान के मूल सिद्धांत (BANC 132) 6 credits

जैविक मानवविज्ञान मानव विकास, जैविक विविधताओं और अनुकूलन का अध्ययन करता है। जैविक–मानवविज्ञान का उप–अनुशासन मानव उत्पत्ति का अध्ययन करने के लिए उद्विकासवादी दृष्टिकोण का प्रयोग करता है, यह मानव की जैविक विविधताओं के लिए आनुवंशिक और पर्यावरणीय आधार की व्याख्या करता है। यह गणों(प्राइमेट्स) के व्यवहारिक आनुवंशिक घटकों की भी जांच करता है और जीवाश्म अभिलेखों को पुनःनिर्मित करने की कोशिश करता है। जैविक मानवविज्ञान, जिसे भौतिक मानवविज्ञान के रूप में भी जाना जाता है, एक अत्यंत विविधता का क्षेत्र है जिसमें जैविक रूप से उन्मुख विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला है जिनमें आनुवांशिकी, उद्विकासवादी जीवविज्ञान, पोशण, शारीरिक अनुकूलन, वृद्धि और विकास जैसे विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है।

**पाठ्यक्रम विवरण :** यह पाठ्यक्रम व्यापक रूप में जैविक–मानवविज्ञान के अनुशासन का परिचय प्रस्तुत करता है। पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित किया गया है, जिसमें पहला खंड जैविक मानवविज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों, इसके उप–क्षेत्रों, संबंधों, अनुप्रयोगों और दृष्टिकोणों से जुड़े विषयों को शामिल करता है। दूसरा खंड दुनिया की प्रमुख प्रजातियों में विभिन्न परिवर्तन, मानव विकास की अवधारणा और सिद्धांतों पर जोर देता है। जबकि तीसरा खंड प्राइमेट्स और नॉन–प्राइमेट्स का तुलनात्मक अध्ययन प्रदान करता है। अंतिम और चौथे खंड में मानव वृद्धि एवं विकास, मानव आनुवंशिकी और मानव पारिस्थितिकी सहित जैविक मानवविज्ञान के प्रमुख दृष्टिकोणों का एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है। यह पाठ्यक्रम मानव विकास के मूल सिद्धांतों, जीवित प्राइमेट और दुनिया की प्रमुख प्रजातियों के वर्गीकरण सहित जैविक मानवविज्ञान के उप–क्षेत्रों की एक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि का विकास विद्यार्थियों में करेगा। विद्यार्थियों को यह भी पता चलेगा कि आधुनिक मनुष्यों को मानवीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से कैसे आकार दिया जाता है। इसके अतरिक्त यह पाठ्यक्रम अन्य जीवित प्राइमेट्स के संदर्भ में मनुष्यों की विशिष्टता को समझाने में भी छात्रों की मदद करेगा।

**पाठ्यक्रम वांछनीयता:** एस.ओ.एस.एस (SOSS) के बी.ए सामान्य कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी दूसरी छमाही में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सत्रीय–कार्य (असाइनमेंट) और सत्रांत–परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

## पाठ्यक्रम संरचना

**सिद्धांत** **(थियरी) क्रेडिट–6**

**खंड 1 जैवकीय मानवविज्ञान का परिचय**

इकाई 1 जैविक मानवविज्ञान का परिचय

इकाई 2 जैविक मानवविज्ञान के उपक्षेत्र

इकाई 3 पारंपरिक एवं आधुनिक जैविक मानवविज्ञान के दृष्टिकोण

इकाई 4 जैविक मानवविज्ञान के संबंध और अनुप्रयोग

इकाई 5 जैविक मानवविज्ञान में समकालीन कार्यक्षेत्र

**खंड 2 मानव उद्विकास एवं विविधताएं**

इकाई 6 जैविक उद्विकास के सिद्धांत

इकाई 7 उद्विकास की मूल अवधारणा

इकाई 8 विश्व की प्रमुख प्रजातियां और मुख्य प्रजातियों का सीमांकन

इकाई 9 प्रजातियों के मानदंड और वर्गीकरण

**खंड 3 अजीवित प्राइमेट : मानव एवं गैर–मानव**

इकाई 10 जीवित प्राइमेट का वर्गीकरण एवं अभिलक्षण

इकाई 11 मानव और गैर–मानव प्राइमेट्स की तुलनात्मक शरीर–रचना

इकाई 12 मानवीकरण की प्रक्रिया

**खंड 4 जैविक मानवविज्ञान के दृष्टिकोण**

इकाई 13 मानव वृद्धि एवं विकास

इकाई 14 मानव आनुवंशिकी

इकाई 15 मानव पारिस्थितिकी

## सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान के मूलतत्व (BANC 133) 6 credits

सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान, मानव के समाज और संस्कृति के अध्ययन से संबंधित है। इस विषय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान निष्पक्ष और विषयगत दोनों रूप से अपने उद्देश्य व महत्व को पेश करते हुए पक्षपात और पूर्वाग्रहों से दूर, दुनिया भर के विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को समझने में रहा है। पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को समग्र रूप से सामाजिक संस्थाओं और मानवीय समाज का निर्माण करने वाली सांस्कृतिक विशेषताओं को समझाना है।

**पाठ्यक्रम विवरण:** यह पाठ्यक्रम (कोर्स) छह क्रेडिट का है। पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित किया गया है। पहला खंड सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान की बुनियादी समझ के साथ वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में इसके उद्भव को शिक्षार्थियों को परिचित कराता है। दूसरा खंड समाज और संस्कृति, सामाजिक समूहों की अवधारणाओं के रूपों और प्रक्रियाओं के अध्ययन से संबंधित है जिसमें सामाजिक संस्थाएं, नातेदारी, विवाह और परिवार की अवधारणाएं, धार्मिक विचारों और अनुष्ठान प्रथाओं, आवश्यकता का उत्पादन, उपभोग और विनिमय शामिल है। तीसरा खंड, समाज और संस्कृति के सिद्धांतों और दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करता है जिनमें कुछ प्रचलित और समाप्त हो चुकी प्रथाओं के अध्ययन से जुड़ा हैं। चौथे खंड में शिक्षार्थियों को मानवविज्ञान की विशेष परंपरा, क्षेत्र–अध्ययन और क्षेत्रीयकार्य परंपरा से परिचय कराया गया है। क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) का संचालन करने की बारीकियाँ, उपकरण और तकनीकें जिनका उपयोग क्षेत्र(फील्ड) में तथ्य एकत्र करने, रिपोर्ट को संकलित करने, विश्लेषण करने और लिखने के लिए किया जाता है, पर गहराई से चर्चा की जाएगी है।

**पाठ्यक्रम वांछनीयता :** एस.ओ.एस.एस के बी.ए सामान्य कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी तीसरी छमाही में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सत्रीय–कार्य (असाइनमेंट) और सत्रांत–परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

## पाठ्यक्रम संरचना

**सिद्धांत** **(थियरी) क्रेडिट–6**

**खंड 1 विषय क्षेत्र एवं प्रकृति**

इकाई 1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानः अर्थ, क्षेत्र और प्रासंगिकता

इकाई 2 इतिहास एवं विकास

इकाई 3 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का मानवविज्ञान की अन्य शाखाओं एवं अन्य अनुशासन से संबंध

**खंड 2 आधारभूत अवधारणाएं**

इकाई 4 समाज

इकाई 5 संस्कृति

इकाई 6 संस्थान : नातेदारी,परिवार,विवाह

इकाई 7 संस्थान ।। :आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक

इकाई 8 जेंडर एवं समाज

**खंड 3 सैद्धांतिक परिपेक्ष्य**

इकाई 9 शास्त्रीय(क्लॉसिकल) सिद्धांत

इकाई 10 संरचना एवं प्रकार्य के सिद्धांत

इकाई 11 समकालीन सिद्धांत

**खंड 4 क्षेत्रीय कार्य**

इकाई 12 क्षेत्रीयकार्य परंपरा का इतिहास

इकाई 13 क्षेत्रकार्य व्यवहार

इकाई 14 पद्धति एवं प्रविधियां

## पुरातात्विक मानवविज्ञान के मूलतत्व (BANC 134) 6 credits

पुरातात्विक मानवविज्ञान, मानव विज्ञान की मुख्य शाखाओं में से एक है जो लिपि के आविष्कार से पहले मानव जाति की उत्पत्ति और विकास से संबंधित है। यह शाखा वैज्ञानिक कार्यप्रणाली को लागू करके सामग्री, उपकरण, हथियार, कपड़े, गहने और घरों के माध्यम से पूर्व के मानव व्यवहार और सांस्कृतिक–पैटर्न का पुनर्निर्माण, वर्णन और व्याख्या करती है।

**पाठ्यक्रम विवरणः** यह पाठ्यक्रम तीन खंडों का है। पहला खंड पुरातात्विक मानवविज्ञान की परिभाषा और व्यापकता से संबंधित है जिसके अंतर्गत पुरातात्विक मानवविज्ञान का अध्ययन करने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा की गई है। दूसरा खंड मुख्य रूप से प्रागैतिहास में सेनोजोइक युग के महत्व सहित विभिन्न डेटिंग विधियों पर केंद्रित है। तीसरा और आखिरी खंड शिक्षार्थियों को विभिन्न प्रागैतिहासिक सांस्कृतिक अवधियों को प्रकट करता है और उन उपकरणों और तकनीकों को समझने में सहायता करता है जो प्रागैतिहासिक व्यक्तियों द्वारा उपयोग किए गए थे। इसके अतिरिक्त दुनिया भर में संस्कृतियों के विभिन्न साक्ष्यों पर भी चर्चा की जाती है।।

**पाठ्यक्रम वांछनीयता :** एस.ओ.एस.एस के बी.ए सामान्य कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी चौथी छमाही में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सत्रीय–कार्य (असाइनमेंट) और सत्रांत–परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

## पाठ्यक्रम संरचना

**सिद्धांत** **(थियरी) क्रेडिट–6**

**खंड 1 पुरातत्व मानवविज्ञान का परिचय**

इकाई 1 पुरातत्व मानव विज्ञान की उत्पत्ति और विषय–क्षेत्र

इकाई 2 अन्य अनुशासन के साथ पुरातत्व मानवविज्ञान का संबंध

इकाई 3 पुरातात्विक मानवविज्ञान का अध्ययन करने की विधि

इकाई 4 पुरातात्विक मानव विज्ञान के अंतर्विषयक/अंतर–अनुशासनिक दृष्टिकोण

**खंड 2 तिथि निर्धारण पद्धित और अतीत का निर्माण**

इकाई 5 कालनिर्धारण की पद्धितियां

इकाई 6 जलवायु पुनर्निर्माण की पद्धतियां

इकाई 7 सेनोजोइक युग (चतुर्थ महाकल्प)

**खंड 3 प्रौगेतिहासिक संस्कृति की समझ**

इकाई 8 प्रागैतिहासिक प्रौद्योगिकी

इकाई 9 प्रागैतिहासिक वर्गीकरण

इकाई 10 सांस्कृतिक कालक्रम

इकाई 11 विश्व में संस्कृति के शुरुआती साक्ष्य

## व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-I (BECC 131) 6 credits

यह पाठ्यक्रम अध्येता का परिचय व्यष्टि अर्थशास्त्र के मूल सिद्धांतों से कराता है। इसमें माँग और आपूर्ति, उपभोक्ता के व्यवहार तथा उत्पादन एवं लागत के सिद्धांतों पर चर्चा की गई है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 विषय परिचय**

इकाई 1 अर्थशास्त्र और अर्थव्यवस्थाः एक परिचय

इकाई 2 माँग का सिद्धान्त और मांग की लोच

इकाई 3 आपूर्ति का सिद्धान्त और आपूर्ति की लोच

इकाई 4 माँग और आपूर्ति : व्यावहारिक अनुप्रयोग

**खंड 2 उपभोक्ता के व्यवहार का सिद्धांत**

इकाई 5 उपभोक्ता का व्यवहारः गणनवाचक दृष्टिकोण

इकाई 6 उपभोक्ता का व्यवाहार क्रमवाचक दृष्टिकोण

**खंड 3 उत्पादन और लागतें**

इकाई 7 एक परिवर्ती आगत का उत्पादन फलन

इकाई 8 दो परिवर्ती आगतों का उत्पादन फलन

इकाई 9 पैमाने के प्रतिफल

इकाई 10 लागत फलन

## व्यष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत-II (BECC 132) 6 credits

यह व्यष्टि अर्थशास्त्र सिद्धांत पर दूसरा पाठ्यक्रम है और इसमें कई विषयों पर चर्चा की गई है। यह पूर्ण प्रतियोगिता तथा अपूर्ण प्रतियोगिता से चर्चा को प्रारंभ करता है– इसमें एकाधिकार, एकाधिकारी प्रतियोगिता तथा अल्पाधिकार भी सम्मिलित हैं। साथ ही साधन बाजार तथा उसमें कीमत निर्धारण की व्याख्या की गई है– श्रम को भी एक उत्पादक साधन माना गया है। इसी पाठयक्रम में बाजार की विफलता तथा सरकार की भूमिका पर चर्चा की गई हैं अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत और विश्व व्यापार संगठन इसके अंतिम खंड का भाग है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 बाजार संरचना**

इकाई 1 पूर्ण प्रतियोगिताः फर्म एवं उद्योग के संतुलन

इकाई 2 एकाधिकारः कीमत एवं उत्पादन निर्णय

इकाई 3 एकाधिकारी प्रतियोगिताः कीमत एवं उत्पादन निर्णय

इकाई 4 अल्पाधिकरः कीमत एवं उत्पादन निर्णय

**खंड 2 साधन बाजार**

इकाई 5 साधन बाजार : साधन कीमत निर्धारण

इकाई 6 श्रम बाजार

इकाई 7 भूमि बाजार

**खंड 3 आर्थिक क्षेत्र : बाजार की विफलता और सरकार की भूमिका**

इकाई 8 आर्थिक क्षेत्र : पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत

इकाई 9 बाजार आवंटनात्मक दक्षताः बाजार की विफलता और राज्य की भूमिका

**खंड 4 अंतर्राष्ट्रीय व्यापार**

इकाई 10 अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धांत

इकाई 11 विश्व व्यापार संगठन तथा भारत की व्यापार नीति

## समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत - I (BECC 133) 6 credits

यहां आपका परिचय समष्टि अर्थशास्त्र के मूल सिद्धांतो से कराया जाएगा। इसमें जी.डी.पी उपभोग, बचत, निवेश और भुगतान शेष जैसे समष्टि चरों की संकल्पनाओं और उनके मापन पर चर्चा की गई है। साथ ही अल्प काल में जी.डी.पी. निर्धारण के विभिन्न सिद्धांतों की भी व्याख्या की गई है।

पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 समष्टि अर्थशास्त्र और राष्ट्रीय लेखांकन के मुद्दे**

इकाई 1 मुद्दे और संकल्पनाएं

इकाई 2 राष्ट्रीय आय लेखांकन

इकाई 3 आर्थिक निष्पादन का मापन

**खंड 2 सकल घरेलू उत्पाद (GDP)का निर्धारण**

इकाई 4 क्लासिकल एवं केतन्जेयन व्यवस्था

इकाई 5 आयनिधारण का केनियन प्रतिमान

**खंड 3 सरकार सहित अनावृत अर्थव्यवस्था में राष्ट्रीय आय का निर्धारण**

इकाई 6 राजकोषीय नीति

इकाई 7 बाह्य क्षेत्र

**खंड 4 आधुनिक अर्थव्यवस्था में मुद्रा**

इकाई 8 मुद्रा के कार्य

इकाई 9 मुद्रा की माँग

इकाई 10 मौद्रिक नीति

## समष्टि अर्थशास्त्र के सिद्धांत–II (BECC 134) 6 credits

यह पाठ्यक्रम बी.ई.सी.सी–133 का ही आगे विस्तार है। इसमें राष्ट्रीय आय के निर्धारण के विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या की गई है। इस पाठ्यक्रम में ही अध्येता को स्फीति, उसके बेरोजगारी तथा एक अनावष्त अर्थव्यवस्था की कुछ मूल संकल्पनाओं से सबंधों के बारे में भी बताया जाएगा।

पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 आइ एस एल एम विश्लेषण**

इकाई 1 वास्तविक क्षेत्र में संतुलन

इकाई 2 मौद्रिक क्षेत्र में संतुलन

इकाई 3 नवक्लासीकल संश्लेषण

**खंड 2 अल्पकाल एवं दीर्घकाल में जी.डी.पी. और कीमत स्तर**

इकाई 4 सकल माँग

इकाई 5 सकल आपूर्ति

इकाई 6 उत्पादन और कीमतों में संतुलन

**खंड 3 स्फीति और बेरोजगारी**

इकाई 7 स्फीतिः संकल्पना, प्रकार और मापन

इकाई 8 स्फीति के कारण और प्रभाव

इकाई 9 फिलिप्स वक्र

**खंड 4 भुगतान षेश और विनिमय दर**

इकाई 10 भुगतान शेष

इकाई 11 विनिमय दर का निर्धारण

# ENGLISH

## Individual and Society (BEGC 131) 6 credits

The course is assigned six credits and contains four blocks. Each block has four units. The focus of this course is the individual in her/his diverse aspects and how s/he impacts and learns from the environment, culture and topography that s/he is part of from time to time. Its objective is to improve the learner's proficiency in English by developing the skills in reading, writing, listening and speaking thorough themes pertaining to the Environment, Travel and Tourism, Culture and Entertainment and Health and Fitness.

## Selections From Indian Writing: Cultural Diversity (BEGC 132) 6 credits

The course will take up writing by Indian writers both in English and in translation which will give learners the opportunity to access the thoughts and work of regional writers as well. It will cover a variety of genres like criticism, stories and poetry while addressing highly relevant issues such as the politics of language, writing about/from marginalised groups/communities

and women's perspectives. It envisages the opening of a window through which learners can glimpse the rich legacy of the Bhakti and Sufi movements and journey into the modern world as they read representative writing from living authors with a contemporary world view. The course will study writers and critics like Sujit Mukherjee, Sisir Kumar Das, Amrit Rai, MK Naik, Nabanita Deb Sen, Tillotamma Mishra, Eleanor Zelliot, Bulleh Shah, Mahadeviakka, Meera, Raghuvir Sahay, Ayyappa Paniker, Kynphem Sing Nongkynrih, N.T. Rajkumar, Lakshmi Kannan, Pudhimaipithan, Indira Sant and Naseem Shafaie.

### British Literature (BEGC 133) 6 credits

This is a Discipline Specific Core Course of 6 credits, which gives learners the opportunity to engage with some of the most brilliant writing in the British literary canon. The course focuses on a detailed analysis of the themes and concerns of the texts prescribed for study, which include plays by William Shakespeare and George Bernard Shaw, and a novel by Thomas Hardy. The course aims at encouraging the critical thinking skills of the learners and providing a broad understanding of various genres of British literature.

### Reading the Novel (BEGC 134) 6 credits

This course introduces the novel as a genre, traces its origins from various other literary sources and genres and deals with three representative novels that have stood the test of time. Kate Chopin's *The Awakening*, Chinua Achebe's *Things Fall Apart* and Gopinath Mohanty's *Paraja*. This course also introduces various theoretical frameworks for the critical analysis of the novels under study.

## हिंदी

### हिंदी साहित्य का इतिहास (BHDC 131) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी साहित्य के इतिहास से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

काल विभाजन एवं नामकरण, आदिकालीन काव्य धाराएं : सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य, प्रमुख रासो काव्य, आदिकालीन हिंदी साहित्य की सामान्य विशेषताएं, भक्ति आंदोलन : सामाजिक– सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, प्रमुख निर्गुण कवि, प्रमुख सगुण कवि, भक्तिकाल की सामान्य विशेषताएं, रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त कवि, 1857 का स्वतंत्रता संघर्ष और हिंदी नवजागरण, भारतेंदु युगीन साहित्य की विशेषताएं, महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, द्विवेदी युग के प्रमुख गद्य लेखक और कवि, हिंदी में गद्य विधाओं का उद्‌भव और विकास : उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध।

### मध्यकालीन हिंदी कविता (BHDC 132) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का होगा। इस पाठ्यक्रम में निर्धारित कवियों तथा उनके काव्य का अध्ययन कराया जाएगा। इस प्रक्रिया में कवियों पर आलोचनात्मक सामग्री दी जाएगी और साथ ही कुछ पद्यांशों की व्याख्या भी दी जाएगी जो उन कवियों से संबंधित इकाइयों में होंगी। पाठ्यक्रम में मध्यकालीन कवियों कबीर, रविदास, जायसी, मीरा, सूरदास, तुलसीदास, रहीम, बिहारी, घनानंद, भूषण की रचनाओं का अध्ययन कराया जाएगा।

## आधुनिक हिंदी कविता (BHDC 133) 6 credits

इस पाठ्यक्रम में भारतेंदु युग से लेकर छायावाद युग तक की हिंदी कविता को शामिल किया गया है। यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित प्रवृत्तियों, कवियों और उनकी कविताओं का अध्ययन कराया जाएगा :

**भारतेंदु युगीन कविता** : स्वरूप और विकास : भारतेंदु और उनकी कविता; **द्विवेदी युगीन हिंदी काव्य :** स्वरूप और विकास : अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और उनकी कविता; मैथिलीशरण गुप्त और उनकी कविता; रामनरेश त्रिपाठी और उनकी कविता; **छायावाद :** स्वरूप और विकास; जयशंकर प्रसाद और उनकी कविता; सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और उनकी कविता; सुमित्रानंदन पंत और उनकी कविता; महादेवी वर्मा और उनकी कविता।

## हिंदी गद्य साहित्य (BHDC 134) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी गद्य की विधाओं– उपन्यास, कहानी तथा निबंध का अध्ययन कराया जाएगा ;

| | | | |
|---|---|---|---|
| उपन्यास | : | त्यागपत्र | – जैनेन्द्र कुमार |
| कहानी | : | नमक का दरोगा | – प्रेमचंद |
| | | अकाशदीप | – जयशंकर प्रसाद |
| | | वापसी | – उषा प्रियंवदा |
| निबंध | : | लोभ और प्रीति | – रामचंद्र शुक्ल |
| | | कुटज | – हजारी प्रसाद द्विवेदी |
| | | सहस्त्र फणों का मणिद्वीप | – कुबेरनाथ राय |

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी गद्य की विविध विधाओं में से उपर्युक्त तीन विधाओं का अध्ययन कराना है। इसके साथ ही पाठ्यक्रम में हिंदी गद्य साहित्य और उसके विकास का परिचय दिया जाएगा।

# इतिहास

## भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक (BHIC 131) 6 credits

वह समय चला गया है जब प्राचीन भारतीय इतिहास के लेखन में केवल राजाओं, उनके राज्यों और उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों का समावेश होता था। अब हम धीरे-धीरे अपना रुख जाँच और अन्वेषण के नये क्षेत्रों की ओर कर रहे हैं, और समाज के विभिन्न पहलुओं तथा आयामों से संबंधित प्रश्न उठा रहे हैं, जैसे कि समाज कैसे विकसित हुआ और उसमें होने वाले परिवर्तन क्या थे?

इन प्राथमिकताओं और मुद्दों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम **बी.एच.आई.सी.–131 : भारत का इतिहासः प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक** आपके लिए तैयार किया गया है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य आपको उन चरणों से अवगत कराना है जिनके अंतर्गत भारत के इतिहास का प्राचीनतम काल से लेकर लगभग 300 सी.ई. तक का खुलासा हुआ है। पाठ्यक्रम **17 इकाइयों** में विभाजित है। प्रत्येक इकाई की विषय-वस्तु एक प्रमुख विषय, प्रकरण या विकास की चर्चा करना है जिसे उपरोक्त अवधि के दौरान महत्त्वपूर्ण माना गया है। इस पाठ्यक्रम में एक चरण से दूसरे चरण में संक्रमण, सांस्कृतिक विशेषताओं,

क्षेत्रीय प्रतिरूपों के विकास के साथ-साथ राजनीति, अर्थव्यवस्था, धर्म और समाज में होने वाले परिवर्तनों पर ज़ोर दिया गया है। पाठ्यक्रम के तहत इस प्रकार इकाइयों की प्रस्तुति क्रमबद्ध तरीके से की गई है। लगभग 300 सी.ई. के बाद के ऐतिहासिक घटनाक्रमों का विवरण और विवेचना अगले पाठ्यक्रम **बी.एच.आई.सी.–132 : भारत का इतिहास : लगभग 300 सी.ई. से 1206 तक** में किया जाएगा।

### पाठ्यक्रम संरचना

इकाई 1 प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत

इकाई 2 एक स्रोत के रूप में पुरातत्व विज्ञान और प्रमुख पुरातात्विक-स्थल

इकाई 3 भारतीय इतिहास : प्राकृतिक विशेषताएँ, गठन एवं लक्षण

इकाई 4 शिकारी-संग्रहकर्ता : पुरातात्विक परिप्रेक्ष्य, कृषि और पशु-पालन का आरंभ

इकाई 5 हड़प्पा सभ्यता : कालानुक्रम, भौगोलिक विस्तार, ह्रास और विघटन

इकाई 6 हड़प्पा सभ्यता : भौतिक विशेषताएँ, संपर्कों का रूप, समाज और धर्म

इकाई 7 ताम्र पाषाण युग तथा आरंभिक लौह युग

इकाई 8 प्रारंभिक वैदिक समाज

इकाई 9 उत्तर-वैदिक युग में परिवर्तन

इकाई 10 *जनपद* और *महाजनपद* : नगरीय केंद्रों का उदय, समाज और अर्थव्यवस्था

इकाई 11 बौद्ध धर्म, जैन धर्म तथा अन्य धार्मिक विचार

इकाई 12 सिकंदर का आक्रमण

इकाई 13 मौर्य शासन की स्थापना और मगध साम्राज्य का विस्तार

इकाई 14 प्रशासनिक संगठन, अर्थव्यवस्था और समाज

इकाई 15 दक्कन और *तमिलाहम्* में आरंभिक राज्य निर्माण

इकाई 16 कृषक बस्तियाँ, कृषक समाज, व्यापार और शहरी केंद्रों का विस्तार – प्रायद्वीपीय भारत

इकाई 17 तमिल भाषा और साहित्य का विकास

## भारत का इतिहास : लगभग 300 सी.ई. से 1206 तक (BHIC 132) 6 credits

**बी.एच.आई.सी.-132** कालानुक्रम में हमारे पिछले पाठ्यक्रम **बी.एच.आई.सी.-131 : भारत का इतिहास : प्राचीनतम काल से लगभग 300 सी.ई. तक** के तारतम्य में है। पाठ्यक्रम उत्तरी एवं दक्षिणी भारत, दोनों में, इस अवधि के दौरान उभरने वाली प्रमुख राज्य व्यवस्थाओं और इनकी उपलब्धियों की ऐतिहासिक रूपरेखा प्रदान करता है। पाठ्यक्रम के तहत आरंभ में गुप्त साम्राज्य और पुष्यभूति वंश, तत्पश्चात् पल्लव, पांड्य, कलचुरी, कदंब, चालुक्य, चोल, होयसाल और अंत में राजपूतों, राष्ट्रकूटों, अरबों और महमूद ग़ज़नी और मोहम्मद गौरी के हमलों की जानकारी शामिल है। साथ ही, इनके शासन काल के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की विशेषताओं आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। यही बात भूस्वामित्व, राजस्व पद्धति, कृषीय संबंध, सामाजिक संरचना, लैंगिक संबंध, कला, भाषा एवं साहित्य की वृद्धि एवं विकास, धर्म और संबद्ध धार्मिक प्रवृत्तियों आदि पर भी लागू होती है। इस तरह, पाठ्यक्रम प्रारंभिक ऐतिहासिक काल से भारतीय इतिहास के आरंभिक मध्यकाल तक के संक्रमण पर एक गहरी अंतर्दृष्टि डालता है। हमें इस संक्रमण या बदलाव को भारतीय इतिहास के विद्यार्थियों के रूप में समझने और अध्ययन करने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में **16 इकाइयाँ** हैं जो विषयवस्तु एवं आनुक्रमिक आधार पर व्यवस्थित हैं।

### पाठ्यक्रम संरचना

इकाई 1 गुप्त साम्राज्य : उदय एवं विकास

इकाई 2 अर्थव्यवस्था, समाज, संस्कृति एवं राजतंत्र व्यवस्था : गुप्त साम्राज्य

इकाई 3 पुष्यभूति और हर्ष साम्राज्य का उदय

इकाई 4 दक्कन और दक्षिण भारत के साम्राज्य

इकाई 5 पल्लव, पांड्य और कलचुरी राज्य

इकाई 6 कदंब, बादामी के चालुक्य, चोल और होयसाल राज्य

इकाई 7 उत्तर-गुप्त काल में अर्थव्यवस्था और समाज

इकाई 8 उत्तर-गुप्त काल में राज्य व्यवस्था, धर्म और संस्कृति

इकाई 9 राजपूतों का आविर्भाव

इकाई 10 राष्ट्रकूटों का आविर्भाव

इकाई 11 अरब : हमले एवं विस्तार

इकाई 12 महमूद ग़ज़नी और मोहम्मद गौरी : आक्रमण एवं प्रतिरोध

इकाई 13 भूमि राजस्व पद्धतियाँ और कृषीय संबंध : लगभग 700-1200 सी.ई.

इकाई 14 सामाजिक संरचना और लैंगिक संबंध : लगभग 700-1200 सी.ई.

इकाई 15 कला, भाषा और साहित्य का विकास : लगभग 300 सी.ई. से 1206 तक

इकाई 16 धर्म एवं धार्मिक प्रवृत्तियाँ : लगभग 300 सी.ई. से 1206 तक

## भारत का इतिहास : 1207-1707 (BHIC 133) 6 credits

कालक्रमानुसार यह पाठ्यक्रम दिल्ली सल्तनत और मुगल राज्य व्यवस्था, अर्थव्यवस्था एवं समाज का चित्रण करता है। पाठ्यक्रम का आरंभ भारत में तुर्की सल्तनत की स्थापना से होता है। तुर्क, साथ-साथ नवीन शासक वर्ग, इस्लाम धर्म के अनुयायी थे। चूँकि ये लोग एक अलग माहौल से आए थे, इसलिए इनकी सामाजिक-आर्थिक एवं धार्मिक आवश्यकताएँ भी प्रचलित सामाजिक-आर्थिक एवं धार्मिक संरचनाओं से भिन्न थीं। परिणामस्वरूप, यह दौर 'द्वंद्वों' एवं 'समझौतों' का दौर रहा, जिससे आगे नये किस्म के शासन संबंधी नियमों एवं नवीन सांस्कृतिक स्वरूपों – इंडो-इस्लामिक वास्तुकला और सूफ़ीवाद – का उदय हुआ।

यह पाठ्यक्रम, मध्य एशिया में मुगलों के पूर्ववर्ती शासन और भारत में मुगल शक्ति की स्थापना के घटनाक्रम से आपको रू-ब-रू कराता है। इस पाठ्यक्रम में भारत में मुगल शक्ति की स्थापना, विस्तार और सुदृढ़ीकरण पर प्रकाश डाला गया है। पाठ्यक्रम में सल्तनत और मुगल शक्ति के आधिपत्य क्षेत्र से बाहर स्थित क्षेत्रीय राज्यों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। पाठ्यक्रम के तहत खासतौर पर दक्षिण में शक्तिशाली विजयनगर और नायक साम्राज्यों के आविर्भाव और दक्कनी सल्तनतों के मुगलों से टकराव पर ध्यान केंद्रित किया गया है। पाठ्यक्रम के तहत मुगल काल में *मनसब, जागीर* जैसी संस्थाओं की उत्पत्ति तथा विकास, विनिमय अर्थव्यवस्था तथा नगरीय केंद्रों की संवृद्धि पर भी विचार किया गया है। महासागरीय नेटवर्कों पर आधारित व्यापार एवं वाणिज्य तथा संस्कृति एवं समाज पर चर्चा इस काल के इतिहास को एक नये परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करती है। इस काल की अनूठी विशेषता थी, विविध संस्कृतियों एवं धर्मों की सांस्कृतिक परंपराओं में 'समन्वय' तथा समस्त संस्कृतियों और धर्मों को मुगलों द्वारा प्रदत्त उदारवादी संरक्षण, जिसके फलस्वरूप साहित्यिक गतिविधियों की रफ़्तार में तेज़ी से वृद्धि हुई।

17वीं शताब्दी का उत्तरार्ध और नई शताब्दी की शुरुआत, राजपूत, जाट, मराठा और सिक्खों के संघर्षों और द्वंद्वों का वर्णन करता है। पाठ्यक्रम, संबद्ध क्षेत्रों के नवीनतम शोध-कार्यों को ध्यान में रखते हुए इन सभी आयामों के विकास एवं उभरते मुद्दों की चर्चा करता है। इस काल के दौरान भारत यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के संपर्क में आया। पाठ्यक्रम के अंत में, 18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य की क्षीण होती शक्ति और परिणामस्वरूप स्वतंत्र क्षेत्रीय राज्यों के गठन के मद्देनज़र, मुगल साम्राज्य के पतन का विश्लेषण किया गया है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 राजनीतिक संरचनाएँ**

इकाई 1 इतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ

इकाई 2 दिल्ली सल्तनत की स्थापना, विस्तार और सुदृढ़ीकरण

इकाई 3 क्षेत्रीय राज्य

इकाई 4 विजयनगर और दक्खन के राज्य

इकाई 5 प्रारंभिक मुगल और अफगान

इकाई 6 मुगल राज्य व्यवस्था : अकबर से औरंगज़ेब तक

**खंड 2 सैन्य एवं प्रशासनिक व्यवस्थाएँ**

इकाई 7 प्रशासनिक संरचना

इकाई 8 सैन्य संगठन और *मनसब* व्यवस्था

इकाई 9 *इक्ता* और *जागीर*

**खंड 3 अर्थव्यवस्था और समाज**

इकाई 10 भू-राजस्व

इकाई 11 ग्रामीण समाज

इकाई 12 अंतर्देशीय व्यापार

इकाई 13 समुद्री व्यापार

इकाई 14 प्रौद्योगिकी, शिल्प उत्पादन और सामाजिक परिवर्तन

इकाई 15 कस्बे, नगर और नगरीय केंद्रों का संवर्धन

**खंड 4 धर्म और संस्कृति**

इकाई 16 भक्ति और सूफ़ी परंपराएँ

इकाई 17 वास्तुकला और चित्रकला

इकाई 18 महिलाएँ एवं जेंडर

## भारत का इतिहास : 1707 से 1950 तक (BHIC 134) 6 credits

हमारा यह पाठ्यक्रम आधुनिक समय के भारतीय इतिहास पर दृष्टिपात करता है। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारत में बहुत से स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ जिससे क्षेत्र विशेष पर कब्ज़ा और राजस्व को लेकर आपस में एक-दूसरे के विरुद्ध निरंतर प्रतिद्वंद्वता की भावना बनी रही। बड़े कब्ज़े की मंशा से इस राजनीतिक एवं सैन्य खेल में विभिन्न यूरोपीय कंपनियाँ शामिल होने लगीं। अंततः अंग्रेज़ी ईस्ट इंडिया कंपनी ने न सिर्फ अपने यूरोपीय प्रतिस्पर्धियों को पीछे धकेल दिया बल्कि भारतीय शासकों के स्थान पर स्वयं को स्थापित करने में कामयाबी भी हासिल कर ली।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने वर्ष 1757 में बंगाल के बड़े प्रांत के शासक को हराकर अपनी सत्ता को सुरक्षित रूप से स्थापित किया। इसके बाद कंपनी ने धीरे-धीरे लगभग समूचे भारत पर अपना राजनीतिक एवं सैन्य नियंत्रण स्थापित कर लिया। 1857 के विद्रोह के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी को एक बड़ी चुनौती दी गयी। लेकिन एक कड़े संघर्ष के बाद, कंपनी ने अपना नियंत्रण जैसे-तैसे पुनः स्थापित कर लिया। पाठ्यक्रम एक विस्तृत ढाँचे के तहत औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की स्थापना से भी सरोकार रखता है। 19वीं शताब्दी के अंत से उभरते राष्ट्रवादी आंदोलन द्वारा पुनः औपनिवेशिक शक्ति को एक प्रभावशाली चुनौती दी गई। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में एक बड़ा राष्ट्रवादी आंदोलन चलाया गया जिसने अंततः वर्ष 1947 में औपनिवेशिक शासन से भारत को मुक्त कराया। यह पाठ्यक्रम इस आंदोलन के उदय एवं विकास और नये गणराज्य के गठन से संबंधित है।

### पाठ्यक्रम संरचना

इकाई 1 18वीं शताब्दी की व्याख्या

इकाई 2 स्वतंत्र राज्यों का आविर्भाव

इकाई 3 औपनिवेशिक शक्ति की स्थापना

इकाई 4 औपनिवेशिक शक्ति का विस्तार एवं सुदृढ़ीकरण (1857 तक)

इकाई 5 1857 का विद्रोह

इकाई 6 औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था : कृषि

इकाई 7 औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था : व्यापार और उद्योग

इकाई 8 औपनिवेशिक शासन का आर्थिक प्रभाव

इकाई 9 19वीं शताब्दी के सामाजिक-धार्मिक आंदोलन

इकाई 10 राष्ट्रवाद का उद्भव और विकास

इकाई 11 महात्मा गाँधी के नेतृत्व में राष्ट्रवादी आंदोलन

इकाई 12 संप्रदायवाद : व्युत्पत्ति, विस्तार एवं भारत का विभाजन

इकाई 13 स्वतंत्रता का आगमन, संविधान सभा, गणराज्य की स्थापना

## गणित

गणित हमारे दैनिक जीवन की गतिविधियों में गहराई से जुड़ा है। साथ ही इसे एक अमूर्त विषय के रूप में भी जाना जाता है। दरअसल, गणित के दो पहलू होते हैं - प्रयोगात्मक और दार्शनिक। इसका विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, मानविकी, इंजीनियरिंग, प्रौद्योगिकी, वाणिज्य और कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक अनुप्रयोग हैं। यह आंतरिक सौंदर्य और तार्किक वैधता के साथ एक दर्शन भी है। इसे ध्यान में रखते हुए, स्नातक उपाधि कार्यक्रम में एक विषय के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। हम इस कार्यक्रम के हिस्से के

रूप में निम्नलिखित गणित पाठ्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं। इनमें से किसी भी पाठ्यक्रम के लिए पूर्व–आवश्यकता गणित का ज्ञान है जो माध्यमिक स्तर (+2) या समकक्ष स्तर पर प्रदान किया जाता है।

## कलन (BMTC 131) 6 credits

यह पहले स्तर का पाठ्यक्रम है, जिसमें पांच खंड हैं, और इसका उद्देश्य कलन का संक्षिप्त परिचय है। विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में, कलन को तेजी से पहचाना जा रहा है, और स्वीकार किया जा रहा है। इसके दो भाग हैं - अवकलन और समाकलन। इस पाठ्यक्रम में, हम आपको अवकलन और समाकलन की मूलभूत तकनीकों से परिचित करेंगे। हम संक्षेप में गणित के ऐतिहासिक विकास का भी पता लगाएंगे।

हम पहले खंड में आवश्यक प्रारंभिक अवधारणाओं के साथ पाठ्यक्रम शुरू करेंगे। आपको दूसरे और तीसरे खंडों में 'सीमा', सांतत्य और अवकलन की अवधारणाओं का परिचय कराया जाएगा। हम चौथे खंड में अवकलन के ज्यामितीय महत्व और अनुप्रयोगों पर चर्चा करेंगे। पांचवां खंड गणित की दूसरी महत्वपूर्ण अवधारणा पर केंद्रित है, जिसे समाकलन कहते हैं।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 आवश्यक प्रारम्भिक संकल्पनाएँ**

इकाई 1 समुच्चय और उन पर संक्रियाएँ

इकाई 2 फलन

इकाई 3 निर्देशांक पद्धति

इकाई 4 सम्मिश्र संख्याएँ

इकाई 5 बहुपद समीकरण और उनके हल

**खंड 2 सीमा और सांतत्य**

इकाई 6 वास्तविक संख्याएँ

इकाई 7 सीमा

इकाई 8 सांतत्य

**खंड 3 अवकलन**

इकाई 9 अवकलन की प्रस्तावना

इकाई 10 कुछ और अवकलज

इकाई 11 उच्चतर कोटि अवकलज

**खंड 4 अवकलन के अनुप्रयोग**

इकाई 12 अनिर्धार्य रूप

इकाई 13 उतार और चढ़ाव

इकाई 14 वक्रता

इकाई 15 अनतस्पर्शी

**खंड 5 समाकलन**

इकाई 17 समाकलन का परिचय

इकाई 18 समाकलन की विधियाँ

इकाई 19 समानयन सूत्र

इकाई 20 समाकलन के अनुप्रयोग

## अवकल समीकरण (BMTC 132) 6 credits

अवकल समीकरण के इस पाठ्यक्रम को अच्छी तरह समझने के लिए कलन के पाठ्यक्रम बी.एम.टी.सी.-131 की जानकारी होना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में चार खंड हैं।

खंड 1 में हम दो और तीन वास्तविक चरों वाले फलनों पर विचार करेंगे। इस खंड का मुख्य उद्देश्य आपको वह आधार प्रदान करना है जो आपको इस पाठ्यक्रम के अन्य खंडों को अध्ययन करने में सहायता करेगा। यहां हमने 3-विमिए निर्देशांक प्रणाली पर संक्षिप्त में चर्चा की है और $\mathbf{R}^2$ और $\mathbf{R}^3$ की बीजीए और ज्यामितीय संरचना पर विचार किया है। सीमा, सांतत्य और अवकलनीयता की धारणा को 2 और 3 चरों वाले फलनों के लिए विस्तृत किया है। इस खंड में श्रृंखला नियम और समघात फलनों पर भी चर्चा की गई है।

हमने खंड 2 का आरंभ अवकल समीकरणों से संबंधित आवश्यक तथ्यों तथा उनकी बुनियादी परिभाषा से किया है। प्रथम कोटि के साधारण अवकल समीकरणों को हल करने की विभिन्न विधियों की चर्चा करने के बाद हमने कुछ भौतिक समस्याओं को प्रथम कोटि रैखिक अवकल समीकरणों के रूप में प्रस्तुत किया है। खंड 3 में हमने द्वितीय कोटि के साधारण अवकल समीकरणों के प्रयोगों के बारे में जोर दिया है।

खंड 4 में हमने युगपत्, संपूर्ण और आंशिक अवकल समीकरणों की चर्चा की है। यहां हमने प्रथम कोटि आंशिक अवकल समीकरणों को रैखिक, समिरैखिक, रैखिककल्प और अरैखिक समीकरणों में वर्गीकृत किया है तथा उनके विभिन्न प्रकार के हलों/समाकलों की चर्चा की है।

चर्चा की गई सभी संकल्पनाओं के बीच-बीच में उदाहरण और प्रश्न भी दिए गए हैं। इनसे आपको इस पाठ्यक्रम में बतलाई गई तकनीकों को अच्छी तरह से समझने में सहायता मिलेगी।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 दो और तीन चरों वाले फलन**

इकाई 1 $R^2$,$R^3$

इकाई 2 सीमा और सांतत्य

इकाई 3 प्रथम कोटि आंशिक अवकलज तथा अवकलनीयता

इकाई 4 उच्चतर कोटि आंशिक अवकलज

इकाई 5 श्रृंखला नियम और समघात फलन

**खंड 2 प्रथम कोटि साधारण अवकल समीकरण**

इकाई 6 अवकल समीकरणों से परिचय

इकाई 7 प्रथम कोटि और प्रथम घात वाले समीकरणों को हल करना

इकाई 8 रैखिक अवकल समीकरण

इकाई 9 एक से बड़ी घात वाले प्रथम कोटि अवकल समीकरण

**खंड 3 द्वितीय और उच्चतर कोटि साधारण अवकल समीकरण**

इकाई 10 उच्चतर कोटि रैखिक अवकल समीकरण

इकाई 11 अनिर्धारित गुणांक विधि

इकाई 12 चर गुणांक वाले अवकल समीकरण

इकाई 13 अवकल संकारक विधि

**खंड 4 प्रथम कोटि आंशिक अवकल समीकरण**

इकाई 14 युगपत् अवकल समीकरण

इकाई 15 संपूर्ण अवकल समीकरण

इकाई 16 रैखिक आंशिक अवकल समीकरण

इकाई 17 प्रथम कोटि आंशिक अवकल समीकरण

## वास्तविक विश्लेषण (BMTC 133) 6 credits

आपको हमारे प्रथम स्तर के कलन पाठ्यक्रम में सिखायी गई अवधारणाओं का व्यावहारिक ज्ञान होगा, इसी को ध्यान में रखकर यह पाठ्यक्रम तैयार किया जाता हैं वास्तविक विष्लेषण गणित की मुख्य शाखाओं में से महत्त्वपूर्ण शाखा है जैसा कि पाठ्यक्रम के नाम से ही विदित होता है। इसमें सीमा, सांतत्य, अवकलनीयता और समाकलनीयता जैसी अवधारणाओं का एक अपेक्षाकृत स्पष्ट और अमूर्त रूप से निरूपण किया गया है। ये अवधारणाएँ विज्ञान, इंजीनियरिंग और अर्थशास्त्र जैसे कई क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य आपसे गणित की भाषा से परिचित कराना है क्योंकि गणित के विभिन्न तर्कों (arguments)के स्पष्ट प्रस्तुतीकरण के लिए गणित की भाषा को जाना जरूरी है। पूरी पाठ्यक्रम सामग्री छह खंडों।

पहले खंड का अध्ययन करते हुए आप विष्लेषण की दुनिया में कदम रखेंगे। खंड 2 और 3 में अनुक्रम और श्रेणी परिचित कराया गया है और इस पर चर्चा की गई है। खंड 4 में सीमा, सांतत्य और अवकलनीयता का औपचारिक अध्ययन किया गया है। खंड 5 में आपको रीमान समाकलनीयता की अवधारणाओं से परिचित कराया गया है। इसमें रीमान समकलनीयता फलनों के गुणों (गुणधर्मों) पर भी चर्चा की गई है। अंतिम खंड (खंड 6) में फलनों के अनुक्रमों और श्रेणी और उनके बिंदुरा : अभिसरण और एकसमान अभिसरण पर चर्चा की गई है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 $\mathbb{R}$ की संरचना**

इकाई 1 गणित में संवाद

इकाइ 2 गणितीय तर्क

इकाई 3 $\mathbb{R}$ की बीजगणितीय संरचना

इकाई 4 $\mathbb{R}$ की सांस्थितिक संरचना

**खंड 2 अनुक्रम**

इकाई 5 अनुक्रम अभिसरण

इकाई 6 सीमा से संबंधित महत्त्वपूर्ण प्रमेय

**खंड 3 अनंत श्रेणी**

इकाई 7 श्रेणी अभिसरण

इकाई 8 अभिसरण परीक्षण

इकाई 9 एकांतर श्रेणी

**खंड 4 फलन की सांतत्य और अवकलनीयता**

इकाई 10 सांतत्य

इकाई 11 अवकलनीयता

इकाई 12 अनुप्रयोग

इकाई 13 उच्च कोटि अवकलज

**खंड 5 फलनों की समाकलनीयता**

इकाई 14 रीमान समाकलनीय फलन

इकाई 15 रीमान समाकलनीय फलनों के गुणधर्म

इकाई 16 कुछ महत्त्वपूर्ण प्रमेय (कलन का मूलभूत प्रमेय, मध्यमान प्रमेय)

**खंड 6 फलन अनुक्रम और श्रेणी**

इकाई 17 फलन अनुक्रम

इकाई 18 फलन श्रेणी

## बीजगणित (BMTC 134) 6 credits

इस पाठ्यक्रम में 4 खंड हैं। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से आपको अनेक बीजीय पद्धतियों, जैसे समूहों, वलयों और क्षेत्रों से अवगत कराया जाएगा। पहले दो खंड समूह सिद्धांत पर केन्द्रित होंगे, तथा अगले दोनों खंडों में आप वलयों और क्षेत्रों के बारे में अध्ययन करेंगे।

जैसे-जैसे आप इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करते जाएंगे, वैसे-वैसे आप बीजगणित की विभिन्न विधियों से परिचित होते जाएंगे। आप यह भी देखेंगे कि किस प्रकार, इन विधियों का प्रयोग करते हुए, अनेक विभिन्न बीजीय वस्तुओं का वास्तविक रूप से अध्ययन एक बार में, एक साथ ही, किया जा सकता है। यह अध्ययन, निस्संदेह, गणितीय रूप से सोचने और गणित की सुंदरता को सराहने की आपकी सामर्थ्य विकसित करने में आपकी सहायता करेगा।

नीचे इस पाठ्यक्रम की रूपरेखा दी गई है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 समूहों से परिचय**

इकाई 1 कुछ मूल अवधारणाएं

इकाई 2 समूह

इकाई 3 उपसमूह

इकाई 4 चक्रीय समूह

**खंड 2 प्रसामान्य उपसमूह और समूह समाकारिताएं**

इकाई 5 लग्रांज प्रमेय

इकाई 6 प्रसामान्य उपसमूह

इकाई 7 विभाग समूह

इकाई 8 समूह समाकारिताएं

इकाई 9 क्रमचय समूह

इकाई 10 (ऐच्छिक) सीलो प्रमेय

**खंड 3 वलय सिद्धांत से परिचय**

इकाई 11 वलय

इकाई 12 उपवलय

इकाई 13 गुणजावलियाँ

इकाई 14 वलय समाकारिताएं

**खंड 4 पूर्णांकीय प्राँत और क्षेत्र**

इकाई 15 पूर्णांकीय प्राँत

इकाई 16 बहुपदों का वलय

इकाई 17(ऐच्छिक) विषेष पूर्णांकीय प्राँत

## राजनीतिक सिद्धांत का परिचय (BPSC 131) 6 credits

यह पाठ्यक्रम राजनीतिक सिद्धांत की कुछ प्रमुख अवधारणाओं से परिचय कराता है और इसके चार भाग हैं। भाग 1 में राज्य और राजनीति के विचारों पर चर्चा की गई है। यह राजनीतिक सिद्धांत, इसके एतिहासिक विकास और प्रमुख दृष्टिकोणों की भी व्याख्या करता है। भाग 2 और भाग 3 में प्रमुख अवधारणाओं जैसे स्वतंत्रता, समानता, न्याय, अधिकार, लोकतंत्र, नागरिकता, जेंडर आदि की चर्चा की गई है। अंतिम भाग राजनीतिक सिद्धांत में कुछ प्रमुख बहस के मुद्दों पर प्रकाश डालता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 राजनीतिक सिद्धांत का परिचय**

इकाई 1 राजनीति क्या है?

इकाई 2 राजनीतिक सिद्धांत क्या हैं?

**खण्ड 2 अवधारणाएँ**

इकाई 3 स्वतंत्रता

इकाई 4 समानता

इकाई 5 न्याय

इकाई 6 अधिकार

**खण्ड 3 अवधारणाएँ**

इकाई 7 लोकतंत्र

इकाई 8 जेंडर

इकाई 9 नागरिकता

इकाई 10 नागरिक समाज और राज्य

**खण्ड 4 राजनीतिक सिद्धांत में बहस**

इकाई 11 लोकतंत्र बनाम आर्थिक विकास

इकाई 12 स्वतंत्रता बनाम नियंत्रण

इकाई 13 रक्षात्मक भेदभाव बनाम निष्पक्षता का सिद्धांत

इकाई 14 परिवार, कानून और राज्य

## भारतीय सरकार और राजनीति (BPSC 132) 6 credits

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय राजनीति की कुछ विशेषताओं से अवगत कराता है। इस पाठ्यक्रम में पंद्रह इकाईयॉ हैं जिन्हें विषयों के आधार पर छः खण्डों में विभाजित किया गया है। यह पाठ्यक्रम प्रथम खण्ड से शुरू होता है जिसमें भारत में राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोणों के विषय में बताया गया है। दूसरे खण्ड में भारतीय संविधान की विशेषताओं, मौलिक अधिकारों तथा राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों पर इकाईयाँ हैं। तीसरे खण्ड में शक्तियों के पृथक्करण पर इकाईयाँ हैं–विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। चौथे खण्ड की इकाईयाँ पहचान, वर्गों तथा राजनीति के मध्य संबंधों पर चर्चा करती हैं। पाँचवें खण्ड की इकाईयाँ धर्म एवं राजनीति के संबंधों की चर्चा करती है। छठे खण्ड की इकाईयाँ भारत में राजनीतिक दलों एवं दलीय व्यवस्थाओं से संबंधित हैं।

### पाठ्यक्रमसंरचना

**खण्ड 1 भारतीय राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण**

इकाई 1 उदारवादी

इकाई 2 मार्क्सवादी

इकाई 3 गाँधीवादी

**खण्ड 2 भारतीय संविधान**

इकाई 4 प्रमुख विशेषतायें

इकाई 5 मौलिक अधिकार

इकाई 6 राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत एवं मौलिक कर्तव्य

**खण्ड 3 संस्थाऐं**

इकाई 7 विधायिका

इकाई 8 कार्यपालिका

इकाई 9 न्यायपालिका

**खण्ड 4 समाज और राजनीति**

इकाई 10 जाति, वर्ग एवं नष्जाति

इकाई 11 जेंडर

इकाई 12 मजदूर और किसान

**खण्ड 5 धर्म और राजनीति**

इकाई 13 धर्मनिरपेक्षता

इकाई 14 सांप्रदायिकता

**खण्ड 6 भारत में राजनीति और दलीय व्यवस्था**

इकाई 15 दल और दलीय व्यवस्था

## तुलनात्मक सरकार और राजनीति (BPSC 134) 6 credits

तुलनात्मक सरकार और राजनीति राजनीतिक विज्ञान का एक महत्वपूर्ण भाग है, जिसके क्षेत्र, विधि और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण में विशेष बदलाव आए हैं। यह पाठ्यक्रम ऐसे कुछ बदलावों का परिचय देता है और राजनीतिक शासन की प्रकृति, सरकार और राजनीतिक भागीदारी का विश्लेषण करता है। यह पाठ्यक्रम राज्य पर भी चर्चा करता है, जिसे तुलनात्मक राजनीति में लंबे समय से नज़रअंदाज किया गया है। कुछ प्रमुख बहस के मुद्दों का अध्ययन तुलनात्मक ढंग से किया गया है, जैसे कि राज्य की प्रकृति, राज्य और नागरिक समाज का संबंध तथा वैश्वीकरण के युग में राज्य की भूमिका।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 परिचय**

इकाई 1 तुलनात्मक विश्लेषणः प्रकृति, क्षेत्र और उपयोगिता

इकाई 2 तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण की विधियाँ

**खण्ड 2 शासनों की तुलना**

इकाई 3 सत्तावादी और लोकतांत्रिक शासन

इकाई 4 नागरिक और सैन्य शासन

**खण्ड 3 सरकार के रूप**

इकाई 5 संसदीय और अध्यक्षीय व्यवस्था

इकाई 6 संघीय और एकात्मक व्यवस्था

**खण्ड 4 राजनीतिक भागीदारी और प्रतिनिधित्व के स्वरूप**

इकाई 7 राजनीतिक दल और दल व्यवस्था

इकाई 8 दबाव समूह

इकाई 9 चुनावी प्रक्रियाएँ

**खण्ड 5 तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में राज्य**

इकाई 10 विकसित और विकासषील देशों में राज्य

इकाई 11 राज्य – नागरिक समाज संबंध

इकाई 12 वैश्वीकरण के युग में राज्य

इकाई 13 राज्य की प्रकृति पर तुलनात्मक बहस

# मनोविज्ञान

## मनोविज्ञान के आधार (BPCC 131) 6 credits

यह पाठ्यक्रम पहले सेमेस्टर का भाग है। मनोविज्ञान का संबंध व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन से होता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य मानव व्यवहार की बुनियादी प्रक्रियाओं, मनोविज्ञान में सिद्धांतों और तकनीकों के साथ–साथ, दैनिक जीवन में मनोविज्ञान के अनुप्रयोगों का अवलोकन प्रदान करना है। यह पाठ्यक्रम, शिक्षार्थी को मानव व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायता करेगा और प्रमुख मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं और उसके वर्तमान अनुप्रयोगों के बारे में बेहतर समझ विकसित करने में सहायता करेगा। इस पाठ्यक्रम में प्रयोगशाला का कार्य भी सम्मिलित है। दिये गये पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी को एक प्रयोग और एक परीक्षण करना होगा, जिससे वह व्यवहार मापन और उसकी व्याख्या करने का अनुभव ग्रहण करेंगें। इस पाठ्यक्रम का डां. मॉनिका मिश्रा, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा समन्वित किया जा रहा है।

## सामाजिक मनोविज्ञानः एक परिचय (BPCC 132) 6 credits

यह पाठ्यक्रम दूसरे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थी को समाज में व्यक्तिगत, पारस्परिक प्रक्रियाओं, समूह की गतिशीलता और सामाजिक व्यवहार पर सांस्कृतिक प्रभावों को समझने में सहायता करेगा। इस पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षार्थी समाज और मानव व्यवहार को उचित रूप से समझ सकेंगें। इस पाठ्यक्रम में ट्यूटोरियल सम्मिलित है जो कि सिद्धांत घटक के विषयों पर आधारित होगा जो कि कार्य से जुड़े हुये पहलुओं पर आधारित होंगी। इससे उन्हें व्यवहारिक ज्ञान को दिन–प्रतिदिन के जीवन के अनुभवों को समझने में सहायता मिलेगी। इस पाठ्यक्रम का समन्वय डॉ स्मिता गुप्ता, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

## मनोवैज्ञानिक विकार (BPCC 133) 6 credits

यह पाठ्यक्रम तीसरे सेमेस्टर का भाग है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न मनोवैज्ञानिक विकारों और उनके उपचारों की समझ प्रदान करना है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को असामान्यता की मूल अवधारणाओं, विकारों के वर्गीकरण, विकारों के सैद्धांतिक दृष्टिकोण और उपचारों के दृष्टिकोण को समझने में सहायता करेगा। इस पाठ्यक्रम में ट्यूटोरियल सम्मिलित है जो कि सिद्धांत घटक के विषयों पर आधारित होगा, जो कि कार्य से जुड़े हुये पहलुओं पर आधारित होंगी। इससे उन्हें व्यवहारिक ज्ञान को दिन–प्रतिदिन के जीवन के अनुभवों को समझने में सहायता मिलेगी। इस पाठ्यक्रम को समन्वय डॉ मोनिका मिश्रा, मनोविज्ञान संकाय, एस ओ एस एस द्वारा किया जा रहा है।

## सांख्यिकीय विधियाँ और मनोवैज्ञानिक अनुसंधान (BPCC 134) 6 credits

यह कोर्स चौथे सेमेस्टर के पाठ्यक्रम में है। यह पाठ्यक्रम मनोवैज्ञानिक अनुसंधान, सांख्यिकी और मनोवैज्ञानिक परीक्षण की मूल बातों से शिक्षार्थियों को परिचित कराएगा। पाठ्यक्रम विभिन्न सांख्यिकीय तकनीकों और मनोवैज्ञानिक परीक्षण का अवलोकन प्रदान करेगा जिसका उपयोग मनोवैज्ञानिक अनुसंधान में किया जा सकता है। इस पाठ्यक्रम में प्रयोगशाला का कार्य सम्मिलित हैं। इस पाठ्यक्रम का समन्वय प्रो. सुहास शेटगोवेकर, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

# लोक प्रशासन

## लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य (BPAC 131) 6 credits

'लोक प्रशासन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य' नामक पाठ्यक्रम लोक प्रशासन के प्रमुख दृष्टिकोणों की व्याख्या करता है, जिसमें क्लासिकी दृष्टिकोण से आरंभ होकर नवक्लासिकी तक और फिर नारीवाद और उत्तर–आधुनिकतावाद के समकालीन दृष्टिकोणशामिल है। क्लासिकी, व्यवहारिक और मानवीय संबंध दृष्टिकोण तकनीकी, संरचनात्मक, सामाजिक और पर्यावरणीय संदर्भों से एक संगठन की प्रक्रियाओं को देखने का प्रयास करते हैं।

व्यवहार दृष्टिकोण के अंर्तगत,एल्टन मेयो संगठनों की तकनीकी से परे देखने और साथियों और कार्य पर्यावरण के संबंध में मानव व्यवहार को समझने के लिए किए गए प्रयासों को समझाते हैं। निर्णय लेने में साइमन का मूल्य और तथ्य दषविभाजन और पाठ्यक्रम मे बरनार्ड का प्रणाली दृष्टिकोण भी वर्णित है। सामाजिक–मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रेरणा के सिद्धांतो और उनके संगठनात्मक परिणाम से जुड़ने पर चर्चा करते है। संगलित–सांक्षेत्रिक–विकर्तित–प्रतिमान पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण का हिस्सा है, जिसे पाठ्यक्रम में समझाया गया है। नवीन लोक प्रशासन दृष्टिकोण सभी मिनोब्रूक सम्मेलनों मे विचार–विमर्श के परिणाम का परीक्षण करता है । लोक चुनाव चयन दृष्टिकोण स्व–हित पर केद्रित है और जनहित दृष्टिकोण शासन की जिम्मेदारियों को सामने लाता है।

पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा समकालीन परिप्रेक्ष्यों पर जोर देता है, जो नवीन लोक प्रबंधन, सुशासन, उत्तर–आधुनिक और नारीवाद दृष्टिकोण पर केंद्रित है। एक वैकल्पिक लोक प्रशासन प्रतिमान की तलाष करने के लिए उत्तर–आधुनिक और नारीवाद दृष्टिकोण की इकाइयों ने ज्ञान की उपेक्षित ज्ञान–पद्धतियों जैसे–आलोचनात्मक विचार, भाषण विश्लेषण, अनिर्माण, सीमित क्षेत्र, लिंग समानता पैतष्क विचार पैटर्न और कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी पर भी जोर दिया है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 वैचारिक और क्लासिकी परिप्रेक्ष्य**

इकाई 1 लोक प्रशासन की अवधारणा और महत्व

इकाई 2 वैज्ञानिक प्रबंधन दृष्टिकोण

इकाई 3 प्रशासनिक प्रबंधन दृष्टिकोण

इकाई 4 नौकरशाही दृष्टिकोण

**खंड 2 व्यवहारिक ,प्रणाली और मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य**

इकाई 5 मानवीय संबंध दृष्टिकोण

इकाई 6 निर्णय निर्माण दृष्टिकोण

इकाई 7 प्रणाली और सामाजिक–मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

**खंड 3 लोक नीति परिप्रेक्ष्य**

इकाई 8 लोक नीति दृष्टिकोण

इकाई 9 नीति विज्ञान दृष्टिकोण

**खंड 4 राजनीतिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य**

इकाई 10 पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण

इकाई 11 नवीन लोक प्रशासन दृष्टिकोण

इकाई 12 लोक चयन दृष्टिकोण

इकाई 13 लोक हित दृष्टिकोण

**खंड 5 समकालीन परिप्रेक्ष्य**

इकाई 14 नवीन लोक प्रबंधन दृष्टिकोण

इकाई 15 सुशासन दृष्टिकोण

इकाई 16 उत्तर –आधुनिक दृष्टिकोण

इकाई 17 नारीवादी दृष्टिकोण

## प्रशासनिक विचारक (BPAC 132) 6 credits

'प्रशासनिक विचारक' पर यह पाठ्क्रम संगठनों के काम करने और श्रमिकों पर उनके प्रभाव पर विचारकों और प्रशासकों के दृष्टिकोणों की व्याख्या करता है। यह कौटिल्य, महात्मा गांधी और वुडरो विल्सन जैसे आरंभिक विचारकों के दृष्टिकोण को सामने लाता है। कौटिल्य द्वारा अर्थशास्त्र की प्रशासनिक प्रणाली पर चर्चा पाठ्यक्रम का एक मुख्य आकर्षण है, क्योकि प्रशासनिक सिद्धांत मे बहुत कम पाठय्क्रम कौटिल्य पर विस्तार से चर्चा करते है। गांधी के स्वराज और न्यायसिता के सिद्धांतों के साथ–साथ विल्सन के राजनीति प्रशासन द्विभाजन पर भी चर्चा की गई है।

मानसिक क्रांति के रूप में टेलर और फेयोल जैसे क्लासिकी विचारकों का योगदान, कार्यात्मक फोरमैन, शॉप फलोर (निम्न स्तरीय) प्रबंधन, केंद्रीकरण, पदानुक्रम और समय प्रबंधन को पाठ्यक्रम में प्रकाशित किया गया है। यह मेयो के हॉर्थोन प्रयोगो, साइमन के डिजाइन, बुद्धिमता और विकल्प निर्णय निर्माण तथा बरनार्ड की बंद और खुली ;ब्सवेमक ंदक व्चमदद्ध प्रणाली के विवरणों का विस्तार से परीक्षण करता है । संगठनों मे प्रेरणा को जिस तरह से देखा जाता है, उस पर मॉस्लो, हर्जबर्ग, लिकर्ट और आग्र्याईरिस (Maslow, Herzberg, Likert and Argyris) जैसे सामाजिक–मनोवैज्ञानिक एक महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। इसके अतिरिक्त, ड्वाइट वाल्डो, पीटर ड्रकर और येहजकल ड्रोर जैसे विचारकों के विचारों को नवीन लोक प्रशासन, उद्देश्यों, अधिगम संगठनों और नीति विज्ञान द्वारा प्रबंधन के क्षेत्रों मे विकास के माध्यम से स्पष्ट करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 भारतीय विचारक**

इकाई 1 कौटिल्य

इकाई 2 महात्मा गांधी

**खंड 2 क्लासिकी विचारक**

इकाई 3 वुडरो विल्सन

इकाई 4 फ्रेड्रिक डब्लयू टेलर

इकाई 5 हेनरी फेयोल

इकाई 6 मैक्स वेबर

इकाई 7 मैरी पार्कर फॉलेट

**खंड 3 व्यवहारिक और प्रणाली विचारक**

इकाई 8 एल्टन मेयो

इकाई 9 चेस्टर बरनार्ड

इकाई 10 हरबर्ट ए. साईमन

**खंड 4 सामाजिक–मनोवैज्ञानिक विचारक**

इकाई 11 अब्राहम मास्लो

इकाई 12 रेंसिस लिकर्ट

इकाई 13 फ्रेड्रिक हर्जबर्ग

इकाई 14 क्रिस आारगाइरिस

**खंड 5 प्रबंधन और लोक नीति विचारक**

इकाई 15 डवाइट वाल्डो

इकाई 16 पीटर ड्रकर

इकाई 17 येहजकल ड्रोर

## केन्द्रीय स्तर पर प्रशासनिक प्रणाली (BPAC 133) 6 credits

यह पाठ्यक्रम केन्द्रीय स्तर पर प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित है। प्रशासनिक व्यवस्था के विकास के साथ साथ, यह पाठ्यक्रम भारतीय प्रशासन के निरन्तर रूप से परिवर्तित होने वाले प्रकृति का वर्णन करता है। आगे, यह भारतीय संघ व्यवस्था, व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, व न्यायपालिका का भी वर्णन करता है। केबिनेट सचिवालय, केन्द्रीय सचिवालय, अखिल भारतीय सेवाएँ, केन्द्रीय सिविल सेवाएँ, प्रशासनिक प्राधिकरण, नीति आयोग, वित आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, केन्द्रीय सर्तकता आयोग, लोकपाल, लेखा नियन्त्रक और परीक्षक, एवं नियामकिय निकायों की भूमिका के सदंर्भ में भी विचार-विमर्श करता है। साथ ही, यह नागरिक समाज व प्रशासनिक सुधार का भी समावेश करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 भारतीय प्रशासन का विकास**

इकाई 1 प्राचीनकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

इकाई 2 मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

इकाई 3 अंग्रेजकालीन प्रशासनिक व्यवस्था

इकाई 4 1947 पश्चात् भारतीय प्रशासन में निरंतरता व परिवर्तन

**खण्ड 2 भारत में संसदीय लोकतंत्र**

इकाई 5 भारतीय संघवाद

इकाई 5(क) व्यवस्थापिका

इकाई 5(ख) कार्यपालिका

इकाई 5(ग) न्यायपालिका

**खण्ड 3 संस्थागत ढाँचा**

इकाई 6 केबिनेट सचिवालय

इकाई 7 केन्द्रीय सचिवालय

इकाई 8 अखिल भारतीय सेवा व केन्द्रीय सिविल सेवा

इकाई 9 प्रशासनिक प्राधिकरण

**खण्ड 4 आयोग**

इकाई 10(क) नीति आयोग

इकाई 10(ख) संघ लोक सेवा आयोग

इकाई 10(ग) चुनाव आयोग

इकाई 10(घ) वित्त आयोग

इकाई 10(ड.) केन्द्रीय सर्तकता आयोग

इकाई 10(च) प्रशासनिक सुधार आयोग

**खण्ड 5 नागरिक समाज : अवधारणा व भूमिका**

इकाई 11 नागरिक समाज : अवधारणा व भूमिका

**खण्ड 6 नियामकिय निकाय**

इकाई 12(क) टेलिकॉम रग्यूलेटरी ऑथरिटी ऑफ इण्डिया

इकाई 12(ख) पेंशन फंड रग्यूलेटरी एंड डेवलपमेंट ऑथरिटी

इकाई 12(ग) फूड सेफ्टी एंड स्टैन्डॅर्डस ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया

## राज्य और जिला स्तरों पर प्रशासनिक प्रणाली (BPAC 134) 6 credits

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य राज्य और जिला स्तरों पर भारतीय प्रशासन की कार्य पद्धति से विद्यार्थियों को परिचित कराना है। इस संदर्भ में, राज्य और जिला स्तरों पर प्रशासन के विकास को उजागर करने का प्रयास किया गया है। भारत में प्रशासन, संविधान के ढाँचे के भीतर संचालित होता है। इस पाठ्यक्रम में राज्य स्तर पर प्रशासन का अध्ययन, राज्य सरकार को सौंपी गई शक्तियों के साथ–साथ राज्यपाल, मुख्यमंत्री, राज्य विधानमंडल तथा राज्य सचिवालय की भूमिका के विश्लेषण को अनिवार्य बना देता है। पाठ्यक्रम में सचिवालय और निदेशालयों के बीच संबंधों के पैटर्न को भी शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, पाठ्यक्रम में राज्य सचिवालय; राज्य सेवाएँ और लोक सेवा आयोग; राज्य योजना बोर्ड; राज्य वित्त आयोग; राज्य निर्वाचन आयोग; लोकायुक्त और न्यायपालिका के बारे में भी विस्तार से चर्चा की गई है। चूँकि जिला कलक्टर प्रशासन का आधार–स्तंभ होता है, इसलिए जिला स्तर पर उसकी भूमिका और कार्यों का भी वर्णन किया गया है। यह देखा गया है कि नागरिकों का अपने दैनिक जीवन में प्रशासन से संपर्क निरंतर बढ़ता जा रहा है। अतः पंचायती राज और नगरपालिका प्रशासन का विवरण प्रस्तुत किया गया है। पाठ्यक्रम के अंत में, केंद्र और राज्यों के साथ–साथ राज्यों और स्थानीय निकायों के बीच संबंधों में उभरते हुए मुद्दों पर भी चर्चा की गई है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 ऐतिहासिक संदर्भ**

इकाई 1 राज्य और जिला प्रशासन : विकास

**खंड 2 राज्य और जिला प्रशासन**

इकाई 2 राज्य प्रशासन की सांविधानिक रुपरेखा

इकाई 3 राज्य सचिवालय : संगठन एवं कार्य

इकाई 4 सचिवालय और निदेशालयों के बीच संबंध के पैटर्न

इकाई 5 राज्य सेवाएँ एवं लोक सेवा आयोग

इकाई 6 राज्य योजना बोर्ड

इकाई 7 राज्य वित्त आयोग

इकाई 8 राज्य निर्वाचन आयोग

इकाई 9 लोकायुक्त

इकाई 10 न्यायिक प्रशासन

इकाई 11 जिला कलक्टर

इकाई 12 पंचायती राज

इकाई 13 नगरपालिका प्रशासन

**खंड 3 उभरते मुद्दे**

इकाई 14 केंद्र–राज्य–स्थानीय प्रशासनिक संबंध

# संस्कृत

## संस्कृत पद्य-साहित्य (BSKC 131) 6 credits

यह बी·ए· (सामान्य) संस्कृत का अनिवार्य पाठ्यक्रम है, इसमें चार खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है -

**खण्ड 1 -** संस्कृत पद्य-साहित्य का इतिहास

**खण्ड 2 -** रघुवंशम्

**खण्ड 3 -** शिशुपालवधम्

**खण्ड 4 -** नीतिशतकम्

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन द्वारा आप महाकाव्य एवं खण्डकाव्य की उत्पत्ति तथा विकास को बता सकेंगे। आप संस्कृत साहित्य के प्रमुख महाकवियों जैसे कालिदास, भारवि, श्रीहर्ष, जयदेव आदि के जीवन-वृत्त, कर्तृत्व और शैलीगत वैशिष्ट्य से परिचित होंगे। आप रघुवंश, शिशुपालवध तथा नीतिशतक ग्रन्थों का सामान्य परिचय प्राप्त करेंगे तथा इन ग्रन्थों के चयनित श्लोकों के अध्ययन के पश्चात् आप उनका अर्थ, अनुवाद एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।

## संस्कृत गद्य-साहित्य (BSKC 132) 6 credits

यह बी॰ ए॰ (सामान्य) संस्कृत का अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में तीन खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

**खण्ड 1 -** संस्कृत गद्य-साहित्य का इतिहास **खण्ड 3 -** शिवराजविजय (प्रथम निःश्वास)

**खण्ड 2 -** शुकनासोपदेश

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् आप संस्कृत गद्य-साहित्य के उद्भव तथा प्रमुख गद्य कवियों बाण, दण्डी, सुबन्धु आदि का परिचय प्राप्त करेंगे। आप शुकनासोपदेश एवं शिवराजविजय के अध्ययन से बाण और अम्बिकादत्तव्यास की गद्यशैली से परिचित होंगे तथा इन ग्रन्थों के चयनित गद्यांश भाग का अनुवाद एवं व्याख्या करने में सक्षम होंगे।

## संस्कृत नाटक (BSKC 133) 6 credits

यह बी॰ए॰ (सामान्य) संस्कृत का अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में चार खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

**खण्ड 1** संस्कृत नाट्य-साहित्य का इतिहास **खण्ड 3** प्रतिमानाटकम् (प्रथम और तृतीय अंक)

**खण्ड 2** नाट्यशास्त्रीय प्रमुख पारिभाषिक शब्द **खण्ड 4** अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थ अंक)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् आप संस्कृत नाट्य-साहित्य का उद्भव और विकास, नाट्य भेद, नाट्यशास्त्रीय पारिभाषिक शब्द जैसे नायक, नायिका, सूत्रधार, नान्दी, विदूषक आदि के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। आप प्रतिमानाटक एवं अभिज्ञानशाकुन्तल की कथा, पात्र-परिचय तथा पाठ्यक्रम में निर्धारित अंकों का हिन्दी व्याख्या एवं अनुवाद करने में सक्षम होंगे।

## संस्कृत व्याकरण (BSKC 134) 6 credits

यह बी॰ए॰ (सामान्य) संस्कृत का अनिवार्य पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में तीन खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है :

**खण्ड 1** लघुसिद्धान्तकौमुदी (संज्ञा प्रकरण) **खण्ड 3** लघुसिद्धान्तकौमुदी (विभक्त्यर्थ,
**खण्ड 2** लघुसिद्धान्तकौमुदी (सन्धि प्रकरण) समास और कारक प्रकरण)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् आप वर्णों के उच्चारण-स्थान, अच्, हल् और विसर्ग सन्धि के नियम, समास प्रक्रिया तथा वाक्यों में प्रयुक्त कारक और विभक्ति बताने में समर्थ होंगे।

# समाजशास्त्र

## समाजशास्त्र का परिचय (BSOC 131) 6 credits

यह पाठ्यक्रम समाजशास्त्र विभाग का वृहद् परिचय है। यह इतिहास एवं कुछ मौलिक संकल्पनाओं एवं विषय की चिंताओं से अवगत करवाता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 समाजशास्त्र : विषय क्षेत्र एवं परिप्रेक्ष्य**

इकाई 1 समाजशास्त्र और समाजिक मानवविज्ञान का उद्भव

**खंड 2 समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विज्ञानों से संबंध**

इकाई 2 समाजशास्त्र का सामाजिक मानव विज्ञान से संबंध

इकाई 3 समाजशास्त्र का मनोविज्ञान से संबंध

इकाई 4 समाजशास्त्र का इतिहास से संबंध

इकाई 5 समाजशास्त्र का अर्थशास्त्र से संबंध

इकाई 6 समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान से संबंध

**खंड 3 बुनियादी अवधारणाएं**

इकाई 7 संस्कृति और समाज

इकाई 8 सामाजिक समूह और समुदाय

इकाई 9 संगठन और संस्थाएँ

इकाई 10 प्रस्थिति और भूमिका

इकाई 11 समाजीकरण

इकाई 12 संरचना और प्रकार्य

इकाई 13 सामाजिक नियंत्रण और परिवर्तन

## भारत का समाजशास्त्र (BSOC 132) 6 credits

यह पाठ्यक्रम भारतीय समाज के संस्थानों एवं प्रक्रियाओं की रूपरेखा के बारे में जानकारी देता है। इसका मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को समाजशास्त्रीय दृष्टि से भारतीय समाज को समझने के लिए प्रोत्साहित करना है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 भारत एक बहुल समाज के रूप में**

इकाई 1 भारत में विविधता में एकता

इकाई 2 बदलता भारत

**खंड 2 सामाजिक संरचनाएँ व परिपाटी**

इकाई 3 जनजाति

इकाई 4 जाति

इकाई 5 वर्ग

**खंड 3 सामाजिक संस्थाएँ एवं परिवर्तन**

इकाई 6 परिवार, विवाह तथा नातेदारी

इकाई 7 धर्म

**खंड 4 सामाजिक अस्मिताएँ एवं परिवर्तन**

इकाई 8 दलित आंदोलन

इकाई 9 लैंगिक आधारित आंदोलन

इकाई 10 जनजातीय एवं नृजातीय आंदोलन

इकाई 11 सांप्रदायिकता

इकाई 12 धर्मनिरपेक्षता

## समाजशास्त्रीय सिद्धांत (BSOC 133) 6 credits

इस पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को उन शास्त्रीय सामाजिक विचारों से परिचय करवाया जाएगा जिन्होंने समाजशास्त्र के विषय को समुचित आकार प्रदान किया है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 कार्ल मार्क्स**

इकाई 1 कार्ल मार्क्स के कृति की दार्शनिक पृष्ठभूमि

इकाई 2 द्वंद्वात्मक भौतिकवाद

इकाई 3 वर्ग एवं वर्ग संघर्ष

**खंड 2 ईमाइल दर्खाइम**

इकाई 4 ईमाइल दर्खाइम की दार्शनिक पृष्ठभूमि

इकाई 5 सामाजिक तथ्य

इकाई 6 एकात्मता के स्वरूप

**खंड 3 मैक्स वेबर**

इकाई 7 मैक्स वेबर के कृति की दार्शनिक पृष्ठभूमि

इकाई 8 सामाजिक कार्य एवं आदर्श प्रारूप

इकाई 9 शक्ति एवं प्राधिकार

**खंड 4 कार्ल मार्क्स, ईमाइल दर्खाइम एवं मैक्स वेबर : तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य**

इकाई 10 धर्म

इकाई 11 अर्थव्यवस्था

इकाई 12 समाज, वर्ग तथा एकात्मता

## समाजशास्त्रीय अनुसंधान की विधियाँ (BSOC 134) 6 credits

इस पाठ्यक्रम में समाजशास्त्रीय अनुसंधान पद्धतियों की विभिन्न पद्धतिशास्त्रों के बारे में बताया जाएगा। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनुसंधान की दार्शनिक पृष्ठभूमियों की जटिलताओं से अवगत कराएगा।

### पाठ्यक्रमसंरचना

**खंड 1 सामाजिक अनुसंधान का तर्क**

इकाई 1 सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान

इकाई 2 सिद्धांत एवं अनुसंधान

इकाई 3 सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता के मुद्दे

इकाई 4 प्रतिवर्तिता

**खंड 2 पद्धतिशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य**

इकाई5 तुलनात्मक पद्धति

इकाई 6 ऐतिहासिक पद्धति

इकाई 7 प्रजाति लेखन पद्धति

इकाई 8 व्याख्यात्मक (संरचनात्मक एवं उत्तर आधुनिकतावादी)

इकाई 9 नारीवादी परिप्रेक्ष्य

**खंड 3 खोज की प्रविधियाँ**

इकाई 10 मात्रात्मकता

इकाई 11 गुणात्मकता

इकाई 12 सामाजिक अनुसंधान में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी

## اردو (उर्दू)

**Study of Prose and Poetic Forms in Urdu Literature (BUDC 131) 6 credits**

**اردوادب میں نثری وشعری اصناف کا مطالعہ**

بی۔ اے 1st سمیسٹر کے کورس "BUDC-131 اردو ادب میں نثری وشعری اصناف کا مطالعہ" کی تفصیلات درج ذیل ہیں۔ یہ کورس 6 کریڈٹ کا ہے اس کے 3 بلاک اور 15 اکائیاں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Afsanwi Asnaf**
**Block 2. Ghair Afsanwi Asnaf**
**Block 3. Sheyri Asnaf**

**بلاک 1 افسانوی** اصناف

1 - داستان: تعریف، سماجی محرکات، مختصر تاریخ
2 - ناول: تعریف، مختصر تاریخ، اجزائے ترکیبی
3- افسانہ: تعریف، مختصر تاریخ اور اجزائے ترکیبی
4- اردو ڈرامہ: فن اور روایت

**بلاک 2. غیر افسانوی اصناف**

5- اردو میں مکتوب نگاری
6- اردو میں طنز و مزاح، انشائیہ اور مضمون نگاری
7- اردو میں خاکہ نگاری: فن اور روایت
8- اردو میں سوانح نگاری, خود نوشت اور سفرنامہ کی روایت اور فن

**بلاک 3. شعری اصناف**

9- قصیدہ: تعریف، اجزائے ترکیبی اور مختصر تاریخ
10- مثنوی: تعریف، اجزائے ترکیبی اور مختصر تاریخ
11 - غزل: ہیئت، تعریف اورارتقا
12- مرثیہ: تعریف، اجزائے ترکیبی اور مختصر تاریخ
13- جدید اردو نظم: تعریف اورارتقا
14- اردو کے دیگر شعری اصناف

**Study of Urdu Classical Ghazal (BUDC 132) 6 credits**

کلاسیکی اردو غزل کا مطالعہ

بی۔ اے سیکنڈ سمیسٹر کے کورس" BUDC-132 کلاسیکی اردو غزل کا مطالعہ" کی تفصیلات درج ذیل ہیں۔ یہ کورس 6 کریڈٹ کا ہے اس کے 3 بلاک اور 11 اکائیاں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Ghazal ka Fan Maqbooliat Aur Irteqa**
**Block 2. Darj Zail Shoara ki Ghazal Goyee ki Khosusiaat Part-I**
**Block 3. Darj Zail Shoara ki Ghazal Goyee ki Khosusiaat Part-II**

بلا ک **1**- غزل کا فن، مقبولیت اور ارتقا

1- غزل کی تعریف اور ہیئت
2- اردو غزل کا آغاز اور ارتقا
3- غزل کی مقبولیت کے اسباب
4- اردو غزل کا تہذیبی، سیاسی، سماجی اور اقتصادی پس منظر

بلا ک **2**- د رج ذ یل شعراء کی غزل گوئی کی خصوصیا ت (حصہ اول )

5- ولی د کنی اور سراج اورنگ آبا دی کی غزل گوئی کی خصوصیا ت

1 جسے عشق کا تیر کاری لگے (ولیؔ) متن کی تدریس
2 شغل بہتر ہے عشق بازی کا (ولیؔ) متن کی تدریس
3 اس پھول سوں چہرے کو جو کوئی یاد کرے گا (سراج) متن کی تدریس
4 ہوا ہوں ان دنوں مائل کسی کا (سراج) متن کی تدریس

6- میر تقی میر کی غزل گوئی کے بنیا دی عناصر

1 پتا پتا، بوٹا بوٹا حال ہمارا جانے ہے (میر) متن کی تدریس
2 ہستی اپنی حباب کی سی ہے (میر) متن کی تدریس

7- خواجہ میر درد کی غزل گوئی کی خصوصیا ت .

1 ہم تجھ سے کس ہوس کی فلک جستجو کریں (درد) متن کی تدریس
2 تہمت چند اپنے ذمّے دھر چلے (درد) متن کی تدریس

8- خواجہ حیدر علی آتش کی غزل گو ئی کی خصوصیا ت

1 یہ آرزو تھی، تجھے گل کے روبرو کرتے (آتش) متن کی تدریس
2 دہن پر ہیں ان کے، گماں کیسے کیسے (آتش) متن کی تدریس

بلاک **3**- درج ذیل شعراء کی غزل گوئی کی خصوصیات(حصہ دوم)

9- بہادر شاہ ظفر کی غزل گوئی کی خصوصیات

1 لگتا نہیں ہے دل میرا اجڑے دیار میں (ظفر) متن کی تدریس
2 بات کرنی مجھے مشکل کبھی ایسی تو نہ تھی (ظفر) متن کی تدریس

10 - غالب کی غزل گوئی کی خصوصیا ت

1 سب کہاں؟ کچھ لالہ و گل میں نمایاں ہو گئیں ( غالب) متن کی تدریس
2 آہ کو چاہئے اک عمر اثر ہونے تک (غالب) متن کی تدریس

11- مومن کی غزل گوئی کی خصوصیات

1 اثر اس کو ذرا نہیں ہوتا (مومن) متن کی تدریس
2 غیروں پہ کھل نہ جائے کہیں راز دیکھنا (مومن) متن کی تدریس

## Origin and Development of Urdu Language (BUDC 133) 6 credits

## اردو زبان کا آغاز و ارتقا

بی۔ ا ے تھرڈ سمیسٹر کے کورس" BUDC-133 اردو زبان کا آغاز و ارتقا" کی تفصیلات درج ذیل ہیں۔ یہ کورس 6 کریڈٹ کا ہے اس کے 2 بلاک اور 11 اکائیاں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Part Ist**
**Block 2. Part IInd**

**بلاک 1۔ حصہ اول**

1 ۔ جدید ہند آریائی زبانیں اور اردو کے ابتدائی نقوش
2۔ اردو کی ابتدا اور ارتقا کے سماجی محرکات
3۔ اردو کے ماخذ سے متعلق مختلف نظریات
4۔ اردو کے فروغ میں میں صوفیائے کرام کا حصہ
5۔ اردو اور کھڑی بولی کا رشتہ
6 اردو ہندی اور ہندوستانی

**بلاک 2۔ حصہ دوم**

7 ۔ اردو زبان کے اوّلین نقو ش اور دکنی اردو
8۔ شمالی ہند میں اردو نثر اور شاعری کا ارتقا
9۔ دہلی میں اصلاح زبان کی کو شش (ایہام گوئی اور ترکِ ایہام گوئی کی تحریک ۔ مرزا مظہر اورشاہ حا تم کی خد ما ت ، دیوان زادہ کے دیباچے کی تاریخی و لسانی اہمیت )
10۔ لکھنؤ میں اصلاح زبان کا عمل ناسخ اور انکے شاگردوں کی کاوشیں
11۔ اردو زبان کی مقبولیت کے اسباب اور موجودہ صورتِ حا ل

## Study of Urdu Nazm (BUDC 134) 6 credits

## اردو نظم کا مطالعہ

بی۔ ا ے 4th سمیسٹر کے کورس" BUDC-134 اردو نظم کا مطالعہ" کی تفصیلات درج ذیل ہیں یہ کورس 6 کریڈٹ کا ہے اس کے 3 بلا ک اور 12 اکائیا ں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Urdu Nazm ka Fan Aqsam Aur Khosusiaat**
**Block 2. Darj Zail Shoara ki Nazm Goyee ki Khosusiaat Part-I**
**Block 3. Darj Zail Shoara ki Nazm Goyee ki Khosusiaat Part-II**

**بلاک1۔ اردونظم کافن،اقسام اورخصوصیات**

1۔ اردو نظم کی تعریف، اقسام اور خصوصیات

2- اردو نظم کا آغاز و ارتقاء

3- اردو نظم کا تہذیبی و سماجی پس منظر

4- اردو نظم اور حب الوطنی

بلا ک 2- درج ذیل شعراء کی نظم گوئی کی خصوصیات (حصہ اول)

5- نظیر اکبر آبادی کی نظم نگاری،مفلسی، آدمی نامہ (نظیر اکبر آبادی) متن کی تدریس

6- محمد حسین آزاد کی نظم نگاری (محمد حسین آزاد) متن کی تدریس

7- الطاف حسین حالی کی نظم نگاری،برکھا رُت، مرثیہ دلّی (حالی) متن کی تدریس

بلا ک 3- درج ذیل شعراء کی نظم گوئی کی خصوصیات (حصہ دوم)

8- اکبر الہ آبادی کی نظم نگاری، جلوۂ دربارِ دلّی، مستقبل (اکبر) متن کی تدریس

9- اسماعیل میرٹھی کی نظم نگاری (اسماعیل میرٹھی) متن کی تدریس

10- پنڈ ت برج نرائن چکبست کی نظم نگاری

رامائن کا ایک سین، مرثیہ بال گنگا دھر تلک (چکبست) متن کی تدریس

11- علامہ اقبال کی نظم نگاری خضرِ راہ، نیا شوالہ (اقبال) متن کی تدریس

12. جوش ملیح آبادی کی نظم نگاری کسا ن، ا لبیلی صبح (جوش) متن کی تدریس

# DETAILS OF DISCIPLINE SPECIFIC COURSES

## मानवविज्ञान

### अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान (BANE145) 6 credits

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान, मानव वैज्ञानिक तथ्यों, दृष्टिकोण, सिद्धांतों और सामाजिक चिंताओं को पहचानने, मूल्यांकन और हल करने के तरीकों से संबंधित है। यह मानवविज्ञान का व्यावहारिक पहलू है जिसमें लोगों और संस्थानों की आवश्यकताओं ,उनकी समस्याओं से जुड़ी परिस्थितियों को दूर करने के लिए विभिन्न सिद्धांतों और विधियों का उपयोग किया जाता है। यही कारण है कि आज के समय में मानव विज्ञान का यह उप–क्षेत्र काफी प्रासंगिक हो गया है और अब इसे मानव विज्ञान की मुख्य शाखाओं में से एक माना जाता है।

**पाठ्यक्रम विवरणः** यह छह क्रेडिट का पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम को चार खंडों में विभाजित किया गया है। पहला खंड शिक्षार्थी को मानवविज्ञान प्रयुक्त करने के लिए एक संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण प्रदान करता है। इसमें अध्ययन के दृष्टिकोण और नैतिक मानवविज्ञान के अभ्यास में शामिल नैतिक चिंताओं का परिचय मिलता है। दूसरे और तीसरे खंड में बड़े पैमाने पर विभिन्न क्षेत्रों के बारे में सूचना है जिसमें मानवविज्ञान को लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए व्यावहारिक रूप से कैसे लागू किया जा सकता है। अंतिम खंड शिक्षार्थी को मानवविज्ञान में उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और तकनीकों के प्रयोग से कैसे क्षमता का निर्माण या विकास किया जा सकता है। वास्तविक स्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए कैसे विभिन्न परिस्थितियों में काम करते हैं और कैसे नागरिक समाज (सिविल सोसाइटी) और सरकार के साथ मिलकर मानवविज्ञानी ईमानदारी से रणनीति बना सकते हैं जो मानव समाज की उन्नति के लिए काम कर सकते हैं।

**पाठ्यक्रम वांछनीयताः** एस.ओ.एस.एस के बी. ए सामान्य कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी पांचवे सत्र में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सत्रीय–कार्य (असाइनमेंट) और सत्रांत–परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

**पाठ्यक्रम संरचना**

**खंड 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का परिचय**

इकाई 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का इतिहास

इकाई 2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के अध्ययन के दृष्टिकोण

इकाई 3 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता

**खंड 2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के विभिन्न क्षेत्र -I**

इकाई 4 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और विकास

इकाई 5 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और बाजार

इकाई 6 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और स्वास्थ्य

इकाई 7 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और शरीर का मूल्यांकन

**खंड 3 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के विभिन्न क्षेत्र -II**

इकाई 8 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और फोरेंसिक मानवविज्ञान

इकाई 9 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और मल्टीमीडिया

इकाई 10 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और आपदा प्रबंधन

**खंड 4 व्यवहारिक रूप से अनुप्रयुक्त ज्ञान का उपयोग**

इकाई 11 उपकरण और तकनीक

इकाई 12 क्षमता विकास

इकाई 13 नागरिक समाजों और राज्य में भागीदारी

## देशज लोगों का मानवविज्ञान (BANE 146) 6 credits

विश्व के 90 विभिन्न देशों में फैले हुए 37 करोड़ से अधिक की आबादी वाले देशज लोग लगभग 5,000 अलग–अलग विविधताओं और विशिष्टताओं से युक्त हैं। भारत में ही 10.43 करोड़ जनसंख्या वाले 705 जातीय समूहों को अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित किया गया है, जिन्हें देश के विभिन्न हिस्सों में फैले देशज समुदायों के रूप में जाना जाता है। 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में देशज लोग 8.6% तक शामिल है। देशज समुदायों का अध्ययन मानवविज्ञान का एक प्रमुख केंद्रबिंदु रहा हैं क्योंकि यह एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में उभरा है। मानवविज्ञानियों ने देशज समुदायों के साथ काम करके अपना पेशेवर जीवन बिताया है और उनकी संस्कृति के बारे में लिखकर इसे मानवशास्त्रीय अध्ययन के सार्वजनिक ज्ञान क्षेत्र के रूप में निर्मित किया है।

**पाठ्यक्रम विवरण**: इस पाठ्यक्रम में चार खंड हैं। पहला खंड भारत और विश्व भर में देशज लोगों और उनके वितरण की अवधारणा प्रस्तुत करता है। इसमें देशज लोगों के वर्गीकरण की भी चर्चा है। दूसरा खंड भारत के स्वदेशी लोगों के बीच विभिन्न शारीरिक और जैविक विशेषताओं की समझ प्रस्तुत करता है। तीसरे खंड के अंतर्गत शिक्षार्थी को दिखाया जाएगा कि कैसे संस्कृति बदली है और स्वदेशी/देशज लोगों के बीच सामाजिक परिवर्तन हुआ है। यह भारत में जनजाति–जाति की निरंतरता पर भी चर्चा करता है। अंतिम और चौथे खंड में देशज ज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के विभिन्न तरीकों को विस्तार से शामिल किया गया है। इस खंड में वन नीति और जनजातीय अधिकारों को भी ध्यान में रखा गया है।

**पाठ्यक्रम वांछनीयता:** एस.ओ.एस.एस के बी.ए सामान्य कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी छठे सेमेस्टर में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया में सत्रीय–कार्य (असाइनमेंट) और सत्रांत–परीक्षा का अंकन शामिल होगा।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 देशज लोगों का परिचय**

इकाई 1 देशज लोगों की अवधारणा, अर्थ और परिभाषा

इकाई 2 देशज लोगों का वैश्विक वितरण

इकाई 3 भारत के मूल निवासी

इकाई 4 देशज लोगों का वर्गीकरण

**खंड 2 देशज समुदायों में शारीरिक और जैविक विविधता**

इकाई 5 मुख्य आकृति विज्ञान और मानवमितिय विशेषताएं

इकाई 6 सीरम एवं जैव–रासायनिक भिन्नताएं

इकाई 7 डर्माटोग्लिफिक्स और अन्य जैविक लक्षण

**खंड 3 देशज समुदायों में सांस्कृतिक परिवर्तन**

इकाई 8 सांस्कृतिक संपर्क और परिवर्तन

इकाई 9 शिक्षा और सामाजिक रूपांतरण

इकाई 10 भारत में जनजाति–जाति निरंतरता

**खंड 4 देशज ज्ञान और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन**

इकाई 11 देशज ज्ञान और प्राकृतिक संसाधन

इकाई 12 प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की देशज प्रणाली

इकाई 13 वन नीति और जनजातीय अधिकार

## भारतीय अर्थव्यवस्था - I (BECE 145) 6 credits

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 स्वतंत्रता उपरांत आर्थिक विकास**

इकाई 1 स्वतंत्रता के समय अर्थव्यवस्था

इकाई 2 विकास विमर्श

इकाई 3 संरचनात्मक परिवर्तन

इकाई 4 संसाधन और संरोध

**खंड 2 जनसंख्या एवं मानवविकास**

इकाई 5 जनांकीय विशेषताएँ

इकाई 6 शिक्षा क्षेत्र

इकाई 7 स्वास्थ्य और पोषण

**खंड 3 संवृद्धि और वितरण**

इकाई 8 गरीबी

इकाई 8 विषमता

इकाई 10 रोजगार और बेरोजगारी

**खंड 4 अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएं**

इकाई 11 संवृद्धि और संरचनात्मक परिवर्तन

इकाई 12 सामाजिक एवं आर्थिक विकास

इकाई 13 व्यापार और भुगतान शेष

इकाई 14 प्रशासन और संस्थान

## भारतीय अर्थव्यवस्था-II (BECE 146) 6 credits

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 समष्टि आर्थिक नीतियाँ**

इकाई 1 मौद्रिक नीति

इकाई 2 राजकोषीय नीति

इकाई 3 व्यापार और निवेश नीति

इकाई 4 श्रम कानून और नियमन

**खंड 2 कृषक क्षेत्र**

इकाई 5 कृषक क्षेत्र का निष्पादन

इकाई 6 कृषिक संबंध और बाजार सहलग्नताएं

इकाई 7 पूंजी निर्माण ओर उत्पादिता

इकाई 8 कृषि नीति

**खंड 3 औद्योगिक क्षेत्र**

इकाई 9 औद्योगिक संवृद्धि और नीति

इकाई 10 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम

**खंड 4 सेवा क्षेत्र**

इकाई 11 सेवा क्षेत्र के अभिलक्षण

इकाई 12 सेवा क्षेत्र विषयक नीतिगत मुद्दे

## ENGLISH

### Understanding Prose (BEGE 141) 6 credits

In this course we will deal with various forms of fictional and non fictional prose like short stories, essays, letters, travelogues, biographies and autobiographies. Through these texts we will attempt to look at literary prose and try and understand what constitutes its 'literariness.' The aim would be to enjoy the full range of aesthetic experience that literature has to offer.

### Understanding Drama (BEGE 142) 6 credits

This course will introduce you to the origins of Drama. It will further dwell on the growth and development of Drama. Different types of Drama that existed in various stages in history will also be discussed. The course will explore representative works by well known dramatists from different periods and engage students in an in-depth analysis and critical reading of these dramatic texts. In the plays in this course, emphasis is given to structure, technique, dialogue, themes, symbols, motifs and character development.

### Understanding Poetry (BEGE 143) 6 credits

The course will begin by discussing forms and elements of Poetry. The learners will be introduced to poetic techniques with the aim to enable them to critically analyse and gain a deeper appreciation of the poems. The course will discuss themes, strategies and issues that are relevant to the poems discussed in the course. The poems in the course will represent various cultures and ethnic identity and include gender and different points of view.

### Soft Skills (BEGE 145) 6 credits

Often people are very sound in their professional skills but are failures at their work place. This is more to do with one's attitude, behaviour and personality than with any specific technical knowledge. Soft skills play an important role for accomplishment in life and at the work place. This includes self-reflection, adaptability, team work, emotional intelligence, having an appreciative disposition and developing leadership and empathetic qualities. Enhancing these qualities will improve one's personality and lead to success at the work place and more importantly in life. This course Soft Skills is of six credits and contains four blocks.

## अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य (BHDE 141) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है।

- **विमर्शों की सैद्धांतिकी :**
  - क) दलित विमर्श : अवधारणा और आंदोलन, फुले, अम्बेडकर, लोहिया आदि
  - ख) स्त्री विमर्श : अवधारणा और मुक्ति आंदोलन (पाश्चात्य और भारतीय संदर्भ)
  - ग) आदिवासी विमर्श : अवधारणा और आंदोलन
- **विमर्शमूलक कथा साहित्य :**
  - क) ओमप्रकाश वाल्मीकि – सलाम
  - ख) हरिराम मीणा– धूणी तपे तीर (पृष्ठ संख्या : 158 – 167)
  - ग) सुमित्रा कुमारी सिन्हा– व्यक्तित्व की भूख
- **विमर्शमूलक कविता :**
  - क) दलित कविता : अछूतानंद (दलित कहाँ तक पड़े रहेंगे), माता प्रसाद (सोनवा का पिंजरा), कुसम वियोगी (श्रम की रेखाएं)
  - ख) स्त्री कविता : 1. कीर्ति चौधरी (सीमा रेखा) 2. कात्यायनी (सात भाइयों के बीच चंपा)
  - ग) अनामिका (बेजगह) निर्मला पुतुल (उतनी दूर मत ब्याहना बाबा)
- **विमर्शमूलक अन्य गद्य विधाएं :**
  - क) प्रभा खेतान : अन्या से अनन्या, पृष्ठ 28–42 तक
  - ख) तुलसीदास : मुर्दहिया (चौधरी चाचा से प्रारंभ, पृष्ठ संख्या 125 से 135)
  - ग) महादेवी वर्मा : स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न
  - घ) डॉ. धर्मवीर : अभिशप्त चिंतन से इतिहास चिंतन की ओर

## राष्ट्रीय काव्यधारा (BHDE 142) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी की 'राष्ट्रीय काव्यधारा' से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम में संकलित कवियों के विशेष महत्व को भी रेखांकित किया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' और श्यामनारायण पाण्डेय की चयनित कविताओं और काव्यांशों का अध्ययन कराया जाएगा।

## प्रेमचंद (BHDE 143) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में प्रेमचंद के उपन्यास, पाँच कहानियों, नाटक और निबंध का अध्ययन कराया जाएगा :

- उपन्यास – सेवासदन
- नाटक – कर्बला

- निबंध – साहित्य का उद्देश्य
- कहानियां – पूस की रात, शतरंज के खिलाड़ी, पंच परमेश्वर, ईदगाह, दो बैलों की कथा।

## छायावाद (BHDE 144) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी की 'छायावादी कविताओं' से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम में संकलित कवियों के विशेष महत्व को भी रेखांकित किया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा की चयनित कविताओं का अध्ययन कराया जाएगा।

## कबीर (BHDE 145) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इसमें भक्तिकालीन कवि कबीर का अध्ययन कराया जाएगा। कबीर भक्तिकाल के प्रमुख निर्गुण संत कवि हैं। इनकी कविताओं में निर्गुण भक्ति के विभिन्न आयाम मिलते हैं। इस पाठ्यक्रम में कबीर की साखियों और पदों का अध्ययन कराया जाएगा जिनका चयन 'कबीर ग्रंथावली' (संपादक : श्यामसुंदर दास) से किया जाएगा। पाठ्यक्रम में कबीर के युग और जीवन, साहित्य, दर्शन, भाषा से संबंधित इकाइयां भी होंगी।

## छायावादोत्तर हिंदी कविता (BHDE 146) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी की 'छायावादोत्तर हिंदी कविता' से परिचित कराना है। इस पाठ्यक्रम में संकलित कवियों के विशेष महत्व को भी रेखांकित किया जाएगा। इस पाठ्यक्रम में केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, रामधारी सिंह 'दिनकर', माखनलाल चतुर्वेदी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', भवानी प्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और केदारनाथ सिंह की चयनित कविताओं का अध्ययन कराया जाएगा।

## चीन का इतिहास : 1840–1978 (BHIE 141) 6 credits

यह पाठ्यक्रम चीन के आधुनिक इतिहास और विश्व से इसके संबंधों की सामान्य प्रस्तुति करता है। चीन के इतिहास के इस सर्वेक्षण की शुरुआत में अफ़ीम युद्ध, पश्चिमी साम्राज्यवाद से इसकी भिंड़त, चीन में सुधार एवं विद्रोह, राष्ट्रवाद एवं सांस्कृतिक आंदोलन का उदय, वर्ष 1949 में चीनी जनवादी गणराज्य की आधारशिला और अंत में वर्ष 1949 के बाद की चीन के प्रमुख विकास पर प्रकाश डाला गया है। पाठ्यक्रम में कालानुक्रम आधार पर आधुनिक चीन के प्रमुख विकास को दर्शाया गया है। इसके आरंभ में, अफीम युद्ध, ताइपिंग विद्रोह, बॉक्सर विद्रोह, किंग राजवंश का पतन, 1911 की चीन की क्रांति, ''नव संस्कृति'' आंदोलन, राष्ट्रवाद का उदय, जापान के विरुद्ध युद्ध और अंत में चीन में कम्युनिस्ट आंदोलन और उसके बाद की अवधि आदि विषयों से आत्मसात् कर, आप आधुनिक चीन को एक नयी शक्ल देने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाओं और शक्तियों को भलीभाँति समझने के योग्य बन सकेंगे।

### पाठ्यक्रम संरचना

इकाई 1 चीन : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इकाई 2 चीन में अफीम युद्ध

इकाई 3 असमान संधि व्यवस्था

इकाई 4 ताइपिंग विद्रोह

इकाई 5 बॉक्सर विद्रोह

इकाई 6 आत्म सुदष्ढ़कारी आंदोलन और शत दिवसीय सुधार

इकाई 7 1911 की चीन की क्रांति

इकाई 8 1911 की विफलता और गोमिनडंग का आविर्भाव (1911-21)

इकाई 9 नव सांस्कषकि आंदोलन (1911 के बाद से)

इकाई 10 विदेशी निवेश और नव वर्ग का उदय

इकाई 11 राष्ट्रवाद का उदय

इकाई 12 चीन की कम्युनिस्ट पाटी का गठन

इकाई 13 नियंत्रण के लिए संघर्ष : दि कम्युनिस्ट पार्टी और गोमिनडंग

इकाई 14 चीन और जापान से युद्ध

इकाई 15 चीन की क्रांति

इकाई 16 चीन : क्रांति से सुधार तक

## पर्यावरण का इतिहास (BHIE 142) 6 credits

पाठ्यक्रम, पर्यावरण के ऐतिहासिक आयामों के बारे में विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें हम छात्रों को पर्यावरण के इतिहास में काल विभाजन के विषय और फिर प्राचीन, मध यकालीन और आधुनिक युग में पर्यावरणीय चिंताओं और मुद्दों के विकास के बारे में बताएंगे। उपनिवेशवाद और पर्यावरण के संबंध की चर्चा भी सम्मिलित है। पाठ्यक्रम मुख्य रूप से विकास और पर्यावरण के प्रश्न जैसे समकालीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, पर्यावरणीय मुद्दों की रूपरेखा तैयार करने में जेंडर (लिंग भेद) की भूमिका पर भी प्रकाश डालता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

इकाई 1 इतिहास में पर्यावरणीय मुद्दों का अध्ययन : परिप्रेक्ष्य और काल-विभाजन पर एक टिप्पणी

इकाई 2 पर्यावरण एवं प्रारंभिक समाज-I शिकार, भोजन संग्रहण आधारित और खानाबदोश सभ्यताएँ

इकाई 3 पर्यावरण एवं प्रारंभिक समाज-II नदी घाटी सभ्यताएँ

इकाई 4 भारत में मध्यकालीन युग में पर्यावरणीय मुद्दे

इकाई 5 प्रारंभिक आधुनिक समाज में पर्यावरणीय मुद्दे

इकाई 6 भारतीय दर्शन एवं पर्यावरण

इकाई 7 युगों से संरक्षण का व्यवहार

इकाई 8 उपनिवेशवाद और पर्यावरण– हरित साम्राज्यवाद

इकाई 9 पर्यावरण एवं स्वास्थ्य आधारित परिचर्चा

इकाई 10 उत्तर औपनिवेशिक समाजों में विकास एवं पर्यावरणीय मुद्दे

इकाई 11 लैंगिक-भेद, सामाजिक समूह एवं पर्यावरण

इकाई 12 पर्यावरणीय आंदोलन की रूपरेखा निर्माण में संयुक्त राष्ट्र संघ, गैर-सरकारी संस्थाओं (ग्रीनपीस) आदि की भूमिका

इकाई 13 वन अधिकार अधिनियम, 2006

इकाई 14 जल एवं खनिज पदार्थों संबंधी मुद्दे

## आधुनिक पूर्वी एशिया का इतिहास : जापान (1868 से 1945) (BHIE 143) 6 credits

यह पाठ्यक्रम 19वीं शताब्दी के अंत में साम्राज्यवादी शक्तियों से प्राप्त चुनौतियों के मद्देनज़र आधुनिक समय में जापान के उदय पर जानकारी देता है। जापान ने शीघ्र ही स्वयं को आर्थिक दृष्टि से आधुनिक बना लिया और वह पूर्व साम्राज्यवादी शक्तियों को चुनौती देते हुए, एक प्रमुख सैन्य शक्ति के रूप में उभरा। यह पाठ्यक्रम जापान की विकास प्रक्रिया, इसके साम्राज्यवादी विस्तार और द्वितीय विश्व युद्ध में इसकी सहभागिता और अंततः मित्र राष्ट्रों से इसकी पराजय और अधिग्रहण जैसे विषयों की चर्चा पर आधारित है।

### पाठ्यक्रम संरचना

इकाई 1 आधुनिक जापान की बुनियाद

इकाई 2 प्रारंभिक आधुनिकता : तोकुगावा काल 1600–1868

इकाई 3 मीजी पुनर्स्थापना और आधुनिक जापान का निर्माण

इकाई 4 मीजी राजनीतिक व्यवस्था

इकाई 5 सभ्यता एवं ज्ञानोदय : नव सामाजिक व्यवस्था का निर्माण

इकाई 6 मीजी औद्योगिकीकरण एवं विकास

इकाई 7 अन्य स्वर : मीजी नीतियों का विरोध

इकाई 8 मीजी जापान : अंतर्राष्ट्रीय समानता की तलाश

इकाई 9 आर्थिक शक्ति के रूप में जापान का उदय

इकाई 10 राजसी लोकतंत्र एवं राजनीतिक दल

इकाई 11 सैन्यवाद का उदय

इकाई 12 जापान : पश्चिम के विरुद्ध उपनिवेश-विरोधी आंदोलनों का समर्थन

इकाई 13 जापान का औपनिवेशिक साम्राज्य और इसका पतन

इकाई 14 जापान : पराभव और मित्र-राष्ट्रों द्वारा अधिग्रहण

## भारत में इतिहास लेखन की परंपरा (BHIE 144) 6 credits

इस पाठ्यक्रम का मुख्य केंद्र बिंदु विविध शैलियों के ऐतिहासिक लेखन में निहित ऐतिहासिक चेतना को अभिव्यक्त करना है। ऐतिहासिक चेतना समय के साथ बदलती है। हमारा यह पाठ्यक्रम भारतीय इतिहास के आदि से आरंभिक मध्यकालीन, मध्यकालीन और आधुनिक काल के उदाहरणों की चर्चा करते हुए, लौकिक आयामों को संबोधित करता है। पाठ्यक्रम में प्रारंभिक मध्यकालीन युग में समय-समय पर उभरने वाली क्षेत्रीय परंपराओं की भी चर्चा की गई है। ऐतिहासिक चेतना समाज और सामाजिक परिवर्तनों में कैसे भिन्न-भिन्न स्वरूपों में परिलक्षित होती है इसकी चर्चा भी इस पाठ्यक्रम में की गई है। भूतकाल कैसे संप्रेषित होता है; भूतकाल, वर्तमान को कैसे दर्शाता है; वैधता और निरंतरता के प्रश्न; मिथकों की शुरुआत और वैधीकरण कुछ ऐसी विषय-वस्तुएँ हैं, जिन्हें पाठ्यक्रम चर्चा में सम्मिलित किया गया है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 अतीत और इतिहास**

इकाई 1 इतिहास क्या है?

**खंड 2 प्रारंभिक भारत में इतिहास लेखन**

इकाई 2 मिथक, *दान-स्तुति, गाथा, आख्यान* तथा महाकाव्य और *इतिहास पुराण* परंपरा में संक्रमण

इकाई 3 बौद्ध एवं जैन परंपराएँ

इकाई 4 *कथा* एवं *चरित*

इकाई 5 शिलालेख और प्रशस्ति

इकाई 6 कल्हण

**खंड 3 दक्षित भारत में इतिहास लेखन**

इकाई 7 संगम साहित्यिक परंपरा

इकाई 8 *आमुक्तमाल्यद* और *रायावाचकामु*

**खंड 4 इतिहास लेखन की क्षेत्रीय परंपरा**

इकाई 9 संत चरित लेखन और भक्ति परंपराएँ

इकाई 10 वंशावली और पारिवारिक इतिहास

इकाई 11 *बाखर* और *बुरुंजी*

**खंड 5 इतिहास लेखन की इंडो-पर्शियन परंपरा**

इकाई 12 जियाउद्दीन बरनी

इकाई 13 मुहम्मद क़ासिम फिरिश्ता

इकाई 14 अबुल फज़ल

**खंड 6 भारत का विदेशियों द्वारा अवलोकन**

इकाई 15 यूनानी, चीनी, अरबी और फारसी लेखन

इकाई 16 यूरोपीय यात्रा वृत्तांत

**खंड 7 औपनिवेशिक भारत में इतिहास लेखन**

इकाई 17 औपनिवेशिक इतिहास लेखन

इकाई 18 राष्ट्रवादी लेखन

**खंड 8 स्वातंत्रोत्तर इतिहास लेखन**

इकाई 19 मार्क्सवादी और सबआल्टर्न्स

इकाई 20 इतिहास लेखन में उभरती विषय-वस्तुएँ

## यूरोप के इतिहास के कुछ पहलू (1789-1945) (BHIE 145) 6 credits

यह पाठ्यक्रम आधुनिक यूरोप के इतिहास के प्रमुख विकासों की विस्तृत समझ प्रदान करता है। पाठ्यक्रम के आरंभ में फ्राँसीसी क्रांति और अंत में द्वितीय विश्व युद्ध की चर्चा सम्मिलित है। यूरोप में फ्राँसीसी क्रांति के बाद भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में क्रमवार तरीके से बड़े विकास हुए हैं और इस पाठ्यक्रम के माध्यम से हमने न सिर्फ प्रमुख यूरोपीय देशों के राजनीतिक विकासों से बल्कि अर्थव्यवस्था और साथ ही, वैचारिक स्तर के विकासों से आपको रू-ब-रू कराने का प्रयास किया है।

**पाठ्यक्रम संरचना**

इकाई 1 आधुनिक राज्य और राजनीतिक संस्कृति

इकाई 2 जनता द्वारा मूलगामी आंदोलन

इकाई 3 आधुनिक फ्राँसीसी राज्य का गठन

इकाई 4 बौद्धिक प्रवृत्तियाँ

इकाई 5 यूरोपीय राजनीतिक लामबंदी (1830-1848)

इकाई 6 नव-राजनीतिक व्यवस्थाएँ

इकाई 7 औद्योगिकीकरण 1750–1850

इकाई 8 औद्योगिकीकरण 1851–1914

इकाई 9 राष्ट्रवाद और राष्ट्र राज्य

इकाई 10 उदारवादी लोकतंत्र

इकाई 11 समाजवादी विश्व

इकाई 12 उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद

इकाई 13 फासीवाद और नाजीवाद का उदय

इकाई 14 दो विश्व युद्ध

## रैखिक बीज गणित (BMTE 141) 6 credits

यह पाठ्यक्रम आपको गणित के एक रोमांचक भाग से अवगत करता है जिसके अनुप्रयोग गणित के साथ ही साथ डेटासाइंस और भौगोलिक स्थिति प्रणाली जैसे कुछ क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं।पाठ्यक्रम सामग्री पाँचमुद्रित पुस्तिकाओं, जिन्हेंइग्नू भाषा मेंब्लाक कहते हैं, में विभाजित है।

इस पाठ्यक्रम की शुरुवात मैं हम आव्यूह कि चर्चाकरेंगे। फिर हम आव्यूह के अध्ययन के एक आधारभूत उद्देश्य, सदिश समष्टि, को परिभाशित करेंगे। आपको यह पाठ्यक्रम अच्छी तरह समझ में आये, इसके लिए हम ज्यामिति के उदाहरण भी देंगे।

रैखिक बीजगणित का एक महत्वपूर्ण अनुप्रयोग युगपत् रैखिक समीकरणों को हल करना और इस से हम आपको गौसीय निराकरण विधि कि चर्चा द्वारा अवगत कराएंगे। यह चर्चा हमें सहज रूप से आव्यूहों का पंक्ति समानयन और पंक्ति सोपानक रूप की चर्चा की ओर ले जाती है। फिर हम पंक्ति समानयन का प्रयोग आव्यूह की जाति और आव्यूह का व्युत्क्रम निकालने के लिए करंगे।

इसके बाद हम रैखिक संकारकों की चर्चा पर जाते हैं जो कि सदिश समष्टि पर परिभाशित कुछ अच्छे गुणधर्म वाले फलन होते हैं। इस चर्चा के दौरान हम आपको रैखिक रूपांतरण के आइगेन सदिश और आइगेमान से भी परिचित कराएंगे। हम रैखिक रूपान्तरण के अभिलक्षणिक और अल्पिश्ट बहुपद के साथ साथ रैखिकबीज गणित के एक मूलभूत परिणाम, कैलीहामिलटन प्रमेय की चर्चा भी करेंगे।

अंत में हम कुछ विशेष सदिश समष्टियों, जिन्हे आंतर गुणंफल समष्टि कहते है पर चर्चा करेंगे। इन समष्टियों की आदिष गुणंफलन सिसं क्रिया है, जिसको आंतर गुणन फल कहते हैं। हम इन समष्टियों पर कुछ विशेष रैखिक संकारक का अध्ययन करेंगे, जो आंतर गुणन फल के सापेक्ष कुछ विशेष गुण्धर्मों को संतुष्ट करते हैं। इस में हम स्वसंलगन, हर्मिटि और एकिक संकारक की भी चर्चा करेंगे। अंत में हम आंतर्गुणनफल के गुण्धर्मो को प्रयोग करके द्विघाति समघात को वर्गीकरण करेंगे। पाठ्यक्रम का पाठ्यविवरण विस्तार से निम्नलिखित हैः

### पाठ्यक्रमसंरचना

**खंड 1 सदिशसमष्टियां**

इकाई 1 आव्यूह, आव्यूहों के उदाहरण, गुणन, अदिशगुणनफल, परिवर्तऔरसंयुग्मी, सममित, विशमसममित, हर्मिटिआव्यूह, आव्युहगणन, रैखिकसमीकरणों के आव्यूह रूप

इकाई 2 सदिशसमष्टियां, समतल और आकाषीय सदिश, उदाहरणों के रूप में आव्यूह

इकाई 3 उपसमष्टियां, सदिशों की विस्तृति, उपसमष्टियों का सम्मिलन, प्रतिच्छेद, योगफल और अनुलोम योगफल

**खंड 2 अधार एवंविमा**

इकाई 4 रैखिक स्वतंत्रता, रैखिक स्वतंत्रता के बारे में कुछ प्रारंभिक परिणाम, आधार, विमा, की उपास्मश्टियों का बिंदु, रेखा और समतल के रूप में ज्यामितीय वर्णन।

इकाई 5 प्रारंभिक पंक्ति संक्रिया, प्रारंभिक आव्यूह, पंक्तिसोपानक रूप, रैखिक समीकरणों के निकाय के लिए गौसीय निराकरण, पंक्तिसमानयन का प्रयोग से रैखिकतः स्वतंत्र समष्टि को पूरा करके आधार बनाना, आव्यूह का व्युत्क्रम, पंक्तिसमानयन द्वाराआव्यूह का व्युत्क्रम, प्रारम्भिक आव्यूहव्युक्रमणीय हैऔर उन के व्युत्क्रम भी प्रारम्भिक आव्यूह होतेहैं, व्युत्क्रमणिय आव्यूहों का लक्षण–वर्णन

इकाई 6 पंक्तिसमानय द्वारा उपसमष्टियों के आधार और विमाज्ञात करना, योग और प्रतिच्छेद की वीमा।

इकाई 7 पंक्तिजाति, स्तंभ जाति और उन की बराबरी, पंक्ति समानयन द्वारा जाति निकालना, पंक्तिसमानयन द्वारा असमघात रैखिक समीकरण निकाय के सुसंगति के मापदंड।

**खंड 3 रैखिक रूपांतरण**

इकाई 8 रैखिक रूपांतरण, रैखिक संकारक और रैखिक फलनक, रैखिक रूपांतरण का परिसर और अष्टि, एकैकि और आच्छादिसंकारक, जाति और शून्यता, जाति शुन्यताप्रमेय, पंक्तिसमानयन द्वाराआव्यूह के अष्टि और परिसर के अधारनिकालना।

इकाई 9 संयोजन सहित रैखिक संकारकों का बीजगणित, सदिश समष्टि है, विभाग समष्टि, समकारिता का मूलप्रमेय।

इकाई 10 रैखिकसंकारक का आव्यूह, रैखिकसंकारकों के संयोजन का आव्यूह, आधारपरिवर्तन का आव्यूह, समरूप आव्यूह।

**खंड 4 आइगेमान और आइगेन सदिश**

इकाई 11 सारणिक की परिभाषा, सारणिक के गुण, आव्यूह का सारणिक कोटि, साराणिक कोटि जाति के बराबरहोती है(बिना उपपत्ति), आव्यूह का सहखणडज, आव्यूह का व्युत्क्रम, रैखिक समीकरण निकाय(क्रेमर विधि)।

इकाई 12 बीजीय आइगेमान समस्या, अभिलक्षणिक बहुपद, आव्यूह और रैखिकसंकारकों के आइगेमान और आइगेन सदिश ज्ञात करना, वर्गीकरण, वर्गीकरण के लिए मापदण्ड, पुनरावष्त मूल सहित संकारकों के उदाहरण।

इकाई 13 अल्पिश्टबहुपद , यदि अल्पिश्ट बहुपद के अलग मूल होते हैं तो आव्यूह वर्गी करणिय है' का प्रयोग (बिना उपपत्ति), संकारक का अभिलक्षणिक बहुपद, केलीहैमिल्टनप्रमेय (बिना उपपत्ति), केलीहैमिल्टनप्रमेय द्वारासंकारक का व्युत्क्रमज्ञातकरना।

**खंड 5 आंतरगुणनफलन**

इकाई 14 आंतरगुणनफलन, मानक, लांबिकता, ग्रामष्मिटलांबिकीकरणविधि।

इकाई 15 आंतर गुणनफलन समष्टियों के फलनक, संकारक के संलग्न, स्वसंलग्न संकारक, ऐकिकसंकारक, हर्मिटिसंकारक. हर्मिटिसंकारक/ आव्यूह के आइगेमान, हर्मिटिआव्यूहों के आइगेमानों की लाम्बिकता।

इकाई 16 षांकव और षांकव के मानक समीकरण की परिभाषा, आव्यूह के रूपमें षांकव का निरुपण, आइगेनमान और आइगेन सदिश द्वार षांकव का निर्धारण, लाम्बिक विहित समानयन, प्रासामन्य विहित समानयन, अभिकलनात्मक उदाहरण।

## संख्यात्मक विश्लेषण (BMTE 144) 6 credits

संख्यात्मक विश्लेषण के इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के लिए कलन के पाठ्यक्रम बी.एम.टी.सी.-131 की जानकारी होना आवश्यक है। इस पाठ्यक्रम में रैखिक बीजगणित के अनेक परिणामों का भी प्रयोग किया गया है। जहां पर भी आवश्यकता पड़ी है इन परिणामों के कथन दे दिए गए हैं। यदि आप इन परिणामों के बारे में विस्तार से जानना चाहते हैं तो आप हमारे रैखिक बीजगणित पाठ्यक्रम बी.एम.टी.ई.-141 का अध्ययन कर सकते हैं।

इस पाठ्यक्रम के चार खंड हैं। पहले खंड में, हमने एक अज्ञात राशि वाले अरैखिक समीकरण के सन्निकट मूल ज्ञात करने जैसी समस्या पर विचार किया है। खंड के प्रारंभ में हमने आपको सन्निकटन के कारण होने वाली त्रुटि की संकल्पना से परिचित कराया है। हमने दो आधारभूत सन्निकटन विधियों-द्विभाजन विधि तथा नियत बिंदु पुनरावृत्ति विधि तथा दो सामान्यतः प्रयोग की जाने वाली विधियों अर्थात्, छेदक तथा न्यूटन विधि पर चर्चा की है। खंड-2 में हमने रैखिक समीकरण निकाय का हल करने से संबंधित प्रश्न पर विचार किया है। हमने रैखिक समीकरण को हल करने की प्रत्यक्ष तथा पुनरावृत्ति दोनों ही विधियों की चर्चा की है।

खंड 3 में अंतर्वेशन सिद्धांत की चर्चा की गई है। यहां हमने केवल बहुपदी अंतर्वेशन को लिया है। अंतर्वेषी बहुपदियों के अनेक प्रकार जैसे कि लग्रांज और न्यूटन के विभाजित अंतर रूपों की चर्चा की गई है। इस खंड के अंत में न्यूटन के अग्र तथा पश्च् अंतर रूप की व्याख्या भी की गई है।

खंड 4 हमने अंतर्वेषी बहुपदियों का प्रयोग करके संख्यात्मक अवकलन और समाकलन सूत्र प्राप्त किए हैं। प्रथम कोटि के साधारण अवकल समीकरणों के हल के लिए टेलर श्रेणी, ऑयलर पद्धति, तथा द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ कोटि रून्गे कुट्टा विधियों पर चर्चा की गई है।

इन इकाइयों में दी गई संकल्पनाओं के बाद अनेक उदाहरण तथा प्रश्न दिए गए हैं। इन्हें हल करने से आपको इस पाठ्यक्रम में दी गई तकनीकों को अच्छी तरह समझ पाने में मदद मिलेगी। खंड में दी गई संकल्पनाओं की आपकी समझ की जाँच के लिए सभी खंडों के अंत में विविक्त प्रश्न उनके हल सहित दिए गए हैं। हमारा सुझाव है कि प्रश्नों को हल करने की कोशिश करने के बाद ही आप इन हलों को देखें।

## पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 एक चर वाले अरैखिक समीकरणों का हल**

इकाई 1 त्रुटियाँ और सन्निकटन

इकाई 2 मूल मालूम करने की पुनरावृत्ति विधियां

इकाई 3 मूल ज्ञात करने की जीवा विधियां

इकाई 4 बहुपद समीकरणों के सन्निकट मूल

**खंड 2 रैखिक बीजीय समीकरणों के हल**

इकाई 5 प्रत्यक्ष विधियां

इकाई 6 वर्ग आव्यूह का व्युत्क्रम

इकाई 7 पुनरावृत्ति विधियां

इकाई 8 आइगनमान और आइगन सदिश

**खंड 3 अंतर्वेशन**

इकाई 9 लग्रांज रूप

इकाई 10 अन्तर्वेषी बहुपद का न्यूटन रूप

इकाई 11 समदूरी बिंदुओं पर अंतर्वेशन

**खंड 4 संख्यात्मक अवकलन, समाकल और अवकल समीकरणों का हल**

इकाई 12 संख्यात्मक अवकलन

इकाई 13 संख्यात्मक समाकलन

इकाई 14 साधारण अवकल समीकरणों का संख्यात्मक मूल

## गांधी एवं समसामयिक विश्व (BPSE 141) 6 credits

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय महत्व की घटनाओं की पृष्ठभूमि के खिलाफ गांधी जो आधुनिक समय में सबसे प्रभावशाली राजनीतिक कार्यकर्ताओं और विचारकों में से एक हैं, के जीवन को दर्शाता है। यह पाठ्यक्रम गुजरात में उनकी शुरुआत, लंदन और दक्षिण अफ्रीका में उनके प्रारंभिक वर्ष, भारत में उनके सत्याग्रह, उनके धार्मिक विचार, नेहरू के साथ उनके संबंध और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उल्लेखनीय ऐतिहासिक व्यक्तित्व के रूप में उनकी भूमिका के बारे में शिक्षार्थियों को विस्तार से समझाता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 गांधी का परिचय**

इकाई 1 गांधी और उनका समय

इकाई 2 गांधी की आधुनिक सभ्यता और वैकल्पिक आधुनिकता की अवधारणा

इकाई 3 गांधी की विकास की आलोचना

**खंड 2 गांधी की राजनीतिक चिंताएं और विचार**

इकाई 4 स्वराज

इकाई 5 स्वदेशी

इकाई 6 सत्याग्रह

इकाई 7 ट्रस्टीशिप

**खंड 3 गांधी की विरासत**

इकाई 8 अहिंसक आंदोलन

इकाई 9 शांति आंदोलन

इकाई 10 महिलाओं के आंदोलन

इकाई 11 पर्यावरणीय आंदोलन

**खंड 4 गांधी और समकालीन चुनौतियां**

इकाई 12 सामाजिक सद्भाव

इकाई 13 शिक्षा

इकाई 14 आचार और नैतिकता

## वैश्विक दुनिया में भारत की विदेश नीति (BPSE 142) 6 credits

पाठ्यक्रम का उद्देश्य : इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य घरेलू स्रोतों और भारत की विदेश नीति के विकास और अभ्यास पर संरचनात्मक बाधाओं से शिक्षार्थी को परिचित कराना है। प्रयास यह है कि भारत की विदेश नीति के घरेलू और अंतरराष्ट्रीय' पहलुओं के बीच के अभिन्न संबंधों को अपनी घरेलू पहचान में बदलाव और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इसी बदलाव पर जोर दिया जाए।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 प्रस्तावना**

इकाई 1 भारत की विदेश नीति का विकास

इकाई 2 भारतीय विदेश नीति के सिद्धांत और उद्देश्य

इकाई 3 भारतीय विदेश नीति के निर्धारक

इकाई 4 भारतीय विदेश नीति संस्थान और तंत्र

**खंड 2 प्रमुख शक्तियों के प्रति भारत की नीति**

इकाई 5 अमेरिका के प्रति भारतीय नीति

इकाई 6 रूस के प्रति भारतीय नीति

इकाई 7 चीन के प्रति भारतीय नीति

**खंड 3 भारत की दक्षिण एशिया नीति**

इकाई 8 पाकिस्तान के प्रति भारतीय नीति

इकाई 9 अन्य पड़ोसियों के प्रति भारतीय नीति

**खंड 4 भारत और अन्य क्षेत्र**

इकाई 10 भारत की पूर्वी नीति

इकाई 11 भारत, मध्य और पष्चिम एशिया

इकाई 12 अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के प्रति भारतीय नीति

**खंड 5 वैश्वीकरण के दौर में भारत की चिंता**

इकाई 13 सुरक्षा संबंधी चिंता

इकाई 14 पर्यावरण संबंधी चिंता

इकाई 15 आर्थिक चिंता

## भारत में राज्यीय राजनीति (BPSE 143) 6 credits

यह पाठ्यक्रम भारत में राज्य स्तर पर राजनीति की मुख्य प्रवृत्तियों पर क्रेंदित है। पाठ्यक्रम को पाँच खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड की इकाईयाँ भारत में राज्यीय राजनीति के विकास तथा राज्यीय राजनीति की व्याख्या के दृष्टिकोणों के विषय में है। दूसरे खण्ड की इकाईयाँ भारत में संघवाद कें विभिन्न आयामों के विषय में हैं।खण्ड तीन की इकाईयाँ राजनीति एवं राज्य में विकास से संबंधित हैं। खण्ड चार भारत में दलीय राजनीति, चुनावी राजनीति तथा राज्यों में नेतृत्व के विषय पर हैं। खण्ड पाँच की इकाईयाँ भारतीय राज्यों मे विभिन्न पहचानों से संबंधित राजनीति की चर्चा करती हैं।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 परिचय**

इकाई 1 भारत में राज्यीय राजनीति का विकास

इकाई 2 राज्यीय राजनीति के अध्ययन के दृष्टिकोण

**खण्ड 2 संघवाद**

इकाई 3 संघ–राज्य संबंध : विधायिका, आर्थिक और प्रशासनिक

इकाई 4 राज्य –स्थानीय संबंध

इकाई 5 राज्य की स्वायत्तता

इकाई 6 उप–क्षेत्रीय स्वायत्तता और शासन

**खण्ड 3 विकास और राज्यीय राजनीति**

इकाई 7 राज्यीय विकास ढ़ाँचा

इकाई 8 प्रशासन

**खण्ड 4 दलीय व्यवस्थाऐं और चुनावी राजनीति**

इकाई 9 राज्यीय दलीय व्यवस्थाएं

इकाई 10 चुनावी राजनीति

इकाई 11 नेतृत्व

**खण्ड 5 पहचान की राजनीति**

इकाई 12 दलित, ओबीसी और महिलाऐं

इकाई 13 भाषाई और स्थानिक समूह

इकाई 14 क्षेत्र और नष्जाति

इकाई 15 नए सामाजिक समूह

## उत्तर पूर्वी भारत में प्रजातंत्र और विकास (BPSE 145) 6 credits

भारत में **उत्तर पूर्व भारत** के आठ राज्यों का एक विशेष स्थान है। ये सांस्कृतिक और जातीय विविधता को दर्शाते हैं। इनकी सांस्कृतिक और जातीय पहचानों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए भारतीय संविधान में विशेष प्रावधान हैं। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्याार्थियों को उत्तर पूर्वी भारत से संबधित कुछ विषयों से परिचित कराना है – सामान्य रूप से राजनीति, पहचानें, दलीय और चुनावी राजनीति, सामाजिक आंदोलन तथा विकास। इन विषयों की सोलह इकाइयों मे चर्चा की गयी है तथा इकाईयों को छः खण्डों में रख गया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में भारत में राजनीति को समझने के लिए तुलनात्मक तथा बहुआयामी दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करेगा।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 परिचय**

इकाई 1 क्षेत्र का गठन

इकाई 2 क्षेत्र की समाजिक–सांस्कृतिक रूपरेखा

इकाई 3 क्षेत्र की आर्थिक रूपरेखा

**खण्ड 2 संवैधानिक प्रावधान और शासन**

इकाई 4 संविधान सभा में बहस

इकाई 5 उत्तरी भारत के लिए विशेष प्रावधान

इकाई 6 क्षेत्रीय और जिला परिषद

**खण्ड 3 पहचान की राजनीति**

इकाई 7 प्रवास, शरणार्थी और नागरिकता

इकाई 8 स्वायत्ता आंदोलन

इकाई 9 जातीयता और पहचान की राजनीति

**खण्ड 4 दलीय राजनीति और चुनाव**

इकाई 10 राजनीतिक दल और दलीय व्यवस्था

**खण्ड 5 नये सामाजिक आंदोलन**

इकाई 11 छात्र आंदोलन

इकाई 12 महिला आंदोलन

इकाई 13 पर्यावरण आंदोलन

इकाई 14 मानव अधिकार आंदोलन

**खण्ड 6 विकास**

इकाई 15 सामाजिक और मानव विकास

इकाई 16 आर्थिक विकास

## दक्षिण एशिया का परिचय (BPSE 144) 6 credits

दक्षिण एशिया के देशों में सामान्य एतिहासिक अनुभव, सांस्कृतिक गुण तथा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास की समान समस्याएँ हैं। फिर भी, इस क्षेत्र के हर देश की अपनी अलग पहचान है तथा विशेष राजनीतिक संरचनाएँ है। यह पाठ्यक्रम दक्षिण एशिया की प्रमुख विशेषताओं, इतिहास और राजनीतिक शासन का तुलनात्मक परिचय देता है। यह विकास के प्रमुख मुद्दों, अंतर राज्यीय संबंधों में तनाव के विषय तथा इन चुनौतियों से निबटने के लिए जिन रणनीतियों का प्रयोग किया जा रहा है, इन सब विषयों पर प्रकाश डालता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 दक्षिण एशियाः एक परिचय**

इकाई 1 दक्षिण एशिया एक क्षेत्र के रूप में

इकाई 2 स्वतंत्रता के लिए संघर्ष और दक्षिण एशिया में राष्ट्रवाद

**खण्ड 2 दक्षिण एशिया में समाज और राजनीति**

इकाई 3 दक्षिण एशिया में विविधता और बहुलवाद

इकाई 4 भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में राजनीतिक संरचनाएँ और प्रक्रियाएँ

इकाई 5 श्रीलंका और मालदीव में राजनीतिक संरचनाएँ और प्रक्रियाएँ

इकाई 6 अफगानिस्तान, भूटान और नेपाल में राजनीतिक संरचनाएँ और प्रक्रियाएँ

**खण्ड 3 विकास के मुद्दे**

इकाई 7 दक्षिण एशिया में मानव विकास और क्षेत्रीय अंसतुलन

इकाई 8 प्रवास और विकास

इकाई 9 पर्यावरण और विकास

**खण्ड 4 दक्षिण एशिया में संघर्ष और सहयोग**

इकाई 10 दक्षिण एशिया में सषस्त्र संघर्ष

इकाई 11 क्षेत्रीय विवाद

इकाई 12 पानी संबंधी विवाद और पानी सहभाजन

इकाई 13 दक्षिण एशिया में नागरिक समाज

इकाई 14 सार्क

इकाई 15 दक्षिण एशिया में सुरक्षा

## संघर्ष का समाधान एवं शांति की स्थापना (BPSE 146) 6 credits

पाठ्यक्रम का उद्देश्य : यह पाठ्यक्रम व्यक्तिगत स्तर से वैश्विक स्तर तक के विभिन्न प्रकार की संघर्ष स्थितियों की समझ देता है। यह शिक्षार्थियों को संघर्ष के विभिन्न कारकों की पहचान करने और प्रतिक्रिया देने में मदद करेगा। संघर्ष के समाधान के अहिंसक रूपों और अहिंसक तरीकों और रणनीति तथा शांति के नाम पर बल की तैनाती के दौरान उत्पन्न होने वाली दुविधाओं के बारे में जानकारी देता है। यह पाठ्यक्रम नई सूचना प्रौद्योगिकियों के उपयोग को प्रोत्साहित करता है और इन मुद्दों को समझने और संघर्शों को हल करने और अंतर–विश्वास संवाद, भूमिका, खेल, सिमुलेशन, स्ट्रीट थियेटर, सिनेमा और संगीत जैसी तकनीकों के माध्यम से शांति कायम करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 संघर्ष : सैद्धांतिक निर्माण**

इकाई 1 संघर्ष का अर्थ और संकल्पना

इकाई 2 संघर्ष के स्रोत

इकाई 3 संघर्ष के प्रकार और स्तर

इकाई 4 संघर्ष के सिद्धांत

**खंड 2 संघर्ष प्रबंधन**

इकाई 5 संघर्ष समाधान के तरीके

इकाई 6 सरकार और नागरिक समाज की भूमिका

इकाई 7 अंतरराष्ट्रीय और अंतरदेशीय संस्थानों की भूमिका

**खंड 3 शांति की स्थापना**

इकाई 8 अर्थ और महत्व

इकाई 9 दृष्टिकोण

इकाई 10 संघर्ष के बाद निर्माण एवं पुनर्वास (स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मामलों का अध्ययन)

**खंड 4 समकालीन शांति पहलें**

इकाई 11 अंतर–विश्वास संवाद

इकाई 12 शांति पहल मॉडल (किंग, मंडेला, षार्प, भावे और जेपी)

## मनोविज्ञान

### परामर्श मनोविज्ञान (BPCE 145) 6 credits

यह एक विषय विशिष्ट पाठ्यक्रम है और पांचवे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को परामर्श, मार्गदर्शन और मनोचिकित्सा से संबंधित अवधारणाओं से परिचित कराएगा। यह उन्हें परामर्श के दृष्टिकोण और तकनीकों को समझने में सहायता करेगा। इसके अलावा शिक्षार्थी परामर्श कार्य के क्षेत्रों में विभिन्न मनोचिकित्साओं और नैतिक मुद्दों के बारे में भी जानेंगे। इस कार्य का समन्वय प्रो. स्वाती पात्रा, मनोविज्ञान विभाग, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

### औद्योगिक एवं संगठनात्मक मनोविज्ञान (BPCE 146) 6 credits

यह एक विषय पाठ्यक्रम है और छठे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को औद्योगिक/संगठनात्मक व्यवहार की बुनियादी अवधारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करेगा। इस पाठ्यक्रम के द्वारा, शिक्षार्थी कार्य स्थल पर मनोविज्ञान की प्रासंगिकता और निहितार्थ को समझ सकता है।

## लोक प्रशासन

### सूचना का अधिकार (BPAE 141) 6 credits

इस पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य सूचना का अधिकार के विकास; तथा शासन को सुदृढ़ बनाने के लिए 'सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005' (आर.टी.आई. अधिनियम, 2005) से विद्यार्थियों को परिचित कराना है। यह अध्ययन आर.टी.आई. अधिनियम के कार्यान्वयन से संबंधित मुद्दों और चुनौतियों पर प्रकाश डालता है। पाठ्यक्रम में आर.टी.आई. प्रवर्तन को सुगम बनाने के लिए, उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों के निर्णयों की एक साधन के रूप मे चर्चा की गई है। इस पाठ्यक्रम में उन सफलताओं की कहानियों और केस अध्ययनों का वर्णन किया गया है, जिन्होंने सूचना के अधिकार के माध्यम से शासन को मजबूत बनाने में योगदान प्रदान किया है।

#### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 सूचना का अधिकार : एक परिचय**

इकाई 1 सूचना का अधिकारः विकास, अवधारणा, उपलब्धियाँ और सीमाएँ

**खंड 2 सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005**

इकाई 2 सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 : एक अवलोकन

इकाई 3 सूचना का अधिकार नियम, 2012

इकाई 4 केंद्रीय सूचना आयोग

इकाई 5 राज्य सूचना आयोग

**खंड 3 सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का कार्यान्वयन : मुद्दे और चुनौतियाँ**

इकाई 6 सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के माध्यम से प्रशासनिक दक्षता, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व : मुद्दे और चुनौतियाँ

इकाई 7 केंद्रीय सूचना आयुक्त, राज्य सूचना आयुक्त और लोक प्राधिकारियों की भूमिका : अपेक्षाएँ एवं बाध्यताएं

इकाई 8 आर.टी.आई. अधिनियम, 2005 : जिला स्तर पर कार्यान्वयन में बाधाएँ

इकाई 9 मीडिया की भूमिका

इकाई 10 नागरिक समाज संगठनों की भूमिका

**खंड 4 सूचना का अधिकार के माध्यम से शासन की ओर : प्रयास एवं प्रभाव**

इकाई 11 शासन के लिए सूचना के अधिकार का महत्व

इकाई 12 उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के निर्णय : आर.टी.आई. प्रवर्तन को सुगम बनाने के साधन

इकाई 13 सफलता की कहानियाँः पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के प्रयास

इकाई 14 केस अध्ययन : राजस्थान और महाराष्ट्र में सामाजिक लेखा–परीक्षा

इकाई 15 अधिकारों और उनके प्रवर्तन के बीच अंतराल घटाना

## संगठनात्मक व्यवहार (BPAE 142) 6 credits

**उद्देश्यः** पाठ्यक्रम का उद्देश्य व्यक्तिगत, समूह और संगठनात्मक व्यवहार को समझने के लिए एक आधार प्रदान करना है, जो एक संगठन में मानव संसाधनों के बेहतर प्रबंधन के लिए आवश्यक है। यह अभिप्रेरणा, समूह गतिकी, टीम के काम, संचार तथा नेतृत्व जैसे संगठनात्मक व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखता है। यह संगठनात्मक संघर्ष, समझौता, वार्ता, संगठनात्मक संस्कृति, संगठनात्मक परिवर्तन तथा विकास, तनाव प्रबंधन आदि जैसे मुद्दों पर भी केंद्रित है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 संगठनात्मक व्यवहार की अवधारणा और प्रासंगिकता**

इकाई 1 संगठनात्मक व्यवहारः अर्थ, विशेषताएँ, महत्व और मॉडल

इकाई 2 व्यक्तिगत व्यवहार की नींव, निर्धारक मॉडल तथा धारणाएँ

**खण्ड 2 व्यक्तिगत व्यवहार को समझना**

इकाई 3 कार्मिक अभिवृत्तियां एवं कार्य संतुष्टि

इकाई 4 सीखने के सिद्धांत

**खण्ड 3 संगठनात्मक व्यवहारः प्रमुख पहलू**

इकाई 5 अभिप्रेरण अवधारणा और सिद्धांत

इकाई 6 समूह गतिकी की प्रकृति

इकाई 7 टीम कार्यः प्रकृति, प्रभावशीलता तथा बाधाएं

इकाई 8 संचारः अर्थ, प्रकृति तथा प्रक्रिया

इकाई 9 नेतृत्वः अवधारणा और सिद्धांत

**खण्ड 4 संगठन और संगठनात्मक प्रणाली में जीवन**

इकाई 10 संगठनात्मक संघर्षः अर्थ, प्रक्रिया तथा प्रकार

इकाई 11 समझौता वार्ता : अवधारणा, प्रक्रिया तथा दृष्टिकोण

इकाई 12 परिवर्तन : प्रक्रिया एवं प्रबंधन

इकाई 13 संगठनात्मक संस्कृति : अर्थ, प्रकार तथा प्रकृति

इकाई 14 संगठनात्मक परिवर्तन और विकासः अवधारणा महत्व तथा तकनीक।

इकाई 15 तनाव प्रबंधन

इकाई 16 मॉडलः चुनौतियाँ और अवसर

## ब्रिक्स में प्रशासनिक व्यवस्था (BPAE 143) 6 credits

विश्व के ब्राज़ील रूस, भारत, चीन और दक्षिण अफ्रीका नामक देशों के अंग्रेजी नामों के पहले अक्षरों से मिलकर बना शब्द 'ब्रिक्स' (BRICS) एक परिवर्णी शब्द (acronym) है। 'ब्रिक्स' विश्व की प्रमुख उभरती हुई राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के परस्पर सहयोग के लिए बने संगठन का नाम है। इन राष्ट्रों के बीच द्विपक्षीय संबंध मुख्य रूप से समानता, पारस्परिक लाभ और गैर–हस्तक्षेप पर आधारित हैं। ब्रिक्स में प्रशासनिक व्यवस्था से संबंधित इस ऐच्छिक पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य ब्रिक्स देशों में उनकी सरकार की संरचना और सांविधानिक ढाँचे से विद्यार्थियों को परिचित कराना है। चूँकि ब्रिक्स के सदस्य देश क्षेत्रीय मामलों के संदर्भ में अपने–अपने प्रभाव के लिए जाने जाते हैं, इसलिए उनकी प्रशासनिक व्यवस्था को समझने की दृष्टि से इस अध्ययन में ब्रिक्स में सरकार की संरचना और सांविधानिक ढाँचे पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस संदर्भ में अधिकारी–वर्ग की नीति–निरूपण, कार्यान्वयन और विश्लेषण में भूमिका का वर्णन, प्रशासनिक व्यवस्था की स्पष्ट समझ प्रदान करता है। इसक अतिरिक्त पाठ्यक्रम में चुनिंदा राष्ट्रों में प्रशासन पर विभिन्न नियंत्रण तंत्रों, कार्मिक प्रबंधन, योजना-प्रक्रिया, बजट-प्रक्रिया, लेखाकरण तथा लेखा–परीक्षा प्रणाली; और स्थानीय प्रशासन पर भी प्रकाश डाला गया है। यह पाठ्यक्रम नागरिक और प्रशासन; नागरिक समाज की बढ़ती भूमिका; और शासन में प्रशासनिक सुधार जैसे उभरते मुद्दों को भी उजागर करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 ब्रिक्स में सरकार की संरचना और सांविधानिक ढाँचा**

इकाई 1 ब्रिक्स : सांविधानिक ढाँचा

इकाई 2 विधायिका

इकाई 3 कार्यपालिका

इकाई 4 न्यायपालिका

**खंड 2 अधिकारी-वर्ग एवं प्रशासन पर नियंत्रण तंत्र**

इकाई 5 अधिकारी-वर्ग की भूमिका : नीति–निरूपण, कार्यान्वयन और विश्लेषण

इकाई 6 प्रशासन पर नियंत्रण तंत्र

**खंड 3 कार्मिक प्रबंधन**

इकाई 7 कार्मिक प्रबंधन–I

इकाई 8 कार्मिक प्रबंधन–II

**खंड 4 योजना, बजट-प्रक्रिया, लेखाकरण और लेखा-परीक्षा**

इकाई 9 योजना-प्रक्रिया

इकाई 10 बजट-प्रक्रिया, लेखाकरण और लेखा–परीक्षा प्रणाली

**खंड 5 स्थानीय शासन**

इकाई 11 ब्रिक्स में स्थानीय शासन

**खंड 6 उभरते मुद्दे**

इकाई 12 नागरिक और प्रशासन

इकाई 13 नागरिक समाज की बढ़ती भूमिका

इकाई 14 शासन में प्रशासनिक सुधार

## सामाजिक नीतियाँ व प्रशासन (BPAE 144) 6 credits

यह पाठयक्रम सामाजिक नीति व प्रशासन के परिचय के साथ साथ इनसे जुड़े सिद्धांत व मॉडल का वर्णन करता है। सामाजिक नीतियाँ किस प्रकार सतत विकास उद्देश्यों को सम्बोधित करती है इसका भी परीक्षण किया गया है। विभिन्न मंत्रालयों, आयोगों व संस्थानों जैसे सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण मंत्रालय, अनुसूचित जाति के लिए राष्ट्रीय आयोग, अनुसूचित जनजाति के लिए राष्ट्रीय आयोग, सामाजिक सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय संस्थान, आदि की भूमिकाओं का भी वर्णन करता हैं।

## पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 सामाजिक नीति व प्रशासन : एक परिचय**

इकाई 1 सामाजिक नीति व प्रशासन : एक परिचय

**खण्ड 2 सामाजिक में सतत विकास उद्देश्यों व सामाजिक नीतियाँ क्षेत्र**

इकाई 2 गरीबी उन्मूलन

इकाई 3 शिक्षा नीति

इकाई 4 स्वास्थ्य नीति

इकाई 5 स्त्री व बच्चों हेतु नीतियाँ

इकाई 6 आवास

इकाई 7 निशक्तजन हेतु कार्यक्रम

**खण्ड 3 विभिन्न संस्थानों की भूमिकाएँ**

इकाई 8 सामाजिक न्याय व सशक्तिकरण मंत्रालय : भूमिका

इकाई 9 अनुसूचित जाति के लिए राष्ट्रीय आयोगः भूमिका व अनुसूचित जनजाति के लिए राष्ट्रीय आयोग : भूमिका

इकाई 10 सामाजिक सुरक्षा के लिए राष्ट्रीय संस्थान : भूमिका

इकाई 11 सार्वजनिक सहयोग व बाल विकास के लिए राष्ट्रीय संस्थानः भूमिका

इकाई 12 केन्द्रीय सामाजिक कल्याण बोर्डः भूमिका

इकाई 13 सामाजिक संगठन : केस अध्ययन

**खण्ड 4 सामाजिक व्यवस्थापन**

इकाई 14 सामाजिक व्यवस्थापन

# संस्कृत

## आयुर्वेद के मूल आधार (BSKE 141) 6 credits

यह बी॰ए॰ (सामान्य) संस्कृत का ऐच्छिक (इलेक्टिव) पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में तीन खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है -

**खण्ड 1** आयुर्वेद का परिचय

**खण्ड 2** चरकसंहिता : सूत्र-स्थानम्

**खण्ड 3** तैत्तिरीयोपनिषद्

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् आप आयुर्वेद की पद्धतियों तथा प्रमुख आयुर्वेदाचार्यों जैसे चरक, सुश्रुत, भावमिश्र आदि का परिचय प्राप्त करेंगे। आप चरकसंहिता के सूत्र-स्थानम् भाग के अन्तर्गत वर्णित विषय जैसे समय का विभाजन, 6 ऋतुओं का स्वभाव, शरीर की दशा तथा भोजन करने के नियम से परिचित होंगे। आप तैत्तिरीयोपनिषद् की भृगुवल्ली से परिचत होंगे।

## रंगमंच और नाट्यकला (BSKE 142) 6 credits

यह बी॰ए॰ (सामान्य) संस्कृत का ऐच्छिक (इलेक्टिव) पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में तीन खण्ड हैं जिनका विवरण इस प्रकार है-

**खण्ड 1** रंगमंच : प्रकार और निर्माण

**खण्ड 2** नाटक : वस्तु, नेता और रस

**खण्ड 3** भारतीय रंगमंच की परम्परा और इतिहास

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् आप रंगमंच के प्रकार जैसे विकृष्ट, मध्यम, अवर आदि के विषय में बता सकेंगे तथा नाटक के मूलभूत तत्त्वों नाटक की परिभाषा, अभिनय, संवाद आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप प्रागैतिहासिक काल से चली आ रही रंगमंच की परम्परा और उसके इतिहास के विषय में बताने में सक्षम होंगे।

## नगरीय समाजशास्त्र (BSOE 141) 6 credits

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः** यह पाठ्यक्रम ऐतिहासिक और समकालीन संदर्भों में नगरीय जीवन को समझने के लिए प्रमुख सैद्वांतिक दृष्टिकोण के लिए एक अनावरण प्रदान करता है। यह नगरीय समुदायों के व्यक्ति परक अनुभवों को बयान करते हुए नगरीय जीवन की कुछ चिंताओं को भी दर्शाता है। भारत और दुनिया के अन्य हिस्सों से केस अध्ययन के साथ यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को नगरीय जीवन की जटिलताओं से संबधित करने में सहायता करेगा।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 नगरीय समाजशास्त्र का परिचय**

इकाई 1 नगरीय समाजशास्त्रः प्रकृति और क्षेत्र

इकाई 2 नगरीकरण और नगरवाद

इकाई 3 नगर

**खंड 2 नगरीय समाजशास्त्र में परिप्रेक्ष्य**

इकाई 4 पारिस्थितिक – स्थानिक

इकाई 5 राजनीतिक अर्थव्यवस्था

इकाई 6 नेटवर्क

इकाई 7 सांस्कृतिक

**खंड 3 प्रवासन, व्यवसाय और बस्तियाँ**

इकाई 8 प्रवासन

इकाई 9 व्यवसाय

इकाई 10 गंदी बस्ती

इकाई 11 पड़ोस और सुरक्षापूर्ण समुदाय

**खंड 4 नगरीय क्षेत्र की सांस्कृतिक राजनीति**

इकाई 12 उपभोक्ता, संस्कृति और आराम/फुरसत

इकाई 13 जाति, वर्ग, नृजातियता और लैंगिक

## भारतीय समाजशास्त्रीय परम्पराएँ (BSOE 142) 6 credits

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः**भारतीय समाजशास्त्र की परंपराओ को1914 में बॉम्बे विश्वविद्यालय में एक विषय के रूप में समाजशास्त्र कें औपचारिक शिक्षण के साथ पता लगाया जा सकता है। जबकि ''भारत में समाजशास्त्र'' और ''भारत के समाजशास्त्र'' के अस्तित्व पर बड़े पैमाने पर तर्क वितर्क हुए कि यह पश्चिमी दर्शन से प्रभावित हुए हैं, क्या स्वदेशीकरण आदि की आवश्यकता हैं, भारत में समाजशास्त्री मुख्य रूप से परंपरा और आधुनिकता, जाति, जनजाति और लैंगिक के मुद्दों के साथ जुड़े हुए हैं। यह पाठ्यक्रम मुख्य रूप से इनमें से कुछ मुद्दों पर प्रमुख भारतीय समाजशास्त्रीयों के दृष्टिकोण प्रदान करता हैं।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं का इतिहास और विकास**

इकाई 1 भारतीय समाजशास्त्रीय परंपराओं पर प्रमुख प्रभाव

इकाई 2 भारतीय समाजशास्त्रीय पंरपराओं के प्रमुख पीठ

**खंड 2 भारत में समाजशास्त्री–1**

इकाई 3 राधाकमल मुखर्जी

इकाई 4 जी एस घुर्ये

इकाई 5 डी पी मुखर्जी

इकाई 6 एन के बोस

इकाई 7 वेरियर एलविन

**खंड 3 भारत में समाजशास्त्री–2**

इकाई 8 इरावती कर्वे

इकाई 9 ए आर देसाई

इकाई 10 एम एन श्रीनिवास

इकाई 11 रामकृष्ण मुखर्जी

इकाई 12 लीला दुबे

## पर्यावरणीय समाजशास्त्र (BSOE 143) 6 credits

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः** इस पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों को पर्यावरण समाजशास्त्र के मुख्य वाद–विवादसे, उप–विषय के भीतर अलग–अलग दृष्टिकोणों से परिचित कराने के लिए बनाया गया है। इसमें यह भी बताया गया है कि भारत में पर्यावरण के मुद्दों और आंदोलनों को समझने के लिए इन दृष्टिकोणों का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 पर्यावरण समाजशास्त्र की परिकल्पना**

इकाई 1 पर्यावरण समाजशास्त्र : प्रकृति और क्षेत्र

इकाई 2 यथार्थवादी निमार्णवादी वाद–विवाद

इकाई 3 मुख्य अवधारणाएं

**खंड 2 दृष्टिकोण**

इकाई 4 सामाजिक परिस्थितिकी

इकाई 5 उत्पादन का ट्रेड मिल

इकाई 6 पारिस्थितिक आधुनिकीकरण

इकाई 7 जोखिम

इकाई 8 पर्यावरण नारीवाद और नारीवादी पर्यावरणवाद

इकाई 9 राजनीतिक परिस्थितिकी

**खंड 3 पर्यावरण मुद्दे और चिंताएं**

इकाई 10 मानव केन्द्र और जलवायु परिवर्तन

इकाई 11 प्रदूषण

इकाई 12 भारत में पर्यावरण नीति

**खंड 4 भारत में पर्यावरण आंदोलन**

इकाई 13 वन आधारित आंदोलन – चिपको

इकाई 14 जल आधारित आंदोलन – नर्मदा

इकाई 15 भूमि आधारित आंदोलन – खनन और बीज विरोधी

## प्रजातिलेखन अध्ययन (BSOE 144) 6 credits

**पाठ्यक्रम उद्देश्यः** इस पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी सपूर्णता में नृवशंविज्ञान ग्रथों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हैं। यह विद्यार्थियों को औपनिवेशिक, शास्त्रीय, वैश्विक और भारतीय नृवंशविज्ञान के माध्यम से नृवंशविज्ञान की मौलिक समझ और इसके विविध उपयोग प्रदान करता है। इसमें भारत और विदेशों के उदाहरणों का हवाला देते हुए नृंवशविज्ञान लेखन के सामाजिक सास्कृतिक राजनीतिक, आर्थिक, नारीवादी, संघर्ष और नगरीय आयामों को उजागर करने के लिए नृवंशविज्ञान संबधी मामले प्रदान किए हैं। इस पाठ्यक्रम का अंतिम खंड नृवंशविज्ञान के वैज्ञानिक, नारीवादी व्याख्यात्मक और नैतिक आयाम पर प्रकाश डालते हुए नृवंशविज्ञान के तर्क वितर्क पर आधारित नृवंशविज्ञान प्रथाओं और शैलियों को चित्रित करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 प्रजातिलेखन के विषय**

इकाई 1 प्रजातिलेखन को समझना

इकाई 2 औपनिवेशिक प्रजातिलेखन

इकाई 3 शास्त्रीय प्रजातिलेखन

इकाई 4 भारतीय प्रजातिलेखन

इकाई 5 वैश्विक प्रजातिलेखन

**खंड 2 प्रजातिलेखन केस**

इकाई 6 पश्चिमी प्रांत के ऑर्गनॉट–बी मालिनॉवस्की

इकाई 7 समोआ में आगामी युग – एम मीड

इकाई 8 कूर्ग के बीच धर्म और समाज – एम एन श्रीनिवास

इकाई 9 मुक्कुवर महिलाएँ : लैंगिक, आधिपत्य और दक्षिण भारतीय मत्स्य पालन समुदाय में पूंजीवाद परिवर्तन – कल्पना राम

इकाई 10 कपट और नुकसानः सामाजिक मानव विज्ञान की राजनीति– एफ जी बेली

इकाई 11 नुक्कड़ समाज – डब्लयू एफ व्हाइट

**खंड 3 प्रजातिलेखन परिपाटी और शैलियां**

इकाई 12 प्रजातिलेखन कार्य पर तर्क वितर्क

इकाई 13 वैज्ञानिक प्रजातिलेखन

इकाई 14 प्रजातिलेखन के लिए नारीवादी आलोचना

इकाई 15 व्याख्यात्मक प्रजातिलेखन

इकाई 16 नैतिकता और प्रजातिलेखन

## धर्म एवं समाज (BSOE 145) 6 credits

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को धर्म की समाजशास्त्रीय समझ से अवगत करवाता है। भारत में मौजूद धर्म के कुछ स्वरूपों का परिचय देते हुए यह पाठ्यक्रम इस बात पर ज़ोर देता है कि आधुनिक समाज में धर्म की क्या भूमिका है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 धर्म की समझ**

इकाई 1 धर्म का समाजशास्त्र : अर्थ एवं संकल्पना

इकाई 2 धर्म के तत्व

इकाई 3 धर्म के अध्ययन के लिए दृष्टिकोण

इकाई 4 धर्म एवं विवेकीकरण

**खंड 2 भारत में धर्म**

इकाई 5 बहुलवाद, समानता एवं बंधुत्व : संवैधानिक आधार

इकाई 6 हिंदूवाद

इकाई 7 इस्लाम धर्म

इकाई 8 ईसाई धर्म

इकाई 9 सिख धर्म

इकाई 10 बौद्ध धर्म

इकाई 11 जनजातियाँ में धर्म

**खंड 3 धर्म, समुदाय एवं राज्य**

इकाई 12 धार्मिक बहुलवाद तथा समधर्मी परंपराएँ

इकाई 13 धर्मनिरपेक्षता तथ लौकिकीकरण

इकाई 14 सांप्रदायिकता एवं धार्मिक कट्टरता

इकाई 15 नागरिक धर्म

## विवाह, परिवार एवं नातेदारी (BSOE 146) 6 credits

यह पाठ्यक्रम विवाह, परिवार तथा नातेदारी के समकालीन सरोकारों की जांच-पड़ताल करता है तथा उनका विशद विवरण प्रस्तुत करता है। इसमें सैद्धांतिक मुद्दों तथा व्यवहारों की विविधता पर विशेष रूप से जोर देते हुए सैद्धांतिक मुद्दों व मानव-जाति-वर्णन को समाहित किया गया है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 आधारभूत अवधारणाओं का परिचय**

इकाई 1 विवाह

इकाई 2 परिवार

इकाई 3 नातेदारी

**खंड 2 संबंधों–नातेदारी का अध्ययन**

इकाई 4 वंशक्रम

इकाई 5 रिश्तेदारी

इकाई 6 काल्पनिक

**खंड 3 परिवार एवं गृहस्थी**

इकाई 7 संरचना एवं परिवर्तन : घटक व गतिकी

इकाई 8 पुनकल्पनीय परिवार

**खंड 4 विवाह, परिवार तथा नातेदारी से जुड़ी समकालीन मुद्दे**

इकाई 9 विवाह के मामलों में पसंद एवं नियमन

इकाई 10 परिवार में शक्ति एवं भेदभाव

इकाई 11 प्रजनन की नई प्रौद्योगिकियाँ

इकाई 12 विवाह एवं प्रवास

## सामाजिक स्तरीकरण(BSOE 148) 6 credits

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को सामाजिक असमानता तथा उसके समाजशास्त्रीय अध्ययन के बारे में विशेष जानकारी देता है। इसमें सामाजिक स्तरीकरण के अनेक स्वरूप और संस्थानिक प्रकटीकरण की सैद्धांतिक तथा कुछ केस अध्ययन के द्वारा खोज किया गया है।

## पाठ्यक्रम संरचना


**खंड 1 सामाजिक स्तरीकरण परिचय**

इकाई 1 प्रमुख अवधारणाएँ

इकाई 2 सामाजिक स्तरीकरण के आधार

**खंड 2 परिप्रेक्ष्य**

इकाई 3 मार्क्सवादी

इकाई 4 वेबेरियन

इकाई 5 प्रकार्यवादी

इकाई 6 अंतःक्रियात्मक एवं क्रियात्मक सिद्धांत

**खंड 3 सामाजिक स्तरीकरण के आयाम**

इकाई 7 प्रजाति एवं नृजाति

इकाई 8 जाति एवं वर्ग

इकाई 9 लैंगिक व असमानता

**खंड 4 सामाजिक गतिशीलता एवं पुर्नउत्पादन**

इकाई 10 गतिशीलता की अवधारणा तथा उसके स्वरूप

इकाई 11 गतिशीलता के घटक एवं बल

इकाई 12 सांस्कृतिक एवं सामाजिक पुर्नउत्पादन


ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

**Study of Poet Mirza Ghalib (BUDE 141)** **6 credits**

## مرزا غالب کا خصو صی مطا لعہ

بی۔ ا ے 5th سمیسٹر کے کورس" BUDE-141 مرزا غالب کا خصو صی مطالعہ" کی تفصیلا ت درج ذیل ہیں۔ یہ کورس 6 کریڈٹ کا ہے اس کے 3 بلا ک اور 11 اکائیا ں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Ghalib ke Swanehi Kwayef**
**Block 2. Ghalib Ki Khususiyaat Part-I**
**Block 3. Ghalib Ki Khususiyaat Part-II**

بلا ک 1۔ سوانحی کوائف
1۔ انیسویں صدی کا ادبی، تہذیبی و معاشرتی ماحول
2۔ غالب کی سوانح اور شخصیت
3۔ غالب کے معاصرین
بلا ک 2۔ غالب کی خصوصیات(حصہ اول)
4 غا لب کا شعری اسلوب
5۔ غا لب کی غزل گوئی

6۔ یہ نہ تھی ہماری قسمت کہ وصال یار ہوتا متن کی تدریس
ہوئی تاخیر تو کچھ باعث تاخیر بھی تھا متن کی تدریس
دل ہی تو ہے نہ سنگ و خشت متن کی تدریس
آہ کو چاہئے اک عمر اثر ہونے تک متن کی تدریس
بس کہ دشوار ہے ہر کام کا آساں ہونا متن کی تدریس
پھر مجھے دیدہ تر یاد آیا متن کی تدریس
درد منت کشِ دوا نہ ہوا متن کی تدریس

بلاک3۔ غا لب کی خصوصیات (حصہ دوم)
7۔ غالب کی قصیدہ گوئی
8۔ قصیدہ"دہر جز جلوۂ یکتائی معشوق نہیں"کے منتخبہ متن کی تدریس
9۔ خطوطِ غالب کی خصوصیات
10۔خطوطِ غالب منتخبہ متن کی تدریس
11۔غالب کی انفرادیت

**Study of Meer Amman Dehalwi (BUDE 142)** **6 credits**

## میر امن دہلوی کا مطالعہ

بی۔ اے 6th سمیسٹر کے کورس" BUDE-142 میر امن دہلوی کا مطالعہ" کی تفصیلا ت درج ذیل ہیں۔ یہ کورس 6 کریڈٹ کا ہے اس کورس کے 2 بلا ک اور 8 اکائیاں ہیں جس کے لئے آپ کو 180 گھنٹے پڑھائی کے لئے اپنے کو مصروف رکھنا ہو گا۔

**Block 1. Part 1st**

**Block 2. Part IInd**

بلا ک 1۔ حصہ اول

1۔ ہندوستان میں داستان گوئی کی روایت

2۔ میر امّن کا عہد

3۔ میر امّن: شخصیت اور فن

بلا ک۔ 2 حصہ دوم

3۔ فورٹ ولیم کالج اور میر امّن

4۔ میر امّن کا اسلوب نگارش

5۔ میر امّن کی سلاست اور دہلوی اردو

6۔ میر امّن کی داستان نگاری

7۔ باغ و بہار اور ا س کا ماخذ

8۔ باغ و بہار (منتخبہ متن کی تدریس)

# DETAILS OF ABILITY/SKILL ENHANCEMENT COURSES

## A) ABILITY ENHANCEMENT COMPULSORY COURSES

### विज्ञान

**पर्यावरण अध्ययन : (BEVAE- 181)** **क्रेडिटः 4**

**हमारा पर्यावरण :** पर्यावरण की अवधारणा, पर्यावरण के विभिन्न घटक और उनके संबंध, मानव–पर्यावरण संबंध, संपोषणीयता और सतत विकास की संकल्पना, पर्यावरणीय अध्ययन की बहुविषयी प्रकृति, विस्तार और महत्व।

**पारिस्थितिक तंत्र :** पारिस्थितिक तंत्र क्या है?, पारिस्थितिक तंत्र की परिभाषा, पर्यावरण के तत्व– उत्पादक, उपभोक्ता, अपघटक; पारिस्थितिक तंत्र के कार्य और निर्माण, पारिस्थितिक तंत्र में ऊर्जा प्रवाह, पोषी स्तर, आहार श्रृंखला, आहार–जाल, पारिस्थितिक पिरामिड और पारिस्थितिक अनुक्रम।

**प्रमुख पारितंत्र :** वन पारितंत्र, धास-स्थल पारितंत्र, मरुस्थल पारितंत्र और जलीय पारितंत्रः केस स्टडीज।

**थल एवं जल संसाधन :** नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधन, संसाधन के रुप में भूमि, भूमि–उपयोग परिवर्तन, भूमि निम्नीकरण, मृदा अपरदन और मरुस्थ्लीकरण, भूमि संसाधन का संरक्षण और प्रबंधन; कैस स्टडीज। संसाधन के रुप में जल, सतह और भूजल का अति दोहन, बाढ़ और सूखा, अंतर्राष्ट्रीय और अंतर्राज्यीय जल विवाद, जल संसाधन का संरक्षण और प्रबंधन : केस स्टडीज।

**वन संसाधन :** वन एक संसाधन के रुप में, वन अपरुपण और उसके कारण; खनन कार्य और बांध निर्माण का पर्यावरण, वन और जैव विविधता पर प्रभाव, जनजातीय जनसंख्या पर प्रभाव, वन संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन : केस स्टडीज।

**जैव विविधता : मूल्य और सेवाएं :** जैव विविधता की परिभाषा , जैव विविधता के स्तर, आनुवंशिक विविधता, प्रजातीय विविधता, पारितंत्र विविधता, भारत के जैव – भौगोलिक क्षेत्र और इनकी जैव विविधता, वैश्विक जैव विविधता हॉट स्पॉट, भारत एक विशाल जैव विविधता वाला देश, संकटग्रसत और भारत के स्थानीय प्रजाति, जैव विविधता सेवाएंः पारिस्थितिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और सौंदर्यपरक सूचना मूल्य।

**ऊर्जा संसाधन :** परंपरागत और गैर–परंपरागत स्रोत, वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत के उपयोग, ऊर्जा जरुरतों की मांग, ऊर्जा संसाधनों के संरक्षण और प्रबंधनः केस स्टडीज।

**जैव विविधता : खतरे और संरक्षण :** जैव विविधताः खतर और संरक्षण जैव विविधता के खतरेः अधिवास की हानि, वन्य जीवों का अवैध शिकार, भारत के संदर्भ में मनुष्य–वन्यजीव संघर्ष, जैविक आक्रमण, जैवविधि ाता संरक्षणः यथास्थल और बहिःस्थल संरक्षण।

**पर्यावरणीय प्रदूषण और संकट :** परिभाषा, प्रकार, कारण, प्रभाव और उसके नियंत्रणः वायु, जल, मृदा और ध्वनि प्रदूषण, नाभिकीय संकट, संकट और प्रदूषण, मानव स्वास्थ्य संकटः केस स्टडीज।

**अपशिष्ट प्रबंधन :** ठोस अपशिष्ट प्रबंधनः ओद्यौगिक और शहरी अपशिष्ट माप के कारणः केस स्टडीज।

**वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दे :** भूमंडलीय तापन, जलवायु परिवर्तन, ओज़ोन परत ह्रासन, अम्ल वर्षा और उसके प्रभाव।

**पर्यावरण नियमावली :** पर्यावरण रक्षा अधिनियम; वायु (प्रदूषण के बचाव और नियंत्रण) अधिनियम; जल (प्रदूषण के बचाव और नियंत्रण) अधिनियम, वन्य जीवन अधिनियम, वन संरक्षण अधिनियम, अंतर्राष्ट्रीय समझौते, मांट्रियल प्रोटोकॉल, जैविक विविधता पर सम्मेलन।

**मानव समुदाय और पर्यावरण :**मानव जनसंख्या वृद्धिः पर्यावरण, मानव स्वास्थय और कल्याण पर इसका प्रभाव, पुनर्वास परियोजना से प्रभावित लोगों पर केस स्टडीज, आपदा प्रबंधन; प्राकृतिक आपदाएंः बाढ़, भूकंप, चक्रवात और भूस्खलन।

**पर्यावरणीय नीतिशास्त्र :** पर्यावरण संरक्षण में धार्मिक और संस्कृति में भारतीयों की भूमिका, पर्यावरणीय संप्रेष्ण और आमजन जागरुकता, केस स्टडीज।

## English

### English Communication Skills (BEGAE 182) 4 credits

English Communication Skills is of 4 credits and has 3 Blocks and 11 Units. Communication involves both verbal and non-verbal communication. In this Course we give you an understanding of the communication process, the barriers to it, the skills involved in communication i.e. listening, speaking, reading and writing in both formal and informal contexts. We discuss the differences between spoken and written forms of the language and make you sensitive to conversational skills which include to a large extent, body language.

## हिंदी

### हिंदी भाषा और संप्रेषण (BHDAE 182) 4 credits

इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा और संप्रेषण से संबंधित बिंदुओं का अध्ययन कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में हिंदी भाषा और संप्रेषण से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

हिंदी भाषा का विकास, भाषा की परिभाषा, प्रकृति एवं विविध रूप; **हिंदी भाषा की विशेषताएँ :** क्रिया, विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण एवं अव्यय संबंधी। **हिंदी की वर्ण–व्यवस्था :** स्वर एवं व्यंजन। स्वर के प्रकार –ह्रस्व, दीर्घ तथा संयुक्त। व्यंजन के प्रकार–स्पर्श, अन्तस्थ, ऊष्म, अल्पप्राण, महाप्राण, घोष तथा अघोष। **वर्गों का उच्चारण स्थान :** कण्ठ्य, तालव्य, मूर्द्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य तथा दन्तोष्ठ्य। बलाघात, संगम, अनुतान तथा संधि। **भाषा संप्रेषण के चरण :** श्रवण, अभिव्यक्ति, वाचन तथा लेखन। हिंदी वाक्य रचना, वाक्य और उपवाक्य। वाक्य भेद। वाक्य का रूपान्तर।

## B) SKILL ENHANCEMENT COURSES

## मानवविज्ञान

### पर्यटन मानवविज्ञान (BANS 183) 4 credits

औद्योगिक क्षेत्र में आजकल पर्यटन को तेजी से बढ़ावा मिल रहा है। आदिकाल से ही मानव अपनी सहज जिज्ञासा के साथ यह जानने की उत्कंठा में रहा है कि उनके निकटवर्ती क्षितिज औऱ दूर के स्थानों पर क्या है। पर्यटन एक प्रकार यात्रा करने औऱ तलाश करने की आंतरिक मानवीय इच्छा से जुड़ा है। हर इंसान, एक समय पर एक पर्यटक के रूप में दिखाई देता है, चाहे वह छोटी छुट्टी पर जा हो या तीर्थयात्रा पर। पर्यटन न केवल उन लोगों के जीवन को प्रभावित करता है जो एक पर्यटक के रूप में स्थानों का दौरा करते हैं बल्कि यह मेजबान समुदाय औऱ उनके सामाजिक–आर्थिक जीवन प्राकृतिक वातावरण, कलात्मक प्रस्तुतियों को भी प्रभावित करता है। इस प्रकार, मानव विज्ञान पर्यटन के साथ जटिल रूप से जुड़ा हुआ है।

चार क्रेडिट के इस पाठयक्रम में हम पर्यटन और पर्यटकों के मानवविज्ञान को समझने की कोशिश करेंगे। यह पाठ्यक्रम मानवविज्ञान दृश्टि के माध्यम से पर्यटन के विकास औऱ पर्यटन के कारण संस्कृति के होने वाले आधुनिकीकरण को समझने की दृष्टि प्रदान करता है। इस पाठ्यक्रम में मूर्त–अमूर्त धरोहरों और पर्यटन मानवविज्ञान के क्षेत्र में नए उभरते क्षेत्रों भी को ध्यान में रखा गया है।

**पाठ्यक्रम की आवश्यकता:** किसी भी विषय में सीबीसीएस बी.एससी/बीए कार्यक्रम में नामांकित शिक्षार्थी तीसरे सेमेस्टर में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। पाठ्यक्रम के लिए एक शिक्षार्थी को पर्यटन और लोगों के जीवन और संस्कृति में गहरी रुचि रखने की अपेक्षा की जाती है।

**पाठ्यक्रम संरचना**

**खंड 1 पर्यटन की समझ**

इकाई 1 पर्यटन का परिचय

इकाई 2 पर्यटक और पर्यटन

इकाई 3 मानववैज्ञानिक दृश्टि से पर्यटन

इकाई 4 पर्यटन और संस्कृति

इकाई 5 संस्कृति का उत्पादन

**खंड 2 मानव विज्ञान और पर्यटन में उभरते ट्रेंड्स**

इकाई 6 पर्यटन की राजनीतिक अर्थव्यवस्था

इकाई 7 पर्यटन बनाम विरासत स्थल

इकाई 8 मूर्त और अमूर्त विरासत

इकाई 9 ईकोटूरिज्म

इकाई 10 पर्यटन मानव विज्ञान की नई दिशाएं

## सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी विज्ञान (BANS 184) 4 credits

मानवविज्ञान मानव का एक समग्र, तुलनात्मक व जैव–सांस्कृतिक अध्ययन है। मानव आबादी की विविधता को समझने के लिए मानवविज्ञानियों ने संचारी और गैर–संचारी जैसे विभिन्न रोगों को समझने में ध्यान केंद्रित किया है। चूंकि, अधिकांश प्रभाव पर्यावरणीय कारकों से जुड़े होते हैं इसलिए मानवविज्ञानियों ने पर्यावरण और सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के माध्यम से बीमारियों को समझने में रुचि दिखाई। यही कारण है कि सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी विज्ञान का विषय मानव विज्ञान का मुख्य घटक बन गया।

**पाठ्यक्रम का विवरण:** इस पाठ्यक्रम में तीन खंड (4 क्रेडिट) शामिल हैं। खंड-I सार्वजनिक स्वास्थ्य और महामारी विज्ञान के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के दायरे से संबंधित है। खंड-II शिक्षार्थियों को रोगों की संभावनाओं में विभिन्न सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों से अवगत कराता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य के तरीके और प्रबंधन को भी इस अनुभाग में बताया गया है। विभिन्न सांख्यिकीय उपकरणों और अनुसंधान विधियां जो महामारी विज्ञान पर अध्ययन करने में मदद करती हैं, उन पर खंड-III में चर्चा की जाएगी।

**पाठ्यक्रम की आवश्यकता:** किसी भी विषय में सीबीसीएस बी.एससी/बीए में नामांकित शिक्षार्थी चौथी छमाही (सेमेस्टर) में इस पाठ्यक्रम का विकल्प चुन सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में सीखने वाले को मानव आबादी, उसकी विविधताओं के अतिरिक्त इस उत्सुकता की आवश्यकता है कि पर्यावरण और सामाजिक–सांस्कृतिक कारक बीमारियों से कैसे संबंधित हो सकते हैं।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 महामारी विज्ञान और सार्वजनिक स्वास्थ्य में अनिवार्य तत्व**

इकाई 1 महामारी विज्ञान

इकाई 2 सार्वजनिक स्वास्थ्य

इकाई 3 पर्यावरणीय स्वास्थ्य

इकाई 4 रोग निदान का विज्ञान

**खंड 2 सार्वजनिक स्वास्थ्य और प्रबंधन में मनोवैज्ञानिक, व्यवहारिक और सामाजिक मुद्दे**

इकाई 5 स्वास्थ्य और बीमारी पर सामाजिक कारकों का प्रभाव

इकाई 6 सार्वजनिक स्वास्थ्य के सिद्धांत और विधियां

इकाई 7 भारतीय सरकार और गैर–सरकारी संगठन द्वारा स्वास्थ्य देखभाल कार्यक्रमों का प्रबंधन

**खंड 3 सार्वजनिक स्वास्थ्य में अनुसंधान और सांख्यिकीय विधियां**

इकाई 8 अनुसंधान के तरीके और सांख्यिकीय उपकरण

इकाई 9 डेटा(तथ्य) विश्लेशण

इकाई 10 उच्च स्तरी सांख्यिकीय (एडवांस स्टैटिस्टिक्स)

## अर्थशास्त्र

### आंकड़ा का विश्लेषण (BECS 184) 4 credits

अनेक ऐसे अध्येता जिन्हें गणित, सांख्यिकी और अर्थशास्त्र से कुछ परिचय है, अन्य विषयों में ऑनर्ज कर रहे हैं। उन्हें स्वंय को सांख्यिकीय एवं गणितीय ज्ञान को वास्तविक जीवन की प्रावस्थाओं के विश्लेषण के लिए प्रयोग करने की संविधियों से सन्नद्ध करने की आवश्यकता है। ऐसे कौशल उन्हें विभिन्न सामाजिक एंव सांस्कृतिक संस्थाओं, गैर सरकारी संगठनों आदि में निम्न से मध्यम स्तर पर काम कर पाने में सहायक होगें। आंकड़ो के विश्लेषण का यह पाठ्यक्रम उनकी आवश्यकता को पूरा करने के लिए बनाया गया हैं।

**पाठ्यक्रम संरचना**

**गणितीय एंव सांख्यिकीय संकल्पनाएंः एक सिंहावलोकन**

इकाई 1 गणितीय संकल्पनाएं

इकाई 2 सांख्यिकीय संकल्पनाए

इकाई 3 सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर से एक परिचय

**खण्ड 2 आंकड़ा संकलन और प्रस्तुति**

इकाई 4 आंकड़ा संकलनः विधियाँ और स्रोत

इकाई 5 आंकडा संकलन के उपस्कर

इकाई 6 आंकड़ो की प्रस्तुति

**खण्ड 3 परिमाणात्मक आंकड़ो का विश्लेषण**

इकाई 7 एकल चर आंकड़ा विश्लेषण

इकाई 8 द्विचर आंकड़ा विश्लेषण

इकाई 9 बहुचर आंकड़ा विश्लेषण

इकाई 10 संयुक्त सूचकांक

**खण्ड 4 गुणात्मक आंकड़ों का विश्लेषण**

इकाई 11 भागीदारी विधि

इकाई 12 विषय वस्तु विश्लेषण

## ENGLISH

### Writing and Study Skills (BEGS 183) 4 credits

In order to be successful in the sphere of education and the work place, it is important to develop good study habits and improve our writing skills. In this course Writing and Study Skills (4 credits) we begin with the basics of good writing which includes developing our critical, analytical and interpretive skills. Along with that we need to improve our vocabulary and refine our punctuation skills. We also need grammar to write not only with fluency but with accuracy. The course also includes note taking skills and development of the skill of summary writing.

## English Language Teaching (BEGS 185) 4 credits

Many of you are going to be language teachers after you finish your B.A. English language teaching (4 credits) gives you a bird's eye view of what it would entail if you were to become an English teacher. The course includes knowing the learner, being a reflective teacher, strategies for teaching in the classroom, creating and adapting materials, using information technology and understanding the basics of assessment.

## Business Communication (BEGS 186) 4 credits

Business Communication (4 credits) will give you an understanding of a business organization and the jobs and responsibilities which are part of it. It will also deal with communication in the business context i.e., internal business correspondence, external business correspondence, project proposals and business reports, and so on.

# हिंदी

## अनुवाद सिद्धांत और प्रविधि (BHDS 183) 4 credits

यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

अनुवाद का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकृति; अनुवाद कार्य की आवश्यकता एवं महत्व; बहुभाषी समाज में परिवर्तन तथा बौद्धिक– सांस्कृतिक आदान–प्रदान में अनुवाद कार्य की भूमिका। **अनुवाद के प्रकार :** शाब्दिक अनुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद एवं सारानुवाद; अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण– विश्लेषण, अंतरण एवं पुनर्गठन; अनुवाद की भूमिका के तीन पक्ष–पाठक की भूमिका (अर्थग्रहण की) द्विभाषिक की भूमिका (अर्थांतरण की प्रक्रिया) एवं रचयिता की भूमिका (अर्थसंप्रेषण की प्रक्रिया)। सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद की अपेक्षाएं; सर्जनात्मक साहित्य के अनुवाद और तकनीकी अनुवाद में अंतर; गद्यानुवाद एवं काव्यानुवाद में संरचनात्मक भेद; किन्हीं दो अनूदित कृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन : क) 'गीतांजलि' का हिंदी अनुवाद–हंस कुमार तिवारी ख) आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा हिंदी में किया गया भावानुवाद 'विश्वप्रपंच की भूमिका'। **कार्यालयी अनुवाद :** राजभाषा नीति की अनुपालना में धारा 3(3) के अंतर्गत निर्धारित दस्तावेज का अनुवाद। शासकीय पत्र/अर्धशासकीय पत्र/परिपत्र (सर्कुलर)/ज्ञापन (प्रजेंटेशन)/कार्यालय आदेश/अधिसूचना/संकल्प–प्रस्ताव (रेज्योलूशन)/निविदा–संविदा/विज्ञापन। पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के सिद्धांत, कार्यालय, प्रशासन विधि, मानविकी, बैंक एवं रेलवे में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख पारिभाषिक शब्दावली तथा प्रमुख वाक्यांश के अंग्रेजी तथा हिंदी रूप।

## रेडियो लेखन (BHDS 184) 4 credits

यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

माध्यम के रूप में रेडियो : रेडियो : एक परिचय, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, संकेत और कोड, दृश्य संकेतों का श्रव्य संकेतों में परिवर्तन (रेडियो रूपांतरण)। जनसामान्य तक पहुँचाना : रेडियो और जनसंचार, रेडियो समाचार लेखन, जन सेवा उद्घोषणाएं, प्रचार और रेडियो विज्ञापन, डॉक्यूमेंट्री, रूपक, पत्रिका और व्यक्ति चित्र, वार्ता, साक्षात्कार और परिचर्चा। रेडियो लेखन में कल्पना का महत्व : रेडियो नाटक, रेडियो के लिए उपन्यासों और कहानियों का रूपांतरण, मनोरंजन संबंधी कार्यक्रम, आँखों देखा हाल (कमेंट्री)। रेडियो और शिक्षा : शिक्षा के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका, बच्चों के लिए रेडियो, स्कूल के लिए प्रसारण, अनौपचारिक शिक्षा में रेडियो की भूमिका, मुक्त शिक्षा प्रणाली में रेडियो की भूमिका।

## टेलीविजन लेखन (BHDS 185) 4 credits

यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

**पटकथा लेखन के मूल आधार :** दृश्य माध्यम की विशेषताएं, पटकथा लेखन की विशेषताएं, रचनात्मक लेखन और पटकथा लेखन, पटकथा की भाषा, पटकथा में पात्र। **टेलीविजन के लिए लेखन :** टेलीविजन माध्यम की विविध विधाएं, टेलीविजन लेखन की पारिभाषिक शब्दावली, संवाद लेखन, पटकथा लेखन। **धारावाहिक लेखन :** कथा, दृश्य विभाजन, धारावाहिक लेखन में संवाद, धारावाहिक लेखन में पात्र। **वृत्तचित्र टेलीविजन** वृत्तचित्र का स्क्रिप्ट लेखन, दृश्य और कमेंट्री, **वृत्तचित्र :** अभ्यास। **साहित्यिक रचनाओं का रूपांतरण :** कहानी का रूपांतरण, उपन्यास का रूपांतरण, नाटक का रूपांतरण।

## समाचार संकलन और लेखन (BHDS 186) 4 credits

इस पाठ्यक्रम में समाचार संकलन और लेखन से संबंधित प्रमुख बिंदुओं का अध्ययन कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम 4 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में समाचार संकलन और लेखन से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है :

**समाचार :** अवधारणा, परिभाषा, बुनियादी तत्व, समाचार और संवाद, संरचना (घटक), समाचार मूल्य। समाचार के स्रोत। **समाचार संग्रह–पद्धति और लेखन–प्रक्रिया :** सिद्धांत और मार्गदर्शक बातें। विकासशील और जनरुचि की दृष्टियां। समाचार का वर्गीकरण। खोजी, व्याख्यात्मक, अनुवर्तन समाचार। **संवाददाता :** भूमिका, अर्हता, श्रेणियां, प्रकार्य एवं व्यवहार–संहिता। **रिपोर्टिंग के क्षेत्र और प्रकार :** विधायिका, न्यायपालिका, मंत्रालय और प्रशासन, विदेश, रक्षा, राजनीति, अपराध और न्यायालय, दुर्घटना एवं नैसर्गिक आपदा, ग्रामीण, कृषि, विकास, अर्थ एवं वाणिज्य, बैठकें एवं सम्मेलन, संगोष्ठी, पत्रकार, वार्ता, साहित्य एवं संस्कृति, विज्ञान, अनुसंधान एवं तकनीकी विषय, खेलकूद, पर्यावरण, मानवाधिकार और अन्य सामाजिक विषयों और क्षेत्रों से संबंधित रिपोर्टिंग। इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्राप्त समाचारों का पुनर्लेखन। **लीड :** अर्थ, प्रकार, लिखने की कला, महत्व। **शीर्षक :** अर्थ, प्रकार, लिखने की कला, महत्व। **रिपोर्टिंग :** कला और विज्ञान के रूप में विश्लेषण, वस्तुपरकता और भाषा–शैली।

# मनोविज्ञान

## संवेगात्मक बुद्धि (BPCS 183) 4 credits

यह एक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम है और तीसरा सेमेस्टर का भाग है। इस पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी को संवेगात्मक बुद्धि की आवश्यकता, प्रासंगिकता एवं महत्व को दर्शाता है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षार्थी बुद्धि एवं संवेगात्मक बुद्धि के अंतर को समझ पायेंगें और संवेगात्मक बुद्धि को बढ़ाने के उपाय भी जान पाऐंगें। इस पाठ्यक्रम को समन्वय प्रो. स्वाती पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

## स्कूल मनोविज्ञान (BPCS 184) 4 credits

यह एक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम है और चौथे सेमेस्टर का भाग है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थी को स्कूल मनोविज्ञान से अवगत कराना है। इस पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षार्थी को बाल विकास के मानक, स्कूल के बच्चों में व्यवहारिक एवं संवेगात्मक समस्यायें और संबंधित मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप के बारे में जानकारी मिलेगी। इस पाठ्यक्रम में बाल अधिकार और उनकी सुरक्षा से संबंधित नियमों का भी उल्लेख है। इस पाठ्यक्रम को समन्वय डा. मोनिका मिश्रा, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

### संवेगात्मक क्षमता का विकास (BPCS 185) 4 credits

यह एक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम है और तीसरे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम संवेग की अवधारणा को प्रस्तुत करेगा और संवेगात्मक बुद्धिमता एवं भावनात्मक क्षमता के बीच संबंधों को उजागर करेगा। इसके अलावा यह शिक्षार्थियों को संवेगात्मक क्षमताओं को विकसित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों को जानने और हासिल करने में सहायता करेगा। इस कार्य का समन्वय प्रो. स्वाती पात्रा, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

### तनाव प्रबंधन (BPCS 186) 4 credits

यह कोर्स एक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम है और चौथे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को तनाव की अवधारणा, प्रकृति और अभिव्यक्ति को समझने में मदद करेगा। इसके अलावा, यह तनाव के प्रबंधन की विभिन्न रणनीतियों से परिचित कराएगा। इस पाठ्यक्रम का सारांश तनाव की अवधारणा इसके स्रोतों और प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करेगा। इसके अलावा, यह विभिन्न तनाव प्रबंधन तकनीकों से भी अवगत करायेगा। इस कार्य का समन्वय प्रो. सुहास शेटगोवेकर, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

### मानव संसाधन प्रबंधन (BPCS 187) 4 credits

यह कोर्स एक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम है और पांचवें सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को मानव संसाधन प्रबंधन और मुख्य अवधारणों से अवगत करायेगा। मानव संसाधन के कई तकनीक जैसे कि चयन, नियुक्ति, प्रदर्शन तथा मूल्यांकन शिक्षार्थियों को और कई और पहलू को सीखने और समझने में सहायता करेगा। इस कार्य का समन्वय प्रो. सुहास शेटगोवेकर, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

### सामाजिक मनोविज्ञान का अनुप्रयोग (BPCS 188) 4 credits

यह एक कौशल वृद्धि पाठ्यक्रम है और छठे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को सामाजिक मुद्दों को समझने और उनके समाधान करने के लिए सामाजिक मनोविज्ञान के सिद्धांतों को लागू करने में मदद करेगा। इस कार्य का समन्वय डॉ स्मिता गुप्ता, मनोविज्ञान संकाय, एसओएसएस द्वारा किया जा रहा है।

## लोक प्रशासन

### संभारण प्रबंधन (BPAS 184) 4 credits

**उद्देश्य–**संभारण प्रबंधन आपूर्ति श्रृखंला (Supply Chain Management) का एक हिस्सा है, जिसमें ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए योजना, कार्यान्वयन, संचार को नियंत्रित करना, वस्तुओं और सेवाओं के भंडारण, और मूल बिंदु और उपभोग के बिंदु के बीच संबधित जानकारी सम्मिलित है।

संभारण प्रबंधन पर यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को संभारण प्रबंधन चक्र संभरण के सिद्धांतो, अवधारणाओं को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। संभारण प्रबंधन के महत्वपूर्ण घटक जिसमें सामग्री/पदार्थ की खरीद और सूची नियंत्र, निगरानी, पैकेजिंग, परिवहन, भंडारण, और सूचना निगरानी का विश्लेषण शामिल है। संभारण प्रबंधन के क्षेत्र में उभरते रूझान जिसमें ग्राहकों की सतुष्टि, ग्रीन लॉजिस्टिक्स, आउटसोर्सिंग, संभारण प्रबंधन से संबधित मुद्दों और इसकी चुनौतियाँ शामिल हैं।

## पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 संभारण प्रबंधन का परिचय**

इकाई 1 संभारण : अवधारणा, सिद्धांत और रूप

इकाई 2 संभारण प्रबंधन : वैचारिक ढांचा, क्षेत्र और महत्व

इकाई 3 संभारण आपूर्ति श्रृखंला प्रबंधन–अंतर संबंध

इकाई 4 संभारण प्रबंधन चक्र

**खण्ड 2 संभारण प्रबंधन : घटक**

इकाई 5 सामग्री और सूची नियंत्रण की खरीद

इकाई 6 सामग्री निगरानी (हैंडलिंग) और पैकेजिंग

इकाई 7 परिवहन, भंडारण और संचयन

इकाई 8 सूचना की निगरानी

इकाई 9 संभारण सूचना प्रणाली

**खण्ड 3 संभारण प्रबंधन : उभरती प्रवृतियाँ**

इकाई 10 ग्राहक संतुष्टि

इकाई 11 ग्रीन लॉजिस्टिक्स

इकाई 12 आउटसोर्सिंग संभारण प्रबंधन : मुद्दे

इकाई 13 प्रणाली संभारण प्रबंधनः चुनौतियाँ

## तनाव और समय प्रबंधन (BPAS 186) 4 credits

प्रतिदिन हम विभिन्न स्थितियों में तनाव और समय से संबंधित मुद्दों को अनुभव करते हैं। इस पाठ्यक्रम में, विद्यार्थी यह सीखेंगे कि वे किस तरह सफलता प्राप्त करने के लिए तनाव का सामना कर सकते हैं; और समय प्रबंधन का अधिक प्रभावी ढंग से सदुपयोग कर सकते हैं। यह पाठ्यक्रम तनाव और समय प्रबंधन को समझने पर ध्यान केंद्रित करता है। तनाव और निकृष्ट कोटि के समय प्रबंधन के कारणों एवं प्रभावों का पता लगाने के लिए यह पाठ्यक्रम कार्यस्थल के तनाव; कार्यस्थल पर विकर्षण अर्थात् समय गंवाने; कार्य–निष्पादन पर निकृष्ट समय प्रबंधन के प्रभाव; और स्वास्थ्य पर तनाव के प्रभाव पर विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित करता है। अतः इन कारणों और प्रभावों को ध्यान में रखते हुए, अध्ययन समय गंवाने और समय बचाने संबंधी कारकों; तथा तनाव और समय प्रबंधन की प्रभावी विधियों एवं दृष्टिकोणों को उजागर करता है। अंत में,पाठ्यक्रम जीवन में सुख–शांति तथा सफलता प्राप्त करने के लिए, तनाव और समय प्रबंधन के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित करता है।

## पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 तनाव और समय प्रबंधन को समझना**

इकाई 1 तनाव को समझना

इकाई 2 समय प्रबंधन को समझना

**खंड 2 तनाव एवं निकृष्ट समय प्रबंधन**

इकाई 3 कार्यस्थल के तनाव : प्रमुख कारण

इकाई 4 समय गंवाना : कार्यस्थल पर विकर्षण

इकाई 5 निकृष्ट समय प्रबंधन : कार्य–निष्पादन पर प्रभाव

इकाई 6 तनाव और स्वास्थ्य : स्वास्थ्य पर तनाव के प्रभाव

**खंड 3 तनाव और समय प्रबंधन की ओर**

इकाई 7 समय गंवाने और समय बचाने संबंधी कारक

इकाई 8 तनाव प्रबंधन : प्रभावी विधियाँ एवं दृष्टिकोण

इकाई 9 समय प्रबंधन : प्रभावी विधियाँ एवं दृष्टिकोण

इकाई 10 तनाव और समय प्रबंधन : सुख–शांति तथा सफलता की ओर

## प्रजातिलेखन फिल्म निर्माण की तकनीक (BSOS 184) 4 credits

**पाठ्यक्रम उद्देश्य–**यह पाठ्यक्रम अन्य लिखित रूप के माध्यम से समाजशास्त्र और सामाजिक नृविज्ञान करने पर केन्द्रित हैं, विशेष रूप, मौखिक, कर्ण–संबंधी और दृश्य। यह विद्यार्थियों को विवरण और तर्क के रूप और विधि के रूप में फिल्म तकनीकों का परिचय देता है। और फिल्म और लिखित विद्या के बीच तुलना को नृवंशविज्ञान के रूप में सक्षम बनाता है। एक सोच जिसका अनुसरण किया जा सकता है। वह यह है कि दृष्टिगत रूप से बाधित सामना, अनुभव और क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कैसे करते है। पाठ्यक्रम का संचालन समूह कार्य के माध्यम से किया जाएगा, जो नेत्रहीनों के बीच सीखने की प्रक्रिया को समक्ष करेगा।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 समाजशास्त्रीय और मानवविज्ञानः फिल्म निर्माण का परिचय**

इकाई 1 समाजशास्त्र, मानवविज्ञान और फिल्म निर्माणः मूल और छवि

इकाई 2 फिल्म निर्माण के विभिन्न साधन

**खंड 2 सामाजिक अनुसंधान में कैमरे के उपयोग को समझना**

इकाई 3 फिल्म निर्माता और फिल्म बनाना 'नैतिकता' की समझ और संबंध

इकाई 4 तात्पर्य का संपादन और निर्माण

इकाई 5 विभिन्न शाट्स और कैमरा गतिविधि को समझना

इकाई 6 फिल्म संपादन के लिए उपकरण

**खंड 3 फिल्मांकन मौखिक ब्यान, साक्षात्कार और परस्पर क्रिया : केस अध्ययन**

इकाई 7 अंतिम फिल्म परियोजना

## दृश्यात्मक दृष्टि से समाज (BSOS 185) 4 credits

यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को दृश्य आंकड़ों के विश्लेषण एवं अनुसंधान का प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। फोटोग्राफी, फिल्म तथा मल्टीमीडिया आदि को समकालीन अनुसंधान में महत्त्वपूर्ण संसाधनों के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 दृश्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन : एक परिचय**

इकाई 1 दृश्य के माध्यम से समाज की समझ

इकाई 2 दृश्यों द्वारा अनुभव करना

**खंड 2 समाजशास्त्र तथा फोटोग्राफी की परिपाटी**

इकाई 3 फोटोग्राफी द्वारा छवि निर्माण

इकाई 4 फोटोग्राफी, स्वत्व एवं समाज

इकाई 5 फोटोग्राफी अनुसंधान के तकनीक के रूप में

**खंड 3 समाजशास्त्र में वीडियो एवं फिल्म**

इकाई 6 वीडियो व फिल्म के माध्यम से प्रस्तुतीकरण

इकाई 7 फिल्म तथा वीडियो अनुसंधान के तकनीक के रूप में

**खंड 4 समाजशास्त्र, मल्टीमीडिया व हाइपरमीडिया**

इकाई 8 समाज, मल्टीमीडिया व हाइपरमीडिया

इकाई 9 मल्टीमीडिया तथा हाइपरमीडिया अनुसंधान के तकनीक के रूप में

# GENERIC ELECTIVE COURSES

## ENGLISH

### Media and Communication Skills (BEGG 171) 6 credits

Through this course we propose to introduce you to the various channels of mass media such as the newspaper, magazine, radio, television and, last but not the least, the internet. The internet today, with things like blogs, message boards, podcasts, video sharing, etc., has given the ordinary man and woman more power than s/he ever enjoyed in the past and, which until recent times, was availed only by the mass media producers. New technologies have transformed the world of media. They have shattered the social boundaries of the world. People now live in close proximity because of the new inventions in technology. The idea of communication may be very simple but it leads to immensely interesting and sophisticated ramifications. Through this course we take up the functions and elements of communication and give you various strategies and rules about how to write for different mediums of mass communications.

### Language and Linguistics (BEGG 172) 6 credits

We use language all the time. Have you ever asked yourself the questions: What is language? Is it something unique to the human species? Does language only exist for social reasons? What about people who speak multiple languages? In this Course Language and Linguistics (6 credits) we attempt to answer some of these questions. We then focus on the sounds, word formation and sentence structures of the English language.

### Academic Writing and Composition (BEGG 173) 6 credits

As students we often need to turn in assignments which include essays, reports, projects, summaries, reviews and so on. We feel under-confident while doing so and lose marks not because we do not know the subject but because we are not trained in the process of writing for academic purposes. In this course (6 credits) we discuss the difference between academic and non-academic writing and different kinds of academic writing. We also revise different ways of writing paragraphs and composition, summary writing, note making and note taking and book and media reviews. Issues such as copyright and plagiarism are also discussed.

### Creative Writing (BEGG 174) 6 credits

This course in Creative writing provides understanding, skill and professional knowledge about the art of writing and develops the creative ability of those interested in a professional career as a freelance writer. The course includes the art and craft of creative writing and modes of creative writing. This includes: Feature Writing, Short Story Writing, Writing Poetry and Writing for the Media including the latest trends in New Media. Last but not the least we have included guidelines on preparing a manuscript and ethics in publishing.

## हिंदी

### BHDG 173 पाठ्यक्रम : समाचार पत्र और फीचर लेखन पाठ्य

इस पाठ्यक्रम में समाचार पत्र और फीचर लेखन से संबंधित प्रमुख बिंदुओं का अध्ययन कराया जाएगा। यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इस पाठ्यक्रम में अधिकतम 18 इकाइयाँ होंगी। इस पाठ्यक्रम में समाचार पत्र

और फीचर लेखन से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया गया है : समाचार पत्रों की दुनिया, समाचार पत्र के लिए लेखन की पद्धतियां, सम्पादकीय पृष्ठ के लिए लेखन, समाचार संकलन, लेखन एवं सम्पादन, फीचर लेखन की विशेषताएं, यात्रा लेखन : विषय का चयन और प्रस्तुति; समाजिक और सांस्कृतिक फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति; आर्थिक फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति; विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य सम्बन्धी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति; खेलक दू में फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति; समुदाय सम्बन्धी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुतिच; महिलाओं के सम्बन्ध में लेखन, बच्चों के संबंध में लेखन, किशोर, युवा और बुजुर्ग वर्ग के लिए लेखन, शहरी वर्ग के लिए लेखन, ग्रामीण वर्ग के लिए लेखन, पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं की समीक्षा, नाट्य प्रस्तुतियों, फिल्मों और कला प्रदर्शनियों की समीक्षा, साक्षात्कार : तैयारी, संपादन और संयोजन, व्यक्ति चित्र।

### BHDG 174 पाठ्यक्रम : सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र पाठ्य

यह पाठ्यक्रम 6 क्रेडिट का है। इसमें पाठ्यक्रम में निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया गया हैः रिपोर्ताजः अर्थ, स्वरूप, रिपोर्ताज एवं अन्य गद्य रूप, रिपोर्ताज और फीचर लेखन प्रविधि। फीचर लेखन :विषय–चयन, सामग्री–निर्धारण, लेखन–प्रविधि; सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विज्ञान, पर्यावरण, खेलक ूदसे सम्बद्ध विषयों पर फीचर लेखन। साक्षात्कार ''इण्टरव्यू/भेंटवार्ता'' : उद्देश्य, प्रकार, साक्षात्कार–प्रविधि, महत्व। स्तंभ लेखन : समाचार पत्र के विविध स्तंभ, स्तंभ लेखन की विशेषताएँ, समाचार पत्र और सावंधिपत्रिकाओं के लिए समसामयिक, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक सामग्री का लेखन; सप्ताहांत अतिरिक्त सामग्री और परिशिष्ट। दृश्य–सामग्री ''छायाचित्र, कार्टून, रेखाचित्र, ग्राफिक्स आदि'' से संबंधित लेखन। बाजार, खेलक ूद, फिल्म, पुस्तक और कला समीक्षा। आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, ग्रामीण और विकासपत्रकारिता, फोटो पत्रकारिता।

## मनोविज्ञान

### सामान्य मनोविज्ञान (BPCG 171) 6 credits

यह एक सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम है और पहले सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थी को मानव व्यवहार के विभिन्न पहलुओं से अवगत करायेगा। इस पाठ्यक्रम को ड़ॉ स्मिता गुप्ता, मनोविज्ञान विभाग, एसओएसएस द्वारा समन्वित किया जा रहा है।

### युवा, जेंडर एवं पचान (BPCG 172) 6 credits

यह एक सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम है और छठे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को युवा, जेंडर और उनके पहचान के अवधारणा से परिचित कराएगा और यह एक दूसरे से कैसे जुड़े हुए हैं, इसके बारे में ाानत कराएगा। यह पाठ्यक्रम विकास के सिद्धांतों पर चर्चा करेगा। इस पाठ्यक्रम की सहायता से आप पहचान की विभिन्न पहलुओं से भी अवगत होंगे। इसके अतिरिक्त, युवा वर्ग द्वारा समाना की जाने वाली समस्याएं एवं चुनौतियों के बारे में विशेष रूप से पर भारत के संदर्भ में, चर्चा की जाएगी।

### स्वास्थ्य और कल्याण के लिए मनोविज्ञान (BPCG 173) 6 credits

यह एक सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम है और तीसरे सेमेस्टर का भाग है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थी को स्वास्थ्य और बीमारी के स्वरूप से अवगत करायेगा। इस पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी को तनाव के पहचान, एवं प्रबंधन से अवगत कराया जायेगा और स्वास्थ्य एवं कल्याण को बढ़ाने के प्रविधियों के बारे में जानकारी की भी चर्चा की जायेगी।

## मनोविज्ञान एवं मीडिया (BPCG 174) 6 credits

यह एक ऐच्छिक पाठ्यक्रम है और चौथे सेमेस्टर का भाग है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थी को मानव संज्ञान एवं व्यवहार पर मीडिया के प्रभाव से अवगत कराना है। इस पाठ्यक्रम में मीडिया मनोविज्ञान में शोध, मानव एवं आभासी स्थान के बीच की अंतक्रिया की जानकारी दी जायेगी।

## जीवनयापन के लिये मनोविज्ञान (BPCG 175) 6 credits

यह एक सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम है और पांचवें सेमेस्टर का है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों को स्वयं संबंधित और रिष्तों की अवधारणा से परिचित कराएगा। इस पाठ्यक्रम की मदद से शिक्षार्थी मन और शरीर से संबंधित तथा शारीरिक रोग के मनोवैज्ञानिक कारकों को समझ सकता है। इसके द्वारा शिक्षार्थी व्यक्तिपरक कल्याण और भावनात्मक बुद्धि की अवधारणा और प्रासंगिकता से परिचित होंगे।

## लैंगिक मनोविज्ञान (BPCG 176) 6 credits

यह एक सामान्य ऐच्छिक पाठ्यक्रम है और पांचवें सेमेस्टर का भाग है। यह इस पाठ्यक्रम से शिक्षार्थियों को जेंडर की अवधारणा को समझने में सहायता मिलेगी। यह पाठ्यक्रम उन्हें जेंडर की भूमिकाओं और दृष्टिकोणों के मापन से भी परिचित कराएगा। यह कोर्स की सहायता से शिक्षार्थी मनोविज्ञान और जेंडर की भूमिकाओं और दृष्टिकोण के निर्माण से परिचित करायेगा।

# लोक प्रशासन

## आपदा प्रबंधन(BPAG 171) 6 credits

**प्रस्तावना** : आपदाओं के लिए मानव संवेदनशीलता एक सदियों पुरानी घटना है। आपदाएँ लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ करती हैं। वे मानवता और बुनियादी ढाँचे को अत्यधिक नुकसान पहुंचाती हैं। अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में आपदा प्रबंधन हाल के मूल का है। आपदा प्रबंधन शिक्षा, आपदा न्यूनीकरण के रास्ते में विभिन्न तकनीकों और बाधाओं की समझ प्रदान करना चाहता है। इग्नू भारत का पहला विश्वविद्यालय था जिसने 1999 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली (ODL) के माध्यम से आपदा प्रबंधन में प्रमाणपत्र कार्यक्रम शुरू किया था।

**उद्देश्यः** पाठ्यक्रम का उद्देश्य शिक्षार्थियों को परिचित करना हैः आपदाओं का अर्थ और वर्गीकरण; भारत में आपदा प्रबंधन का संस्थागत ढांचा; तैयारी, रोकथाम और न्यूनीकरण का महत्व; आपदा प्रतिक्रिया में प्रमुख कदम; क्षति मूल्यांकन के आयाम; पुनर्वास, पुनर्निर्माण और पुनरूत्थान की प्रासंगिकता; जलवायु परिवर्तन; आपदाओं और विकास के बीच सम्बन्ध; देशज ज्ञान की प्रासंगिकता; और आपदा प्रबंधन रणनीतियाँ।

इस परिचयात्मक और बहु–विषयक पाठ्यक्रम में कोई शर्त नहीं है और विज्ञान/ सामाजिक विज्ञान/ वाणिज्य पृष्ठभूमि के छात्र भी इसे ले सकते हैं।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 प्रस्तावना**

इकाई 1 आपदा का अर्थ और वर्गीकरण

इकाई 2 विपदा, ज़ोखिम और संवेदनशीलता

इकाई 3 प्राकृतिक और मानव-निर्मित आपदाएँ

इकाई 4 भारत का आपदा रेखाचित्र

**खण्ड 2 आपदा प्रबन्धन : अवधारणा और संस्थागत संरचना**

इकाई 5 आपदा प्रबन्धनः अधिनियम, नीति और संस्थागत संरचना

इकाई 6 तैयारी, रोकथाम और न्यूनीकरण के केन्द्र बिन्दु वाला आपदा प्रबन्धन चक्र

इकाई 7 आपदा राहत एवं अनुक्रिया

इकाई 8 क्षति का आकलन

इकाई 9 पुनर्वास, पुनर्निर्माण और पुनरूत्थान

**खण्ड 3 आपदा और विकास के बीच अन्तर्संबंध**

इकाई 10 जलवायु परिवर्तन

इकाई 11 आपदा और विकास

**खण्ड 4 आपदा प्रबन्धन : तुलनीय मुद्दे**

इकाई 12 देशज ज्ञान की प्रासंगिकता

इकाई 13 समुदाय आधारित आपदा प्रबन्धन

इकाई 14 आपदा प्रबन्धन रणनीतियाँ

इकाई 15 आपदा प्रबन्धन : केस अध्ययन

## शासन :मुद्दे और चुनौतियाँ (BPAG 172) 6 credits

**उद्देश्य–**'शासन : मुद्दे और चुनौतियां' पर यह पाठ्यक्रम अवधारणाओं, आयामों और शासन पर अभरते दृष्टिकोणों के साथ समकालीन समय मे प्रमुख वाद–विवादों को सामने लाते है। वैश्वीकरण, सरकार, राज्य, बाजार, नागरिक समाज और शासन की अवधारणाओं से शिक्षार्थियों को परिचित कराने का प्रयास किया जाता है।

यह भारत मे वैचारिक आयामों, शासन रूपरेखा और शासन में हितधारकों की भूमिका की जांच करता ष्है। विकास के बदलते आयामों और शासन के माध्यम से लोकतंत्र को मजबूत करने के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया जाता है। समकालीन समय में शासन का पहुंच, नौकरशाही की बदलती भूमिका, सूचना प्रौद्योगिकी, मीडिया के प्रभाव, पारदर्शिता और जवाबदेही, सतत मानव विकास, निगमित प्रशासन जैसे नए दृष्टिकोण के साथ विस्तार हो रहा है, जो इस पाठ्यक्रम का भाग है।

स्थानीय शासन, समावेशी और सहभागी हो रहा है, जो इस पाठ्यक्रम का भाग है। इन पहलुओं पर चर्चा की जाती है। भारत में विभिन्न सुशासन पहलों के माध्यम से शासन के सार का पता लगाया जाता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 सरकार और शासन :अवधारणाएं**

इकाई 1 वैश्वीकरण : राज्य, बाजार और नागरिक समाज की भूमिका

इकाई 2 शासन : अवधारणात्मक आयाम

इकाई 3 भारत में शासन की ढ़ांचा

इकाई 4 शासन मे हितधारक

**खण्ड 2 शासन और विकास**

इकाई 5 विकास के बदलते आयाम

इकाई 6 शासन द्वारा लोकतंत्र की मज़बूती

**खण्ड 3 शासन :उभरते दृष्टिकोण**

इकाई 7 शासन की चुनौतियाँ और नौकरशाही की बदलती भूमिका

इकाई 8 सूचना और संचार प्रौद्योगिकी और शासन

इकाई 9 मीडिया की भूमिका

इकाई 10 कार्पोरेट शासन

इकाई 11 सतत मानव विकास

इकाई 12 पारदर्शिता और जवाबदेही

**खण्ड 4 स्थानीय शासन**

इकाई 13 विकेंद्रीकरण और स्थानीय शासन

इकाई 14 समावेशी और सहभागी शासन

**खण्ड 5 भारत मे सुशासन की पहल**

इकाई 15 सार्वजनिक सेवा गारंटी अधिनियम, नागरिक का चार्टर, सूचना का अधिकार, सामूहिक–निगमित सामाजिक दायित्व

## ई-शासन (BPAG 173) 6 credits

यह पाठ्यक्रम सार्वजनिक संगठनों के ई–शासन से सम्बन्धित है। यह पाठ्यक्रम सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की अवधारणा, भूमिका, महत्व, मॉडल, घटक व अनुप्रयोगों पर प्रकाश डालता है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्र, शहरी क्षेत्र, ई–अधिगम, ई–कामर्स (वाणिज्य), ई–स्वास्थ्य आदि में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका का वर्णन करता है। आगे, यह ई–शासन के प्रभावी निष्पादन के लिए कई कदमों का विवरण भी करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 ई-शासनः एक अवधारणात्मक रूपरेखा**

इकाई 1 ई-शासनः एक अवधारणात्मक रूपरेखा

इकाई 2 सूचना व संचार प्रौद्योगिकी : घटक व अनुप्रयोग

इकाई 3 सूचना प्रणाली

**खण्ड 2 प्रशासन में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका**

इकाई 4 ई–शासनः परम्परागत प्रशासनिक संस्कृति का रूपान्तरण

इकाई 5 प्रशासनिक संगठनों में ई-शासन

**खण्ड 3 विभिन्न क्षेत्रों में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका**

इकाई 6 ग्रामीण क्षेत्र विकास

इकाई 7 शहरी क्षेत्र विकास

इकाई 8 ई-अधिगम

इकाई 9 ई-कामर्स (वाणिज्य)

इकाई 10 ई-स्वास्थ्य

**खण्ड 4 ई-शासन का प्रभावी निष्पादन**

इकाई 11 ई-शासन के प्रभावी निष्पादन में :
(क) चुनौतियाँ
(ख) कदम

## सत्त विकास(BPAG 174) 6 credits

**उद्देश्य :** यह पाठ्यक्रम विकास और पर्यावरण के संतुलन की चुनौतियों की जांच करने का प्रयास करता है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य सतत विकास के प्रमुख घटकों को उसके अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र को रेखांकित कर के व्याख्या करना है। यह मुख्य विषय को सामने लाता है कि यदि हम अपने भविष्य में आने वाली के लिए पीछे कुछ नही छोड़ते तो यह अवहेलना होगी, इससे विकास संभव नही है। यह पाठ्यक्रम सतत विकास के लक्ष्यों की जांच करता है और भू–मंडलीय सामान्य और जलवायु परिवर्तन की भूमिका पर चर्चा करता है। पाठय्क्रम की विशिष्ट विशेषता सतत विकास और विकासात्मक लक्ष्यों के साथ–साथ संसाधन निर्माण और क्षमता वृद्धि के वैकल्पिक तरीकों के बीच संबंधों पर ध्यान केंद्रित करना है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खण्ड 1 सतत् विकास की अवधारणा**

इकाई 1 सतत् विकास का अर्थ, स्वरूप और क्षेत्र

इकाई 2 सतत् विकास के प्रमुख घटक

इकाई 3 सतत् विकास के दृष्टिकोण

इकाई 4 सतत् विकास के लक्ष्य

**खण्ड 2 विकास, स्थिरता और जलवायु परिवर्तन**

इकाई 5 वैश्विक सामूहिक साधन और जलवायु परिवर्तन की अवधारणा

इकसई 6 सतत् विकास पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

इकाई 7 विकास, स्थिरता और जलवायु परिवर्तन के बीच पारस्परिक संबंध : विभेदित जिम्मेदारियों का केस अध्ययन

**खण्ड 3 स्वास्थ्य, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा**

इकाई 8 सतत् विकास और खाद्य सुरक्षा के बीच संबंध

इकाई 9 स्वास्थ्य, स्वच्छता और खाद्य सुरक्षा के प्रति हरी और परिवर्तित प्रौद्योगिकियों की भूमिका

इकाई 10 सतत विकास में शिक्षा की भूमिका

**खण्ड 4 सतत विकास : अग्रिम मार्ग**

इकाई 11 सतत विकास मे नीतिगत नवोन्मेश की भूमिका

इकाई 12 न्याय संगतता और न्याय की पारिस्थितिक सीमाओं की मान्यता

इकाई 13 संसाधन सृजन और क्षमता संवर्धन के वैकल्पिक तरीके

## भारतीय समाज : छवियाँ और वास्तविकताएँ (BSOG 171) 6 credits

यह पाठ्यक्रम भारतीय समाज के अंतः विषय का परिचय प्रदान करने का प्रयास करता है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 भारत के विचार**

इकाई 1 सभ्यता और संस्कृति

इकाई 2 उपनिवेश के रूप में भारत

इकाई 3 राष्ट्र, राज्य और समाज

**खंड 2 संस्थाएँ और प्रक्रियाएँ**

इकाई 4 भारतीय गांव

इकाई 5 भारतीय नगर

इकाई 6 भाषा और धर्म

इकाई 7 जाति और वर्ग

इकाई 8 जनजाति और नृजातियता

इकाई 9 परिवार, विवाह

इकाई 10 नातेदारी

**खंड 3 आलोचना**

इकाई 11 वर्ग, शक्ति और असमानता

इकाई 12 प्रतिरोध और विरोध

## विकास पर पुनः विचार (BSOG 173) 6 credits

यह पाठ्यक्रम समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विकास के विचारों की जांच करता हैं, यह छात्रों को विकास को समझने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों का परिचय देता हैं और अंतःविषयक दृष्टिकोण से विकास के साथ भारतीय अनुभव के प्रक्षेप पथ का पता लगाना है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 विकास को खोलना**

इकाई 1 विकास को समझना

इकाई 2 कारक और विकास के साधन

इकाई 3 विकसित, विकासशील और अविकसित

**खंड 2 सैद्वांतिक विकास**

इकाई 4 आधुनिकीकरण, नगरीयकरण और औद्ययोगिकीकरण

इकाई 5 विकास पर परिप्रेक्ष्य

इकाई 6 विश्व प्रणाली सिद्वांत

इकाई 7 मानव और सामाजिक परिप्रेक्ष्य

इकाई 8 पर्यावरण परिप्रेक्ष्य

इकाई 9 नारीवाद परिप्रेक्ष्य

**खंड 3 भारत मे विकासात्मक व्यवस्था**

इकाई 10 पूंजीवाद, समाजवाद और मिश्रित अर्थव्यवस्था

इकाई 11 स्वंतंत्रता के रूप में विकास

**खंड 4 विकासक्रम के मुद्दे**

इकाई 12 विकास, प्रवासन और विस्थापन

इकाई 13 आजीविका और सत्ता

इकाई 14 जमीनी स्तर पर पहल

## अर्थव्यवस्था व समाज (BSOG 176) 6 credits

इस पाठ्यक्रम में समाजशास्त्रीय दृष्टि से आर्थिक गतिविधियों तथा सामाजिक संबंधों की पारस्परिक निर्भरता तथा उसके विभिन्न तरीकों का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

### पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 आर्थिक घटनावृत्त के समाजशास्त्रीय पक्ष**

इकाई 1 अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति

इकाई 2 दृष्टिकोण औपचारिकतावाद तथा वस्तुवाद

इकाई 3 आर्थिक प्रक्रियाओं के समाजशास्त्रीय पहलु

**खंड 2 विनिमयों के प्रकार**

इकाई 4 पारस्परिक विनिमय तथा उपहार

इकाई 5 विनिमय एवं धन

**खंड 3 उत्पादन विधि**

इकाई 6 शिकार एवं एकत्रीकरण

इकाई 7 पशु पालन तथा बागबानी

इकाई 8 उत्पादन की घरेलू विधियाँ

इकाई 9 कृषक

इकाई 10 पूँजीवाद

इकाई 11 समाजवाद

**खंड 4 समकालीन मुद्दे**

इकाई 12 वैश्वीकरण

इकाई 13 विकास

## जेंडर अध्ययन

## जेंडर संवेदनशीलता : समाज और संस्कृति (BGDG 172) 6 credits

महिला एवंजेंडर अध्ययन और जेंडर एवं विकास अध्ययन के विषय/क्षेत्र, समकालीन दौर के सर्वाधिक बहु सवाले विषय हैं।इस विषय का संबन्ध ऐसे समाज और संस्कृति से है जो प्राचीन से लेकर समकालीन समय तक के लैंगिक संवादों का निर्धारण करते हैं। नारीवादी संस्कृति और समाज के मिलन बिन्दुओं की जेंडरपरक लैंसों से महत्वपूर्ण जॉच की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हैं। इसी राह पर आगे नारावादियों ने अपने आलोचनात्क दृष्टिकोण के जरिये यह दर्शाया है कि पितृतंत्र कैसे संस्कृति और समाज पर अपनी पकड़ बनाए रखता है और जेंडरपरक भूमिकाओं, समाजीकरण आदि के जरिए अपना अस्तित्व कायम रखता है। नारीवादियों का यह भी मानना है कि लिंग/जेंडर/लोक/निजी विभाजन पर टिके लैंगिक विचारों को आलोचनात्मक तरीके से देखना आवश्यक है। सभ्य समाज जैसे–जैसे तरक्की की राह पर आगे बढ़ता है वैसे–वैसे समाज और संस्कृति में भी बदलाव नज़र आने लगता है।इस प्रगति को सूचकों और लक्ष्यों के माध्यम से ऑका जा सकता है। राज्य, सामाजिक आर्थिक क्षेत्रों में प्रगति की मंशा से अनेकों नीतियों को सूत्रबद्व एवं लागू करता है। जबराज्य अपने संस्धानों की जटिलताओं से निपटता है तो कानून, मीडिया, श्रम आदि बहुत सी श्रेणियों भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के तौर पर, मौजूदा समय में हम महिलाओं, अन्य लैंगिक श्रेणियों और सभी उत्पीड़ित एवं सीमांती समूहों के प्रतिभारी हिंसा, भेदभाव और अधीनता के प्रतिदिन बढ़ते अनगिनत मामलें देखतें है।

इस पाठ्क्रम को पढ़ने के बाद आप

- हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति एवं दशा को बेहतर तरीके से समझाने के योग्य बन सकेंगें
- (कानून, मीडिया, कामकाज और स्वास्थ आदि) जैसी श्रेणियों और जेंडर पर टिके बहस के बुनियादी विषयों से जुड़े मूलभूत प्रश्न उठाने के योग्य बन सकेंगें, और

- समाज और संस्कृति में निहित इसकी भूमिका पर प्रश्न चिह्न लगाने के योग्य बन सकेंगें, और
- जेंडर मुद्दों पर समाज को संवेदनशील बनाने के तरीकों एवं साधनों पर ध्यान केंद्रित कर सकेंगें।

## पाठ्यक्रम संरचना

**खंड 1 जेंडर : संकल्पना**

इकाई 1 जेंडर एवं संबद्ध संकल्पनाओंकाज्ञान

इकाई 2 जेंडर एवं लैंगिकताएँ

इकाई 3 पौरूष

इकाई 4 प्रतिदिनजीवन मेंजेंडर

**खंड 2 जेंडर एवं परिवार**

इकाई 5 परिवार एवं विवाह

इकाई 6 मातृत्व

**खंड 3 जेंडर एवं कामकाज**

इकाई 7 कामकाजों का जेंडरीकरण

इकाई 8 कार्य एवं श्रम बाज़ार में जेंडर के मुद्दें

**खंड 4 स्वास्थ एवंजेंडर**

इकाई 9 जननस्वास्थ्य एवं अधिकार

इकाई 10 जेंडर एवं दिव्यांगता

**खंड 5 जेंडर, कानून एवं समाज**

इकाई 11 जेंडर आधारित हिंसा

इकाई 12 कार्यस्थल में यौन उत्पीड़न

**खंड 6 जेंडर, प्रस्तुति एवं मीडिया**

इकाई 13 भाषा एवंजेंडर

इकाई 14 जेंडर एवंमीडिया

इकाई 15 जेंडर, पठनपाठन एवंकल्पना